12, IV

श्रीः

❀ श्रीस्वाध्याय ❀

संस्थापक तथा प्रधानाध्यक्ष—

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य

श्री १०८ मान् अमृतवाग्भवजी महाराज

संरक्षक—

धर्ममार्त्तण्ड राजासाहब श्री१०५ मान् दुर्गासिंहजी बहादुर सी० आई० ई०, सोलन।

सहायक—

श्री १०५ मती स्व० माँजी महारानी साहिबा [सिरमौरीजी] बघाटराज्य।
आयुर्वेदमहोपाध्याय श्री पं० गोवर्द्धन शर्माजी छांगाणी, सीतावर्डी, नागपुर।
श्रीमान् स्व० पं० चतुर्भुजजी राजपुरोहित ताल्लुकेदार, भरतपुर।
श्री नरेन्द्रनाथजी 'मोहन' मैनेजिङ्ग डायरेक्टर डायर मीकन ब्रूरीज लिमिटेड, सोलन ब्रूरी
श्रीमान् बा० भागीरथलालजी मिलओनर, लहरागागा [पटियाला-राज्यसंघ]
श्रीमान् ला० अमरनाथजी रईस, न्यूअमरटाकीज, अजमेरीगेट, दिल्ली।
श्रीमान् लाला श्यामलालजी मित्तल, अनूपशहर [उत्तरप्रदेश]
श्रीमान् सेठ गयाप्रसादजी खण्डेलवाल, सिल्चर [आसाम]
श्रीमान् भाई चूहरमल्लजी मुञ्जाल, चूहरमल्ल एण्ड को०, कटरा बड़ियां, देहली।

सम्पादक और व्यवस्थापक—

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य

प्रकाशक—

श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (हिमाचलप्रदेश)

श्रीस्वाध्यायके नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य—

समस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा ऐहलौकिक और पारलौकिक मोक्ष (स्वातन्त्र्य) प्राप्त कराना 'श्रीस्वाध्याय' का मुख्य उद्देश्य है।

संचालकगणोंके नियम—

संरक्षक—

जो महानुभाव ३००) तीन सौ रुपयेसे अधिक प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे श्रीस्वाध्याय'के संरक्षक माने जायेंगे।

सहायक—

(२) जो सज्जन ५१) रु० से ३००) रु० तक प्रतिवर्ष सहायता देंगे, वे श्रीस्वाध्याय' के सहायक माने जाएंगे।

'श्रीस्वाध्याय' आश्विन शुक्ला १०, पौष शुक्ला १०, चैत्र शुक्ला १० और आषाढ़ शुक्ला १० को प्रकाशित होता है। इसका वार्षिक मूल्य ४) और एक प्रतिका १) है।

(३) जिन सज्जनोंके लेख श्रीस्वाध्याय-सदनकी ओरसे प्रार्थना-पूर्वक मंगवाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे, अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जावेंगे तो यथासमय प्रकाशित हो जावेंगे, अन्यथा नहीं।

(४) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकों की दो-दो प्रतियां और विनिमय (परिवर्तन) की पत्र पत्रिकाएं सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला)के पतेसे भेजने चाहिएं।

(५) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(६) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने उसे घटाने-बढ़ाने तथा लौटाने न लौटानेका सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर ही लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम

'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्कसे (आश्विनमासकी विजयादशमीसे)ही बनाये जाते हैं, चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि विजयादशमीका 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछे विशेषांक न लेना चाहें तो बीचमें किसी भी समयसे ग्राहक हो सकते हैं। ऐसी स्थितिमें उनसे वार्षिक मूल्य ४) रु० न लेकर वर्ष-समाप्ति (आषाढ) तकके शेष अङ्कोंका मूल्य ही लिया जायेगा। 'नववर्षाङ्क' के बिना तीन अङ्कों या नौ मासका मूल्य ३) रु० और एक अङ्क का मूल्य १) रु० मनी आर्डर द्वारा पेशगी आना चाहिए। वी० पी० मंगवाने पर उक्त मूल्यमें नौ आने वी० पी० रजिस्ट्री खर्चके अधिक बढ जायेंगे। वर्षारम्भसे स्थायी ग्राहक बनकर पूरी फाइल मंगवानेमें ही ग्राहकोंको विशेष लाभ है।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखना चाहिए। यदि ग्राहक संख्या स्मरण न हो और पुराने ग्राहक हों तो मनीआर्डरके कूपन पर 'पुराना' शब्द और नये ग्राहक हों तो 'नया' शब्द नामके साथ अवश्य लिख देना चाहिये। वार्षिकमूल्य वा एक अङ्कके मूल्यका नोट या टिकट लिफाफेमें कदापि न भेजें।

'श्रीस्वाध्याय' का नमूना विना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिए टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'श्रीस्वाध्याय' प्रकाशित होनेकी तिथि (शुक्ला दशमी) को प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दिया जाता है। यदि किसी ग्राहकके पास कोई अङ्क न पहुंचे तो उसके प्रकाशित होनेकी तिथिसे १५ दिनके अन्दर हमें सूचना देनी चाहिए, बादकी शिकायत पर कोई ध्यान नहीं दिया जाएगा।

व्यवस्थापक—

श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः ॐ श्रीः ॐ स्वाध्यायान्न प्रमदितव्यम्

श्रीस्वाध्याय

(ग्रीष्माङ्क)

स्वराष्ट्रशिक्षां गृह्णीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम् ।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति ॥ —श्रीराष्ट्रालोक

वर्ष १२	सोलन, आषाढ शु० १० मंगलवार सं० २०१० वि०	संख्या ४

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या ।
प्रेम्णा लोके स्थापयँस्तत्त्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै ॥
---अ० वा० आचार्य

निवेदनम्

[श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज]

पुराणानां पातञ्जलबुधवराणां परिचिते !
नराणां धीराणां गलितकलुषाणां हृदि तते ! ।
जनाधीशादेशान्नरपशुगृहीतेऽतिकरुणा-
महिंसे ! कामेतां श्रयसि विवशा सम्प्रति दशाम् ॥१॥

कवीनां सम्मान्या मनुजमनुसम्भावितपदा
प्रसादादाप्या या सकलसुरवाचामधिपतेः ।
अहो सेऽयं नीतिः खरदनुजभावं धृतवतां
कराऽऽकृष्टा कष्टां कथयति नृणां कामपि कथाम् ॥२॥

स्व० डा० श्रीमुखर्जी

मैं गङ्गाके तट पर एकान्त वासमें था। जहां लगभग एक माससे कोई समाचार पत्र भी नहीं देखा था। अकस्मात् ही निर्जला एकादशीके दूसरे दिन एक सज्जन मिलने आये, उनके पास एक समाचार पत्र था। उसमें डा० मुखर्जीका चित्र छपा था। रातका समय होनेके कारण समाचारपत्र पढ़नेको मनने न चाहा। किन्तु, उक्त सज्जनने मुखर्जीकी मृत्युका समाचार सुनाया। समाचार सुनकर कुछ क्षण कुछ भी हम समझ न सके कि यह क्या हो गया। किन्तु, उनकी मृत्यु अस्वाभाविक सी प्रतीत हुई। जब उनको जम्मूमें काश्मीर शासनने बन्दी बना लिया था उस समय किसी सज्जनके सम्मुख मैंने आशङ्का प्रकट की थी, वह आशङ्का इतनी सत्य होगी यह भी उस समय निश्चित न हो सका था। अस्तु! भगवान्की इच्छाके सम्मुख हम लोग क्या कर सकते हैं। दुर्दशाग्रस्त भारतके ऐसे आड़े समयमें डा० मुखर्जीकी मृत्यु एक सबसे महान् असह्य आघात है। उनकी मृत्युके दुःखको शब्दोंमें लाना बालूसे तैल निकालना है। उनकी मृत्यु शोचनीय नहीं। शोचनीय तो वे हैं, जो कायर हैं, डरपोक हैं। उन्होंने भारतमाताकी अक्षुण्ण एकताकी बलिवेदी पर सर्वश्रेष्ठ उपहार दिया है, ऐसा उपहार कि जो भावी इतिहासमें अमर माना जायगा और सुवर्णाक्षरोंमें सदाके लिये अंकित होगा।

उनके अब तकके लगभग ५२ वर्षके जीवनका वर्णन बहुत लोगोंने पढ़ भी लिया होगा। इतना उज्ज्वल जीवन करोड़ों भारतीयोंमें किसीका ही हो सकता है। जो लोग उनकी मृत्युसे वस्तुतः दुखी हैं उन्हें चाहिए कि उन्हींके समान उनके उद्देश्यको पूरा करनेके लिए प्राणपणसे सचेष्ट हो जायें। जनतामें उनकी रहस्यभरी मृत्युसे घोर असन्तोष छाया हुआ है। यह सर्वथा उचित ही है। भारतीय शासकवर्ग भी अपने आपको लेखोंमें दुखी प्रकट कर रहा है, किन्तु यह कहां तक ठीक है इसको वे अपने हृदय पर हाथ रखकर सोचें। हमारा तो मत है कि शासक लोग सचमुच दुखी हैं यह तभी सच माना जायगा कि जब जनताकी न्याय-युक्त मांगोंको शीघ्रसे शीघ्र कार्य रूपसें परिणित करेंगे। अन्यथा वे केवल ढोंगी हैं यही मानना होगा। दुर्योधनके सभी कार्योंमें धृतराष्ट्रकी मूक सम्मति अवश्य हुआ करती थी, यह महाभारत पढ़ने वाले सभी जानते हैं। अभिमन्युकी वीर-गतिप्रदायिनी मृत्युमें सात महारथी कारण हुए थे। मुखर्जीकी मृत्युने भी एक प्रकारसे उसीको दुहराया है। अभिमन्युके समान ही मुखर्जी भी शत्रुओंके चक्रव्यूहमें घुस जाना तो अवश्य जानते थे, किन्तु वहांसे बाहर निकल आना उन्हें अवश्य नहीं आता था, ऐसा लगता है। हम अधिक क्या लिख सकते हैं। हमारे हृदयमें जो दुःख है उसे दूर करना तो भगवान्के हाथ है। आज श्रीकृष्ण और अर्जुन कहीं दीख नहीं रहे जो इस मृत्युमें कारण महारथियोंको पूरा दण्ड दे सकें। वर्तमान शासक यदि निष्पक्ष मृत्युकी जांच करनेमें असमर्थ हैं तो वे अपनी कुर्सियां छोड़ दें, चाहे वे राष्ट्रपति हों, अथवा महामन्त्री। अन्यथा वे दुखी नहीं और वे वस्तुतः शासक होनेके योग्य भी नहीं। जनतंत्री शासनमें यह महान् कलङ्क है। मुखर्जीकी मृत्युका रहस्य केवल पांच व्यक्ति ही जान सकते हैं, वे जानकर भी न जाने तो बात अलग है। नेहरू, काटजू, आजाद, शेख और डा० मुहम्मदअली।

मेरा व्यक्तिगत परिचय डा० मुखर्जीसे कभी नहीं हुआ। हां, उनके पिता सर श्रीआशुतोष मुखर्जीके दर्शन किये हैं और उनका भाषण भी सुना है, किन्तु उस समय जब कि मैं बहुत छोटी वयसका एक विद्यार्थी था। उनके व्याख्यानसे मैं प्रभावित था और अब भी हूँ। अन्तमें परमात्मासे यही प्रार्थना है कि भारतीयोंके जिस उद्देश्यकी पूर्तिके लिये डा० मुखर्जीका यह बलिदान हुआ है वह उद्देश्य पूरा हो और उनकी आत्माको शान्ति मिले।

—अ० वा० आचार्य



सम्पादकीय विचार—

सरगमाथा पर आरोहण

२९ मई को ११॥ बजे विश्व-इतिहासमें एक अपूर्व घटना हुई। सरगमाथा पर मानवने विजय पा ली। अजेय माउण्ट-एवरेस्ट विजय कर लिया गया। कवि-कुल-गुरु कालिदासने जिस हिमालयका गौरवगान करते हुए कहा था—

> अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा
> हिमालयो नाम नगाधिराजः।
> पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य
> स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः॥
> यं सर्वशैलाः परिकल्प्य वत्सं
> मेरौ स्थिते दोग्धरि दोहदक्षे।
> भास्वन्ति रत्नानि महौषधीश्च
> पृथूपदिष्टां दुदुहुर्धरित्रीम्॥

'पृथ्वीके मानदण्ड' हिमालयको विजय करनेका श्रेय प्राप्त हुआ है एक भारतीय शेरपा तेनसिंह नोरके और न्यूजीलैण्डके 'हिलेरी' को। मानवकी दुर्दान्त प्रकृति पर यह विजय एक महत्त्वपूर्ण घटना है। ब्रिटिश पर्वतारोही दल में एक भारतीय था और उसके कारण उसको सफलता मिली, यह स्वाधीन भारतके लिये एक महान् गौरवकी बात है। संकल्प, दृढ़ निश्चय, धैर्य और अध्यवसाय मिल कर क्या चमत्कार कर सकते हैं इसका उदाहरण एवरेस्ट (गौरीशिखर)की विजय है। जो लोग एवरेस्ट को गौरीशंकर कहते हैं वह ठीक नहीं। एवरेस्टकी सर्वोच्च चोटीसे गौरीशंकरकी चोटी लगभग ६ हजार फुट नीचे है। अतः एवरेस्टका नाम 'गौरी-शिखर' उपयुक्त है। कालिदासने हिमालयकी सर्वोच्च चोटीको गौरीशिखर कहा है—

> अथाऽनुरूपाऽभिनिवेशतोषिणा
> कृताभ्यनुज्ञा गुरुणा गरीयसा।
> प्रजासु पश्चात्प्रथितं तदाख्यया
> जगाम 'गौरी शिखरं' शिखण्डिमत्॥

एवरेस्ट-विजय प्रकृति पर मानवकी विजय है, या प्रकृति पर विज्ञानकी विजय है, इसका निर्णय करना सरल नहीं। इस प्रसंगमें यह न भूलना चाहिए कि विज्ञान भी मानव-बुद्धिके उत्कर्षका फल है। अतः यह माननेमें कोई हानि नहीं कि प्रकृति पर मानवकी यह अपूर्व विजय है।

क्या कोई भारतीय पर्वतारोही दल एवरेस्ट-विजय करने का साहस कर सकता है? इसका उत्तर शेरपा तेनसिंहने दिया है—

"हम पर्वतारोहणमें पटु हैं, किन्तु इसके लिए आवश्यक सामग्री हमारे पास नहीं है। वह अत्यधिक व्ययसाध्य है। संघटन, चातुर्य्य और सामग्रीकी सहायतासे एवरेस्ट पर चढ़ना हमारे लिये शक्य है"।

इसका अर्थ सहज बोधगम्य है। ब्रिटिश पर्वतारोही दलका यह अभियान ब्रिटिश औद्योगिक एवं आर्थिक प्रगति के आधार पर और उसकी सामर्थ्यसे विजयी हुआ। आर्थिक सामर्थ्यके बिना भारतीय जनोंकी योग्यता व्यर्थ ठहरती है। व्यक्ति व समाजकी प्रतिदिनकी आवश्यकता पूर्ण करनेमें असमर्थ भारतके लिये एवरेस्ट-आरोहण विपुल व्ययसाध्य है और उस उपक्रमणसे लाभ लेनेकी उसकी शक्ति भी मर्यादित है। देशकी औद्योगिक प्रगति और आर्थिक समृद्धिके साथ वैयक्तिक साहस और कर्तव्यका जोड़ मिलना चाहिए और इसके लिये अनेक पीढ़ियों तक सतत उद्योग करनेकी आवश्यकता है। क्या इस सत्यको हम अनुभव करेंगे?

भाषा-विकास परिषद्

राष्ट्रीय चरित्रके निर्माणमें भाषाका महत्वपूर्ण स्थान है। भाषाका अर्थ केवल शब्द नहीं है। सर अर्नेस बार्कर का कहना है, कि भाषाका प्रत्येक शब्द भावनाको आन्दोलित करने वाला और विचारोंको गति देने वाला है। भाषा और विचार तथा भावनाके जो निकट और सूक्ष्म सम्बन्ध है, उसको ध्यानमें यदि रखा जाय तो किसी भी

राष्ट्रके विकासमें स्वभाषाका महत्व स्पष्ट हो जाता है। इस दृष्टिसे नवीन भारतके विकास पर विचार करते हुए हमें इस देशके भाषा-विकास पर विचार करना चाहिये। इस विचारसे पूना विश्व-विद्यालय द्वारा आमंत्रित भारतीय भाषा-विकास परिषद्का विशेष महत्व है।

राष्ट्रीय आन्दोलन और भाषाका परस्पर अन्योन्य सम्बन्ध है। राष्ट्रीय आन्दोलनके सीमित होनेसे भाषाका क्षेत्र भी मर्यादित होता है। 'भाषामें शास्त्रीय ग्रंथ सम्पत्ति हो' इस सदिच्छासे यदि कोई प्राणि-शास्त्र पर एक महत्व पूर्ण ग्रन्थ लिखे तो वह ग्रन्थ बहुमूल्य होता हुआ भी व्यर्थ है। क्योंकि हमारी राष्ट्रीय हलचल और कार्यक्षेत्रकी मर्यादा उस सीमा तक नहीं पहुँची जिसमें प्राणि-शास्त्र पर ग्रन्थ-प्रणयन करना आवश्यक हो। इससे प्रकट है कि भाषा विकास और राष्ट्र विकासका परस्पर अन्योन्य सम्बन्ध है।

प्रो० कावेकी अध्यक्षतामें हुई भाषा-विकास परिषद् ने इस देशको अंग्रेजीके प्रभावसे मुक्त करनेके उपायों पर विचार किया। पूनामें शिक्षा-शास्त्री, शब्द-शास्त्री और विभिन्न भाषाओंके पण्डित एकत्र हुए थे। पूना महाराष्ट्रीय अस्मिताके लिये प्रसिद्ध है। यह संकीर्ण मनोवृत्ति सारी परिषद् पर व्याप्त रही। वहां भारतीय मनोवृत्तिका सर्वथा अभाव था। वहां एकत्र विद्वानोंके मनमें एक क्षण के लिये भी इस भावनाका उदय नहीं हुआ कि एक समय जैसे इस देशमें संस्कृतका स्थान था उसी प्रकार हिन्दी को कैसे बनाया जाय। इसके विपरीत वहां संशय और भीतिका वातावरण था। प्रान्तीय भाषाओंका मन हिन्दी आक्रमणके भयसे पूर्ण था। इस भयको दूर करनेमें परिषद्का बहुत सा समय बीता।

इस परिषद्का मुख्य उद्देश्य वस्तुतः हिन्दी व्यतिरिक्त प्रांतीय भाषाओंके विकासकी दिशाका विचार करना था। प्रांतीय भाषाओंका मोह इतना अधिक है कि वे इस बात के लिये उद्यत नहीं कि उच्च शिक्षाका माध्यम हिन्दीको बनाया जाय। परिषद्को यह भी मान्य नहीं हुआ कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा कहा जाय। परिषद्ने हिन्दीको संघ-राज्य भाषा कहा है। परिषद् हिन्दीको वही स्थान देनेको उद्यत नही हुई जो आज अंग्रेजीको हमारी शिक्षा-दीक्षामें प्राप्त है। क्योंकि उनके सामने एक भारतीय भाषाके विकासका प्रश्न नहीं था और न उनके मनमें भारतीय राष्ट्रके विकासकी कोई स्पष्ट कल्पना थी। हमारे विद्वान् शिक्षा-शास्त्री और भाषा-पण्डित प्रांतीयताकी सीमाको पार करनेमें समर्थ नहीं हुए यह खेद और परितापकी बात है, किन्तु यह दुर्भाग्य-पूर्ण सत्य है कि भारतीय दृष्टिकोणका विकास अभी तक हमारे देशके विद्वानोंमें भी नहीं हुआ।

परिषदके 'शास्त्रीय परिभाषा कोश रचना विभाग' ने सिफारिशकी है कि-(१) सब विषयों और शास्त्रोंके तांत्रिक संज्ञा यथासम्भव संस्कृतके आधार पर प्रस्तुत की जाय। (२)—सब अन्तर्राष्ट्रीय मान्यताके संकेत व सारिणी आजके समान भविष्यमें भी व्यवहृत की जाय और (३)—शास्त्रीय और तांत्रिक संज्ञा सम्पूर्ण संघराज्यमें यथासम्भव एक समान हो।

'संघ राज्यकी सरकारी भाषाके विकासकी' इस विभागने स्वपार्श्वी (सिफारिश) की है—१ संघराज्यकी सरकारी भाषाके प्रसारमें एक प्रत्यक्ष बाधा यह भय हैकि यह भाषा प्रादेशिक भाषाओंके क्षेत्रोंपर आक्रमण करेगी। अतः यह भय दूर करना चाहिए। इसका सर्वोत्तम उपाय यह है कि समस्त प्रादेशिक कार्य प्रदेशकी भाषामें किया जाय और सारी शिक्षा उस भाषामें दे दी जाय।

'भारतमें प्रादेशिक भाषाका स्थान' इस विभागकी ओरसे निम्न स्वपार्श्वियां (सिफारिशें) की गई हैं:-

१-प्रादेशिक भाषा या मातृभाषा प्रारम्भिक पाठशालाओं में बच्चोंकी शिक्षाकी भाषा होनी चाहिए।

२-माध्यमिक शिक्षा-कालमें हिन्दी सिखानेकी व्यवस्था होनी चाहिए।

३-माध्यमिक स्कूलोंमें इतर भारतीय भाषाओंको भी सिखानेका प्रबन्ध होना चाहिए।

४—सब विश्व-विद्यालयोंमें भारतीय वाङ्मय और भाषा तथा उच्च शिक्षण एवं अन्वेषणकी व्यवस्था होनी चाहिए।

५—एक भारतीय भाषासे दूसरी भाषामें वाङ्-मयीय और शास्त्रीय ग्रन्थोंके भाषान्तर करनेकी सरकारी और विश्वविद्यालयीय समितियां स्थापित होनी चाहिएं।

६—पहली सीढ़ीके रूपमें भारतीय भाषाका व्याकरण संवाद-ग्रन्थ और द्वैभाषिक कोशोंकी रचना करनी चाहिए।

७—प्रत्येक प्रादेशिक भाषामें ऐसा एक वाङ्मय विषयक मासिकपत्र हो जिसमें उस भाषाके बोलने वालोंसे इतर भारतीय वाङ्मयका परिचय दिया जाय।

संशयपूर्ण वातारण

विश्व-शान्ति आज भी आशा-निराशाके झोकोंमें झूल रही है। संशय और अविश्वास आज भी उसको घेरे हुए हैं। कोरिया-युद्धकी ज्वाला आज भी सुलग रही है। बड़े चार राष्ट्रोंके नेताओंका सम्मिलन और विचार विनिमय बरमूडा कांफ्रेंससे अटका हुआ है। बरमूडा कांफ्रेंस ब्रिटिश प्रधानमन्त्री सर विंस्टन चर्चिलके रुग्ण हो जानेसे स्थगित हो गई हैं। कोरिया शांति परिषद्के बुलानेका अवसर ही नहीं आया है। कोरियन प्रेजीडेंट सिगमैनरीने लगभग २५००० कम्युनिस्ट विरोधी बन्दियोंको मुक्त कर के सन्धि शांतिकी आशाओंको धूलमें मिलानेमें कुछ उठा नहीं रखा है। दक्षिण कोरिया इस सन्धि और शांतिमें अपने लिए भय देखता है और देखता है कोरियाका सदा के लिए विभाजन। फलतः वह ऐक्य कोरियाकी आशासे युद्ध चालू रखना चाहता है। अमरीकी सुरक्षाकी गारण्टी भी अभी तक सन्तोष नहीं दे सकी। संयुक्त राष्ट्र और चीन उत्तरीय कोरियाके बीच हुई शांति सन्धिका सिगमैनरी पालन करेगा इसकी गारण्टी संयुक्तराष्ट्र देनेमें असमर्थ हैं। दक्षिण कोरिया पूछ रहा है, क्या रूस और संयुक्त राष्ट्र सेनाकी सहायता द्वारा उससे सन्धिका पालन करवायेंगे? राजनीतिज्ञ अभी तक इसका कोई संतोषजनक समाधान नहीं ढूंढ सके हैं।

हिन्दचीनमें फ्रांसके विरोधमें एक नई लहर आई है। कम्बोडिया पूर्ण स्वतन्त्रता मांग रहा है। वीतनाम भी पेरिस की कठपुतली बन कर रहनेको तैयार नहीं, दूसरी ओर फ्रेंच सरकार युद्ध व्यय सहनेमें अपनेको असमर्थ पाती है। धन-जन दोनोंका क्षय सहना उसकी शक्तिसे बाहर हो गया है। वीतमिन्ह सेनापर अमरीकी विमान गोलाबारी कर रहे हैं और हिन्दचीन युद्धको चलानेका दो-तिहाई व्यय अमरीका दे रहा है। हिन्द-चीनमें फ्रेंच शासनके विरुद्ध प्रबल लहर फैल रही है। किन्तु फ्रांस अब भी अपने औपनिवेशिक शासनका अन्त करनेको सन्नद्ध नहीं।

मिश्र और ब्रिटेनके बीच स्वेज-नहरका प्रश्न आज भी विचारका विषय बना हुआ है। एलिजाबेथ २यके राज्याभिषेकके बाद राष्ट्र-कुलके प्रधान मंत्रियोंके सम्मेलनने भी इस समस्या पर विचार किया था। ब्रिटेन यदि यह आशा करता हो कि शाह फारूक मिश्र फिर वापस आएगा। और वह ब्रिटेनके साथ उसके अनुकूल समझौता करेगा तो उसकी इस आशा पर भी जनरल नजीब और उनके सहयोगियोंने पानी फेर दिया है। मिश्र अब एक रिपब्लिकहो गया है और उसका प्रथम राष्ट्रपति जनरल नजीब है। मिश्रके नये सैनिक शासकोंने ब्रिटेनको असन्दिग्ध शब्दोंमें जता दिया है कि जब तक ब्रिटेन स्वेज नहरके प्रदेशसे अपनी सेना हटाना नहीं स्वीकार करेगा उसके साथ कोई संधि-चर्चा नहीं हो सकती। पर ब्रिटेन १९५६ से पहले इस प्रदेशसे अपनी सेनाको हटानेके लिए उद्यत नहीं। फलतः गति-अवरोध पहलेके समान बना हुआ है।

अफ्रीकामें श्वेताङ्गों और अश्वेताङ्गोंके बीच संघर्ष बराबर चला जा रहा है। संघर्षकी तीव्रता न्यून नहीं हुई। ट्यूनिसमें फ्रांसका समर्थक ७२ वर्ष बूढ़ा प्रिंस अजेडाइन मार दिया गया। मध्य अफ्रीकामें अफ्रीकनोंके विरोधकी परवाह न करके उत्तरीय रोडेशिया, दक्षिणी रोडेशिया और न्यासलैण्डका संघ राज्य बनाया जा रहा है और श्वेताङ्गों के राज्यको दृढ़ किया जा रहा है। केनियाके यूरोपियनोंके नेता मि० माइकेल ब्लुंडेल केनिया युगाण्डा और टंगानिका का पूर्वी अफ्रीका संघ राज्य बनाकर उसको ब्रिटिश मध्य अफ्रीकासे जोड़नेका स्वप्न देख रहे हैं। दूसरी ओर 'माऊ-माऊ' आन्दोलनको ब्रिटिश किरचें अभी तक दबा नहीं सकी हैं, और अफ्रीकी यूरोपियनोंका राज्य समाप्त करनेके

लिए और अधिक दृढ़तासे काम करने लगे हैं। किंतु इन कामोंका डा० मलान पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है और वे दक्षिण अफ्रीकामें श्वेताङ्गोंका पूर्ण वर्चस्व स्थापित करनेके प्रयत्नमें लगे हुए हैं। इस प्रकार सम्पूर्ण अफ्रीका आज एक विराट ज्वालामुखी बन रहा है और यदि इसका विस्फोट हुआ तो मानव-इतिहासके अध्यायमें सर्वथा एक नया अध्याय आरम्भ होगा।

संस्कृत सम्मेलन

संस्कृतका स्वाधीन भारतमें क्या स्थान है? कुछ लोग आज भी इसको राजभाषा बनानेका स्वप्न देख रहे हैं। दूसरी ओर शिक्षा-जगत्के कर्णधार संस्कृतका नाम भी नहीं लेना चाहते। हमारे शिक्षा-क्रममें संस्कृतका क्या स्थान हो, यह अभी निश्चित होना शेष है। संविधानमें स्वीकृत भाषाओंमें संस्कृतका भी नाम है। यह किसी वर्गकी बोल-चालकी भाषा नहीं है, न यह किसीके व्यवहारकी भाषा है। निःसंदेह पारिभाषिक एवं तांत्रिक शब्दोंके गढ़नेके लिए संस्कृतका आश्रय लेनेका निश्चय किया गया है। क्योंकि इसका धातुपाठ विस्तृत तथा व्यापक है। परन्तु संस्कृतका इतना ही महत्व नहीं है। भारतीय भाषाओंको एक दूसरेके निकट लानेकी सामर्थ्य अकेले इसीमें है। इसी प्रकार इस देशमें भारतीय संस्कृति और भारतीय सभ्यताका विकास यदि सम्भव है तो संस्कृत भाषाके ही सहारे। इसलिये यह आवश्यक है कि संस्कृतकी शिक्षाका प्रसार इस देशमें अधिक से अधिक किया जाय। संस्कृतका प्रचार करनेका सहज उपाय यह है कि माध्यमिक शिक्षामें संस्कृत भाषाका अध्ययन अनिवार्य रूपसे कराया जाय। निरन्तर पांच-छः वर्ष तक संस्कृत पढ़नेके बाद यह आशा की जा सकती है कि भारतीय संस्कृति एवं भारतीय ज्ञान धाराके उद्गमसे वह परिचित हो जायेगा और इससे समस्त भारतके नागरिकोंमें भावों और विचारोंकी एकताके कारण देशमें मानसिक बौद्धिक और आर्थिक एकता स्थापित होगी एवं यह एकता इतनी दृढ़ होगी जिसको कि प्रादेशिक भाषाओंका मोह भी नष्ट न कर सकेगा। इस दृष्टिसे संस्कृत प्रेमियोंका भारतकी राजधानी में एकत्र होना और इसके प्रचारके उपायों पर विचार करना तथा इसको सप्राण जीवित भाषा बनानेका प्रयत्न करना सर्वथा स्तुत्य उद्योग है और प्रत्येक भारतीय संस्कृति का प्रेमी इसका हार्दिक स्वागत करेगा।

जांच आवश्यक है

उत्कृष्ट वक्ता निर्भीक आलोचक और अथक कार्यकर्ता डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जीके श्रीनगर-शुश्रूषागृहमें सहसा शरीरान्त होनेके दुःखद वज्राघातसे सारा देश तिलमिला उठा है। भारतीय संसद आपके अभावमें निर्धन हो गई है। संसदमें आप अपनी विद्वत्ता, वाग्मिता, युक्तिवाद और अपनी प्रभविष्णुताके कारण 'वक्तादशसहस्रेषु' थे। और अधिक कुछ न लिखकर हम यहां पर इतना ही कहेंगे कि डा० मुखर्जीका देहान्त जिन परिस्थितियोंमें हुआ है उसने देशके मनमें संशय और क्षोभ उत्पन्न कर दिया है। हृदयरोग उनको इससे पहले भी हो चुका था, इस अवस्थामें उनको श्रीनगरसे आठ मील दूर, जहां चिकित्सा की सुविधा भी प्राप्त नहीं थी; रखना ठीक नहीं कहा जा सकता। छः जून को उन्होंने अपनी भाभीको जो पत्र लिखा था उससे प्रकट है कि उनको ज्वर हो जाता था और वे अस्वस्थ थे। उनको उस समय कलकत्ता भेज देना क्या उचित नहीं था? रुग्णावस्थामें भी उनको नजरबन्द रखना और जनताको इसकी सूचना तक न देना इस बातका सूचक है कि काश्मीर सरकार और भारत सरकारने उनके स्वास्थ्यकी घोर उपेक्षा की। श्रीजयप्रकाशनारायणने भी ठीक कहा है कि 'यदि डा० मुखर्जीके स्वास्थ्य पर प्रारम्भसे ध्यान दिया जाता तो देशके इस महान् नेताके प्राण बचाये जा सकते थे।' डा० खरे एक माने हुए चिकित्सक हैं। उनका मत है कि जब तापमान गिर रहा था तब 'एण्टीशाक' उपचार किया जाना चाहिये था। हृदयरोगमें ८ मील दूर ले जाना भी इस रोगके रोगियोंका कहना है कि ठीक नहीं हुआ। उनके चिकित्सक डा० विधानचंद्र रायको भी इनके रोगकी सूचना नहीं दी गई और न उनको डा० मुकर्जीकी परीक्षा करनेका अवसर दिया गया। ये बातें और जनताके मनमें उत्पन्न संशय इस बातकी अपेक्षा करते हैं कि इसकी निष्पक्ष जांच की जाय और दोषी लोगोंको कठोर दण्ड दिया जाय।

★

भगवान्‌की ओर—

प्रमाद

[लेखक—श्री १०८ मान् आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज]

[द्वैत माया है, अद्वैत मायावी। द्वैत छाया है, अद्वैत छायावान्। द्वैत मेधा है, अद्वैत मेधावी। द्वैत प्रकाश है, अद्वैत प्रकाशवान्। साधारणतया संक्षेपमें कह सकते हैं—यच्च यावत् कल्पित द्वैत है और अद्वैत अकल्पित। कल्पितकी ओर प्रवृत्ति दुःखका कारण है और उधरसे निवृत्ति सुखका कारण। अकल्पित सनातन है, कल्पित क्षणिक। 'भगवान्‌की ओर चलना' का वास्तविक अर्थ है, कल्पितसे मुख मोड़ना। क्षणिक सभी दुःख है, चाहे फिर वह ब्रह्मलोक ही क्यों न हो। सापेक्ष सुख वस्तुतः सुख नहीं। वस्तुतः सुख सनातन महानन्द है। निरपेक्षताकी पराकाष्ठा हुए बिना महानन्दका रस अनुभूत नहीं होता। कल्पितकी ओर उन्मुख होना बहिर्मुखता है और उधरसे निवृत्ति अन्तर्मुखता। जितनी अधिक अन्तर्मुखता होगी, उतनी अधिक आत्मानन्दकी प्राप्ति होगी। भगवान्‌की प्राप्ति उसीका दूसरा नाम है। और इसीको तत्वदर्शी भगवदनुग्रह कहते हैं। शेष सभी निग्रह है। जहां निग्रहकी अनेक घटनाएं हैं, वहां अनुग्रहकी भी बहुत घटनाएं हैं। अनुग्रह-प्रधान सच्ची घटनाओंके आधार पर हमने कुछ कथानिकाएं (कहानियां) लेख बद्ध की हुई हैं, उनको 'श्रीस्वाध्याय' के प्रेमी पाठकोंके आग्रहसे प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है प्रेमी पाठकोंको इन कहानियांके पढ़नेसे भगवदनुग्रह प्राप्त करनेमें सहायता अवश्य मिलेगी।

—अ० वा० आचार्य]

[वर्ष १२ अङ्क २ से आगे]

जीवनके बीस वर्ष

युवक—" पण्डितजी ! मैं जब दश वर्षका हो रहा था उन दिनोंकी बात है। हमारे गांवमें एक महात्मा आये थे वे बड़े अच्छे स्वभावके थे। हमारे गांवमें प्रायः महात्मा आया ही करते थे। मेरे पिताजी और माताजी महात्माओंकी सेवा भी बहुत करते रहते थे। मैंने घर पर ही पढ़ लिखकर आठवीं कक्षाकी परीक्षा दी थी ! उसके अनन्तरकी पढ़ाई प्रयागमें होने वाली थी। महात्माजी तीन रात्रि हमारे गांव में ठहरे थे। उनके लिए भोजन परोसकर घरसे मैं ही दोनों समय ले जाया करता था। उन्होंने प्रसंगसे भगवान्‌की कई विचित्र कथाएं सुनायीं। बात बातमें ही मैंने उनका पूरा पता पूछ लिया था। मैंने कहा उनसे —"क्या मुझे भगवान्‌के दर्शन हो सकते हैं?" वे बोले —"हां हां क्यों नहीं हो सकते" मैंने कहा—"उसके लिए क्या करना चाहिये?" वे —"तुम ब्राह्मण होते हो?" मैं—"जी हां" वे—"कौन ब्राह्मण होते हो?" मैं—"हम कनवजियां हैं बीस बिसवे गोपालपुरके तिवाड़ी होते हैं।" वे थोड़े हंस दिये और बोले—"तुम्हारा नाम क्या है?" मैं—"रामकुमार है। पर मेरे मां बाप प्यारसे 'मुन्नाराजा' कहा करते हैं और लखनऊकी मेरी नानीने मेरा नाम श्यामसुन्दर रख दिया है।" वे—"हूं। तब तो तुम बड़े अच्छे हो, हां तुम्हारा जनेऊ हो गया है?" मैं—"जी हां पिछले वर्ष माघ की बसन्तपंचमी को ही हो गया था।" वे—"तब तो तुम गायत्री

मन लगाकर किया करो।" मैं—"मेरे जो बड़े काका हैं वे भी ऐसा ही कहते हैं। मुझे पढ़ाते भी वही हैं। आप जानते हैं न, वे जो उस पक्की बड़ी-सी कुटियामें रहते हैं। वे पहले इलाहाबादमें जज थे। उन्होंने पन्द्रह सहस्र रुपये मेरी विलायतकी पढ़ाईके लिए बैंकमें मेरे नाम करा रखे हैं। पचास सहस्रका धर्मादाय बनाया है। वे बड़े अच्छे हैं। हमारी दो सौ बीघे धरती है। लगान कुछ नहीं देना पड़ता।" वे—"तुम कितने भाई बहन हो।" मैं—"मेरेसे तीन छोटे भाई और सबसे छोटी एक बहन है।" वे—"तुमसे बड़े कितने हैं।" मैं—"छह हुए थे पर सब मेरे जन्म से पहले ही मर गये थे।" वे—"मरना तो सबने ही है किसीने कभी और किसी ने कभी?" मैं—"अश्वत्थामा मार्कण्डेय तथा और और भी बहुत ऋषि अमर हैं ऐसा सुननेमें आता है। और देवता तो सभी अमर हैं क्या यह सच नहीं?" वे हंसकर बोले—"सच भी है और झूठ भी" मुझे उनकी बातों में बड़ा रस आ रहा था। मैंने कहा—"दोनों बातें कैसी?" वे—"सच इस प्रकार कि हमारेसे उनकी सैंकड़ों हजारों लाखों गुना और किसी किसीकी करोड़ों गुना आयु अधिक है। और फिर भी अन्तमें एक दिन वे भी मर जाते हैं, इसलिए वे अमर हैं यह झूठ भी है।" मैं—"भला उनको इतनी आयु कैसे मिली?" वे—"भगवान्की इच्छासे।" मैं—"तो सबके लिए भगवान् की इच्छा ऐसी क्यों नहीं होती?" वे—"जो सब छोड़कर भगवान्की शरण लेते हैं उनको भगवान् भी सब कुछ देते हैं। जो भगवान्की शरण नहीं लेते संसारकी वस्तुओंमें ही फंसे रहते हैं उनको भगवान् भी सब नहीं देते।" मैं—"तो ये और और वस्तुएं लोगोंको किसने दी हैं? शिव, विष्णु, दुर्गा, गणेशजी, राम, कृष्ण, सूर्य, इनमें सबसे बड़ा भगवान् कौन है?" वे थोड़े चुपसे रहे फिर बोले—"ये सभी भगवान् के ही स्वरूप हैं। इनमें छोटे बड़ेका कोई प्रश्न नहीं। अभी तुम ठीक समझ नहीं सकते हो, तुम बच्चे हो।" मैं—"तो मैं कब समझ सकूंगा बी० ए० होनेके पश्चात् समझ सकूंगा?" वे फिर हंसे और कहने लगे—"नहीं जो इस संसारी विद्याको जितना अधिक पढ़ेगा वह उतना ही अधिक भगवान्के बारेमें मूर्ख होगा। भले ही उसको एक अक्षर भी न आता हो? पर सब छोड़ भगवान्की शरण जो जायगा वह सब समझेगा और सब विद्यायें उसको आ जायेंगी।" मैं—"तभी वे हमारे काका भी भगवान्का भजन करते हैं और उन्होंने सब छोड़ दिया है। वे रुपयों पैसोंको हाथ भी नहीं लगाते।" वे—"उनका नाम क्या है?" मैं—"मिश्रजी।"

युवककी बातोंसे पण्डितजीको दश वर्षकी अवस्था तकका युवकका प्रायः परिचय हो गया था और उसके नाम गांव आदिका और परिस्थितिका ब्योरेवार ज्ञान पण्डितजीको हुआ था। पण्डितजी ने युवकसे कहा—"फिर वे महात्मा क्या बोले?" युवक—"वे फिर हंसकर कहने लगे—तुम बच्चे हो तुम समझ नहीं सकते, सब छोड़ना बहुत कठिन है।" मैं—"सब छोड़े बिना भगवान् नहीं मिलते?" वे—"हां बेटा!" मैं चुप हो गया था। उनको हाथ जोड़े और उनकी जूठी थाली कटोरी लेकर तलाब पर गया। बासन धो मांजकर घर चला गया। उसी शामको वे कहीं चले गये। मैं उनकी बातों पर दिन रात सोचने लगा। इस घटनाके चौथे दिन ही मेरा जन्म दिन था। जन्म दिन बड़े ठाठसे मनाया गया। उस दिन मुझे ग्यारहवां वर्ष लगा था। मेरी छोटी बुआ मेरे घर पर ही कई दिनों से आई हुई थी, मेरे जन्म दिन पर भी वह ठहरी हुई थी। वह और मेरी मां दिन भर मेरे ब्याहकी बातें ही करतीं। हम बीस बिसवे कनवजिया थे और पैसे वाले भी थे। साथ ही दो सौ बीघे धरतीके जागीरदार भी थे। इस कारण कई लड़की वाले पीछे पड़े। पर हमारे काकाजीने सबको मने कर दिया था। लड़की वाले पांच-पांच छे-छे हजार दाय और मेरी विलायत की पढ़ाई का सारा व्यय देनेको भी कहते थे। जाने दीजिये पण्डितजी! उन बातोंमें कुछ नहीं धरा है।" युवक एक

बार चुप सा हो गया और फिर कहने लगा—'पण्डितजी ! मैं दिन रात सोचने लगा कि जब संसारी विद्या पढ़नेसे भगवान्के बारेमें मूर्खता बढ़ती है तो यह विद्या पढ़ी ही क्यों जाय और भगवान्को पाने पर सब विद्याएं आ जाती हैं और भगवान् सब कुछ देते हैं तो क्यों न पहले भगवान्को ही पाया जाय। पर भगवान्को पानेके लिये सब छोड़ना पड़ता है और इसीलिए ताऊजी सब छोड़ते जा रहे हैं। क्या करूं।' ऐसे ही सोचते सोचते मेरे मन में आया कि—'उन्हीं महात्माके पास चुपकेसे चला जाऊं और वे जैसा कहें वैसा ही करूं। उनको अवश्य ही भगवान् मिले होंगे। तभी तो वे ऐसी बातें करते थे। मैंने उनके पास जानेका मन ही मन निश्चय कर लिया। एक बार मांसे यह सब कहनेकी इच्छा हुई। पर मैंने फिर विचारा कि घरवाले तो कहीं जाने नहीं देंगे। फिर विचारा कि चुपके ही चुपके जाकर भगवान्से मिलकर फिर पिताजी माताजी और सबको बतलाऊंगा कि मैं भगवान्से मिल आया। ऐसी अनेक बातें सोचता जा रहा था। हित अहित सफलता असफलता आदिका विचार मेरी बाल बुद्धिमें नहीं आया। और किसी-न-किसी प्रकार चले जानेका विचार करने लगा। इतने ही में 'बिल्लीके भागों छींका टूटा' वाली बात बन आयी। नानीका पत्र आया उसमें उसने बहुत आग्रहसे लिखा था कि श्यामसुन्दरको आठ दिनके लिए ही उसकी बुआके साथ ही भेज दो। जब वह प्रयाग पढ़ाईके लिए चला जायगा तब शीघ्र मिलना कठिन हो जायगा। कई महिनों में उसको देखा नहीं सो मेरा चित्त उचटा सा रहता है। मेरी बुआने भी इस बातको ठीक माना और कहने लगी—"पांच सात दिन मेरे पास रहेगा और पांच सात दिन अपनी नानीके पास रह आएगा।" मांने और बाबूजी ने भी मान लिया। मैं मन ही मन बहुत प्रसन्न हो गया। घर वाले समझ रहे थे कि रेलमें बैठ कर जानेको मिलेगा, नयी नयी बाते देखनेमें आयेंगी इसीसे यह बहुत प्रसन्न है। जानेकी साईत ठीक हो गयी। चन्द्रमा ठीक देख लिया गया। और आषाढ़कृष्णा प्रतिपदाको प्रातः ही हम घरसे चले गये। पिताजी रेलके स्टेशन तक आये थे, ताऊजी माताजी और पिताजीने भी जाते समय समझाया था कि—'देखो मुन्नाराजा ! मामाके लड़कोंसे बुआके लड़कोंसे सबसे प्यारसे रहना, अकेले कहीं बाहर इधर उधर नहीं जाना। तुमको तैरनेका अधिक चाव है पर वहां गोमतीमें मत तैरना। वहां मगर बहुत रहते हैं।" वे कहते जा रहे थे, आंखोंसे उनके अश्रु बिन्दु टपक रहे थे। मेरी आंखोंसे भी एकाएक अश्रु वृष्टि प्रारम्भ हो गयी। मेरे मनमें आया कि—"लखनऊ जानेमें और वह भी आठ दस दिनके लिए ही जानेमें ये इतने दुखी हो रहे हैं तो मेरे दूर भाग जाने पर कितने दुखी होंगे और कितने अधिक रोवेंगे !" यह विचार आते ही मुझे बहुत ही रोना आ गया। एक बार तो जीमें आया कि सच्ची सच्ची बात कह दूं इनसे, फिर होनहार बस मन में आया—"भगवान् नहीं मिलेंगे और ये लोग एक दिन अवश्य मर जायेंगे अथच मैं भी किसी दिन ऐसे ही मर जाऊंगा और फिर चौरासी लाख योनिका चक्र काटना पड़ेगा।'

कलेजा धड़क रहा था, फिर मनमें आया कि बच्चोंको तो भगवान् शीघ्र मिलते हैं, ध्रुवकी कथा मनमें फुर आई। ढाढस बंध गया। जीको कड़ा किया, ताऊजीके चरण छुए, पिताजीके चरण छुए और माताजीके भी चरण छुए। सभीने छातीसे लगाया। छोटे भाइयोंको मैंने छातीसे लगाया और बहिनको गोदमें लेकर प्यार किया, आंसू नहीं रुक रहे थे। फिर जीको बहुत कड़ा करके मैंने कहा—'आपने जैसा कहा है वैसा ही मैं वहां रहूंगा। आठ दस दिनमें ही।' इतना कहते-कहते गला भर आया और आगे 'आपके पास आऊंगा' यह कह न सका; वैसी झूठी बात मुंहसे निकालते समय मुझे अपने पर बड़ी ग्लानि हो रही थी। मेरा मन मुझे धिक्कार रहा था। मैंने चुप रहना ही अच्छा समझा। हां मांके पैरोंसे एक बार फिर लिपटकर बहुत रोया। बुआने मेरी मांको रोनेसे रोका और कहा—'आप लोग रोते हैं इसीलिए यह भी रो रहा है।' बात तो वास्तव में सच थी, मेरे चले जाने पर मेरे

माता पिताको बहुत अधिक दुःख होगा। इसी भविष्यत्की दुःख सम्भावनासे मुझे यह दुःख हो रहा था। सबने आंखें पोंछ डाली थीं। हम रेलमें बैठ गये थे। मेरा मन दुःखी हो रहा था। मेरी बुआ मेरा जी बहला रही थी। उसके साथ उसका कोई बच्चा नहीं आया था। शामको छह बजे लखनऊ पहुंच गये। स्टेशन पर मेरे बुआई जी आये थे। हम गाड़ीसे उतरे तांगेमें बैठकर अमीनाबाद होते हुए चले गये। बुआका घर आया। सड़क पर ताङ्गेसे उतर गये। तीन चार गलियां पार करके बुआके घरमें हम पहुँच गये। वहां सभी बड़े-बूढ़ोंके चरण छुए। उन्होंने भी प्यार किया। नानीको समाचार दिया गया। वह रातको ही वहां आई और अपने साथ अपने घर ले गयी। पहले तो वह मुझे छातीसे लगाकर बड़ी रोई फिर बड़ी प्रसन्न हुई। दूसरे दिन शाम तक मैं नानीके पास ठहरा था। मेरे मामाओंने बड़ा प्यार किया। मैंने सभी बड़ोंके चरण छुए थे। मेरी एक माई (मामी) मुझे बहुत ही अधिक प्यार करती थी। मेरे शील स्वभावसे सभी प्रभावित थे और बड़े प्रसन्न हो रहे थे। साथ ही मेरे माता पिता और मेरे ताऊजीकी बहुत प्रशंसा करते थे। दिन-भरमें कितने ही अड़ौसी पड़ौसी बन्धु बान्धव मुझे देख गये। चरण छूना प्यार पाना यही सारा दिन चलता था। मामाओंने मेरी पढ़ाई लिखाईकी बानगी देखी। प्रसन्न हो गये वे। उनके लड़कोंमें मेरे जैसी छोटी अवस्थामें किसीने इतनी पढ़ाई नहीं की थी। नानी मामियां और अड़ोस पड़ोसकी औरतें मेरे ब्याहकी चरचामें लग रही थीं। मैं अपनी उधेड़ बुनमें था। दूजके दिन शामको बुआके यहां गया। मेरे मामाके लड़केने मुझे पहुँचाया था। वैसे तो वहांके कई मार्ग मैं अच्छी तरह जानता था। रातको निश्चय कर लिया कि कल यहांसे अवश्य चले जाना है। रात सोते समय बुआसे कह दिया था कि सुबेरे ही नानीके यहां जाना है। रात नींद नहीं आई। सुबेरे भिनसारे ही उठ गया था। टट्टी हो आया। दांतुन कुल्ला किया, नहा धो कर सन्ध्या की। दूधके सङ्ग रोटी खाई और अकेला ही 'नानीके घर जा रहा हूं' कह कर चला गया। लगभग एक मील नानीका घर होगा। मैं सीधा रेलवे स्टेशन पर चला गया। एक गाड़ी स्टेशन पर खड़ी थी, मैं उसमें बैठ गया। भीतर ही भीतर कलेजा धक् धक् करने लगा, गाड़ी चल पड़ी। गाड़ी कलकत्ते जाने वाली थी। गाड़ीकी भक् भक् इतनी तीव्र नहीं थी जितनी मेरे कलेजेकी धक् धक्। मनको अन्दर ही अन्दर समझाया और भगवान्‌की प्रार्थना की। मेरे पास न कोई लोटा था न बिस्तर था और न ही पैसे थे। धोती पहनी थी, कुर्ता और ऊपरसे ठण्डा कोट पहना था। सिर पर टोपी थी। हाथमें छः माशे सोनेका छल्ला था और कानोंमें छः माशेकी मुर्कियां। गाड़ीमें भीड़ नहीं थी। मैंने खिड़कीसे बाहर मुंह कर लिया था। स्टेशन आते थे गाड़ी बड़े बड़े स्टेशनों पर ही ठहरती थी, मेरा जी कई बार घबराया, मनमें आता था किसी स्टेशन पर उतर जाऊं और लखनऊ वापिस पहुँच जाऊं। पर फिर मन कहता था नहीं सब कुछ छोड़े बिना भगवान् नहीं मिलते। ऊपर सामान रखनेका पट्टा खाली था। मैं उसपर चढ़ गया और लेट गया। रात नींद नहीं हुई थी इस कारण मुझे नींद लग गयी थी। इतनी गाढ़ी नींद लगी थी कि कुछ ठिकाना ही नहीं। मेरी आंख खुली तब मुझे भूख लग रही थी पर क्या करता। चुपचाप पड़ा रहा। दो बार नीचे उतरा था। पानी पायडेसे पानी पीकर फिर लेट गया। मन रो रहा था। अनेक विचार मनमें आ रहे थे। भूख बहुत पीड़ा दे रही थी। किसीसे कुछ कहनेका साहस न होता था। मेरी आखोंके समक्ष ही अनेक लोग अनेक पदार्थ खा रहे थे। फल, मिठाई, साग, पूरी, पकौड़े, सभी कुछ स्टेशनों पर बिक रहा था। मैं फिर भगवान्से प्रार्थना करने लगा। मुझे फिर घर, माता, पिता, ताऊजी, छोटे भाई बहिन, नानी, मामा, बुआ सभी आंखोंके आगे दीखते और ऐसे दीखता कि वे सब रो रहे हैं। मुझे ढूंढ रहे हैं। फिर मैं रो पड़ता। मनमें बड़ा पछताता था और उधर भूखके मारे प्राण जा रहे थे। मैंने अपने गांवके शिवजीका ध्यान किया और प्रार्थना की, फिर लेट गया। लेटे-लेटे भी ध्यान कर रहा था। अकस्मात् ही आंख लग

गयी। जब मेरी आंख खुली तो क्या देखता हूं कि गाड़ी खड़ी है और डब्बा सारा खाली हो गया है। मैंने आंखें मलीं। शरीर बहुत शिथिल था। धीरेसे नीचे उतरा तो क्या देखता हूं कि गाड़ीके दरवाजेके पास एक लिफाफा पड़ा है। मैंने उसे उठाया वह खुला ही था। उसमें देखने लगा कि इसमें क्या है। देखकर बड़ा ही आश्चर्य हुआ। उसमें बनारससे धूबरीका एक पूरा और एक आधा टिकिट था और दस दस रुपयोंके दो नोट थे। मेरे पास एक कानी कौड़ी भी न थी। चित बहुत प्रसन्न हुआ। किन्तु दूसरे ही क्षण चिन्तामें पड़ गया कि जिसका टिकिट खो गया है उसको महान् संकटका सामना करना पड़ेगा। साथ ही मनमें आता कि यदि उसको ढूंढा और वह मिल भी गया तो मैं बिना टिकिटका पकड़ा जाऊंगा। क्या करूं कुछ समझमें नहीं आता था। भूखके मारे प्राण निकले जा रहे थे। भगवान्की प्रार्थना करने लगा। अन्तमें मांगकर आना दो आना लेनेका विचार किया पर किसीसे भीख मांगनेकी जंची नहीं। चुप हो एक बेञ्च पर बैठ गया। कभी सोचता 'टिकिटबाबूसे जाकर सच्ची सच्ची कह दूं। जो कुछ हो सो हो।' पर फिर सोचता परदेश है यदि किसीने मुझे कह दिया कि यह चोरी करके आया है तो क्या बनेगा। जिसके टिकिट और रुपये मेरे पास हैं वही यदि मुझे पकड़ ले और कह दे कि इसने चोरी की है तो क्या करूंगा।' भगवान्से फिर प्रार्थना की-"हे शिवजी महाराज! यहां मेरा कोई नहीं है और आपके दर्शनके लिए सब छोड़कर आया हूं। अब मैं घर तो जाऊंगा नहीं। आपके बिना दर्शन किये किस मुंहसे घर जाऊं?" फिर बेञ्चसे उठकर जिधरसे रेल आई थी उस ओर चल पड़ा अकस्मात् मेरे पैरके नीचे एक चवन्नी पड़ी मिली। मैंने उसे उठा लिया और स्टेशनसे बाहर जानेकी सोची। जिधर पैर चले उधर ही चल पड़ा। मुझे किसीने भी टिकिट नहीं पूछा। नहीं कोई रेलमें टिकिट देखने वाला आया था। मैं स्टेशनसे बाहर आया। एक पैसेके चने और गुड़ लिया। मैं नहाया धोया न था। इसलिये कोटकी जेबसे रूमाल निकाल कर उसमें चना और गुड़ बांध लिया और आगे क्या किया जाय सोचने लगा। पण्डित जी! क्या कहूं, उस समय वह संकट बहुत ही बड़ा दिखाई दे रहा था। जीवनमें सबसे पहला संकट था। घर वालोंका बारम्बार ध्यान आते ही कलेजा मुंहको आ जाता था। बरबस आंखोंसे पानी बहने लग पड़ता था। पर इस बातसे कि रोते देखकर कोई जांच पड़ताल करने लग जाय तो बड़ी कठिनाई हो जायगी, मैं आंखोंको इस ढंगसे पोंछ डालता कि किसीको पता हो न चले कि 'यह रो रहा है' इतनेमें मेरे मस्तिष्कमें एकाएक एक विचार सूझ आया। तत्काल फिर स्टेशनकी ओर चल पड़ा। मैंने एक कुलीसे पूछा--"प्लेटफार्मका टिकिट किधर मिलेगा?" कुलीने कहा—"वह देखो उस खिड़की पर" उंगलीसे उसने खिड़की दिखा दी। वहां जाकर मैंने एक टिकिट प्लेट फार्मका लिया। दो पैसे बाबूको दे दिये। प्लेटफार्म पर पहुंचकर एक कुलीसे पूछा "धूबरी जाने वाली गाड़ी कहां आती है और कब आती है।" उसने भी उंगलीसे दिखाते हुए कहा 'उस प्लेटफार्म पर चले जाओ। अभी बहुत समय है, गाड़ी दस बजे जायगी।' मैं भी वहां गया, गाड़ी खड़ी थी। गाड़ीमें कोई भी मनुष्य न था। मैंने बाहर प्लेटफार्म पर बैठे हुए लोगोंसे कहा—'क्या आप लोगोंमें कोई धूबरी जाने वाला है?' कईयोंने पूछा इधर उधर जितने भी थे तीस चालीस मनुष्य उस गाड़ीमें चढ़ने वाले। इञ्जनसे लेकर अन्तिम डब्बे तक सब गाड़ी देख डाली कोई भी न बोला। इतनेमें एक मेरी ही अवस्थाका सुन्दर बालक फिरता हुआ वहां दीख पड़ा। मैंने उससे कहा—'आप कहां जाओगे?' वह बोला—'धूबरी' मुझे बड़ा आनन्द हुआ। मैंने कहा—'आपके साथ और कोई नहीं है?' वह—'मेरे पिताजी हैं।' मैं—'वे कहां हैं?' वह—'वह देखो वहां पानीके नल पर खड़े हैं। उनके कान पर जनेऊ है और हाथमें लोटा है। सिर पर अंगोछा लपेटा है।' मैं—'वे लम्बे-से गोरे-से।' वह—'हां' मैं--'आप कहांसे आये हैं?' वह--'बनारससे।' मुझे निश्चय हो गया कि टिकिट इन्हींके हैं। मैं सोचने लगा कि ये अपने टिकिट ढूंढ क्यों नहीं रहे। सम्भव है इनको

टिकिटोंके गिरनेका ध्यान हो न हो।' मैं वहीं उनके आनेकी प्रतीक्षामें खड़ा रहा और उस लड़केसे बातें करने लगा। लड़केने पूछा-"तुम कहां जाओगे ?" मैंने कहा--"थोड़ी देरमें बता दूंगा।" इतनेमें उसके पिताजी वहां आ गये। मैंने उनको दोनों हाथ जोड़ प्रणाम किया। उन्होंने भी आशीर्वाद देते हुए पूछा-- 'कहांके रहने वाले हो बच्चा ?" वे अपना मुंह हाथ पोंछते जा रहे थे। मैंने अपने अश्रुओंको आंखोंसे बाहर आनेकी आज्ञा नहीं दी। भूखको पेटके भीतर ही सो जानेको कह दिया। होठों पर हंसीको बुला लिया। मनमें भगवान्को सुमिरने लगा और उनसे बड़ी नम्रता और सावधानीके साथ बोला—"जी बाबूजी! और सब बातें मैं पीछे करूंगा पहले जिस बातके लिए मैं आपके पास आया हूं वह बात सुन लीजिये।" वे बोले--"कहो बेटा क्या कहना चाहते हो ?" मैं—"आप पहले यह देखिये कि आपकी कोई वस्तु कहीं गिर तो नहीं गयी है ?" लड़का और बाप दोनों मेरे मुंहकी ओर देखने लगे। फिर वे बाबूजी बोले--"कैसी वस्तु बेटा ?" मैं- "कागज पत्र लिफाफा" वे झटपट अपना कोट उठाकर उसकी जेबें टटोलने लगे और जब टिकिटों वाला लिफाफा जेबमें न मिला उन्हें, तो बड़े घबराते हुए बोले— 'ओह! टिकिटोंवाला लिफाफा नहीं है" मैं--"बाबूजी! घबराइये नहीं उसमें क्या-क्या है ?" वे—' बेटा दस-दसके दो नोट हैं और धूबरीका एक पूरा और एक आधा टिकिट है।" मैंने लिफाफा जेबसे निकाल कर उनके हाथमें दे दिया। उन्होंने झटसे लिया और उसमेंसे दोनों नोट और टिकिट निकालकर देखा। सब ठीक था। उन्होंने बड़े ही प्रसन्न हो मेरे सिर पर हाथ फेरा और प्यारसे मुझे और और बातें पूछने लगे। मैंने कहा--'मैं नहा कर आता हूं' वे बोले--'यह लोटा ले जाओ।' अब मेरे ध्यानमें बात आई मेरे पास तो अंगोछा भी नहीं है, नहाऊंगा कैसे ?' मैंने पलकभरमें निश्चय कर लिया। उनसे अंगोछा मांग लिया और नहाने नल पर चला गया। झटपट नहा धो कर वहीं सूर्यनारायणको अर्घ्य प्रदान किया। थोड़ा गायत्री जप किया और संध्या मात्र की। हाथ जोड़कर सच्चे हृदयसे भगवान्से प्रार्थना की। ठीक ठीक संध्या न कर सकनेके लिए मन ही मन भगवान्से क्षमा मांगी। धोती लगाई शरीर पोंछा, कुर्ता कोट लगाया और टोपी लगाई। अंगोछा धो लोटा मांज कर भरा और उनके पास आ गया। लोटा और अंगोछा उनको दे दिया। वे बोले—"मैं भी नहा आऊं।" मुझे कहने लगे 'तुमने अभी जाना नहीं।' मैं चुपचाप वहीं बैठ गया। वे नहाने चले गये। मैंने गुड़ चने निकाले थोड़े एक उस लड़केको दिये। पहले तो वह न माना पर मेरे प्रेम भरे आग्रहको देख फिर उसने ले लिये। मैंने चने खा लिये और गुड़ भी खा लिया। फिर नल पर पानी पीने चला गया। वे बाबूजी नहा धो कपड़े लगाकर वहां आ गये। मैं भी पानी पी कर उनके पास चला आया। मैंने हाथ जोड़कर उनसे कहा--"अच्छा अब मुझे जानेकी आज्ञा दीजिये बाबूजी!" वे आंखोंमें आंसू भर बोले—"बच्चा! तुम बड़े धर्मात्मा हो। किसी अच्छे घरके लड़के दिखाई देते हो। तुमने अपना परिचय कुछ नहीं दिया। तुमने यह भी न बताया कि यह लिफाफा तुमको कहां मिला। क्या तुम अकेले ही हो ?" मैं —"जी हां" वे—"तुम कहां जा रहे हो ?" उनके इस प्रश्नका कोई ठीक उत्तर मेरे पास न था। मुझसे बोला न जाता था। फिर भी मैंने अपने आपको संभालते हुए थोड़ा हंसकर कहा—"तो क्या आप मुझे अपने साथ ले चलना चाहते हैं ?" वे —"चलो बेटा!" मैं —"पर मेरे पास तो पैसे नहीं हैं टिकिट कहांसे लाऊंगा।" वे—"क्या सचमुच तुम मेरे साथ चलोगे ?" मैं —"यदि आप ले चलें तो अवश्य चलूंगा।" न जाने उन्होंने अपने मनमें क्या सोचा और कहने लगे—"लो मैं तुम्हारे लिए अभी टिकिट ले आता हूं" वे झटपट उठे। मुझे वहीं बैठनेको कहा और शीघ्र जा कर टिकिट ले आये। मेरे हाथमें टिकट देते हुए वे बोले—"यह रहा तुम्हारा टिकिट" मैंने टिकिट लेकर जेबमें रख लिया। आकृति और बोलचालसे वे बहुत सज्जन प्रतीत हुए। इतनेमें कहीं दूसरी ओर दो गाड़ियां आई थीं और हमने सुना कि 'इस गाड़ीमें भारी भीड़ चढ़ने वाली है।'

वे बाबूजी और उनका लड़का शीघ्र ही अपने सामानको रखवा गाड़ीमें बैठ गये। मैं भी उन्हींके साथ गाड़ीमें चढ़ गया। हमें अच्छा स्थान मिल गया था। बाबूजीने अपनी दरी फैला दी थी। उनका लड़का और मैं दोनों हम चार मनुष्योंके स्थानको घेर कर बैठ गये थे। बाबूजीने डब्बा खोलकर पूरी हलुवा मिठाई सब निकाला। मेरे और अपने लड़केके लिए एक-एक पत्ते पर रख दिया। गाड़ीमें भीड़ चढ़ रही थी। पर हमारे पास बहुत स्थान था। भगवान्‌की अकल्पित दयाका अनुभव कर रहा था। बाजारका या दूसरे अपरिचितके हाथका जाति बिरादरी छोड़कर दूसरोंका पकाया अन्न हम लोग नहीं खाया करते थे। पर अपना परिचय देना अनुचित समझ भगवान्‌को मन ही मन भोग लगाकर खाने लगा। थोड़ा सा खानेसे ही पेट भर गया। कारण पहले चना गुड़ जो खाया था। हाथ धोये और पानी पी कर बैठ गया। वे बाबूजी भी अब खाने लगे। उन्होंने भी खाया। मुंह हाथ धोये और लोटा पानीसे भर कर अपने पास रख लिया। बैठे ही बैठे मुझे नींद आने लग पड़ी थी। उधर गाड़ी भी चल पड़ी थी। वे—"बेटा! तुमको नींद आ रही है तुम लेट जाओ।" मैं चुपचाप लेट गया। बड़ी गहरी नींद लग पड़ी थी। शामको चार बजे मैं उठ पड़ा, टट्टी गया। एक स्टेशन पर हाथ मुंह धोये और चुप चाप अपने स्थान पर आ कर बैठ गया। वे बड़े प्यार से बोले "बचा तुम्हारा नाम क्या है?" मैं—"यही है!" कौनसा वे बोले। मैं हंस दिया। मैंने कहा—"आपने जिस नाम से पुकारा" न जाने क्यों वे मेरे से ऐसे प्रभावित हो गये थे कि किसी बात पर उन्होंने मुझसे [illegible] नहीं की। उनके लड़केको भूख लग आई थी। उन्होंने फिर डब्बा खोला और हम दोनोंको पूरी, हलुवा, आलू सब दिया। हम खा पी कर हाथ मुंह धो बैठ गये। मैं मन ही मन भगवान्‌की दयाका अनुभव कर रहा था। बाबूजीको नींद आ रही थी। वे लेट गये और उनका लड़का भी चुपचाप बैठा था। उसने मुझे बहुत पूछा पर मैंने कुछ भी न कहा। इतना ही कहता था कि धूबरी चल कर बताऊंगा। फिर मैं लेट गया और सो गया। वे—"क्यों चुन्नी! इसने कुछ अपना पता ठिकाना बताया?" लड़का—"कुछ नहीं। कहता था धूबरी जा कर कहूंगा।" वे—"लड़का अच्छे घरका और बड़ा सच्चा दीखता है। किसी विशेष दुःखके कारण भाग आया है। ऐसा दीखता है। सम्भव है मां बाप न हों।" लड़का—"बात चीत बड़ी अच्छी करता है। यदि हमें रुपये और टिकिट न देता तो कितनी बड़ी विपत्ति हम पर आई थी।" वे—"इसी कारण तो कहता हूं मैं कि लड़का बड़ा ही अच्छा है यह। अब इसको कुछ न पूछना। घर पर चल कर ही पूछेंगे सब।" लड़का—"बाबूजी! मुझसे बड़ा ही प्यार करता है यह।" पण्डितजी! वे दोनों पिता पुत्र बातें कर रहे थे और मैं सब सुन रहा था। वे समझ रहे थे—"मुझे नींद लगी है।" रात बीत गयी। पैसिंजर गाड़ी सभी स्टेशनों पर ठहरती। कहीं-कहीं तो वह घण्टों ठहरी थी। हमारा स्टेशन प्रातः पांच बजे आ ही गया। हम तीनों उतर पड़े। वहां एक बड़ी नदी थी। नावमें बैठ कर नदी पार हुए, उनके घर पहुंच कर सबको प्रणाम किया। अब मेरे लिए एक बड़ी विपत्ति आई। सभी मेरा परिचय पाना चाहते थे। अब क्या करूं। झूठ बोला नहीं जाता था और सच कहना नहीं चाहता था। मन ही मन भगवान्‌से प्रार्थना करने लगा। उनके गांवके पास बड़ा घोर जङ्गल था। वहां बड़ा अच्छा तालाब भी था, मैंने कहा—"मैं टट्टी जाऊंगा।" उन्होंने भी बाहरके द्वारसे दिखा दिया 'इधर चले जाओ।' मैं वहांसे टट्टीके लिए चला और एक मील चलता ही गया! जङ्गलमें घुसता जा रहा था। बार बार पीछे देखता था और भगवान्‌की प्रार्थना करता था।

एक पहाड़ मिला उस पर चढ़ने लगा। मैं बहुत थक गया था। लगभग तीन मील मार्ग चल चुका हूंगा। एक वृक्षके नीचे बैठ गया। बहुत थक गया था, अब चला नहीं जाता था। पीछे आता कोई नहीं दीखा पर अब वह पहाड़ी जङ्गल बहुत डरावना लग रहा था। "क्या करूं कहां जाऊं, हे शिवजी महाराज! आपके दर्शनके लिए

मैंने सब छोड़ दिया है। अब कृपा करो" यों प्रार्थना करता जा रहा था और रो रहा था। न तो वहां ठहरनेका साहस था और न ही वहांसे उठ कर चलनेका। जङ्गल और पहाड़ चित्रोंमें देखे थे और उनकी रमणीयताका वर्णन पुस्तकोंमें पढ़ा था। पर प्रत्यक्षमें तो सर्वथा विपरीत दीखा। भगवान्‌की प्रार्थनाको छोड़ यहां मेरा कोई भी आश्रय न था। इधर भूख भी बड़ी लग रही थी। घण्टा एक ऐसा ही बीत गया। नहीं कोई मनुष्य दृष्टिमें आया, नहीं कोई पशु। हां पक्षी बड़े ही सुन्दर-सुन्दर दीख रहे थे। बड़ी मीठी-मीठी बोली बोल रहे थे वे। अब फिर साहस किया और उठा, शीतल और मन्द सुगन्धित वायुने मेरी सब थकावटको दूर भगा दिया था। और पक्षियोंने अपनी मीठी-मीठी बोलियोंसे मेरे हृदय में उत्साह भर दिया था। एक बार अपने आपको देखकर हंसा—विलायत को पढ़ाई, बैङ्कमें रक्खा हुआ पन्द्रह सहस्र रुपया। ताऊजी, पिताजी, माताजी, छोटे भाई बहन, नानी, बुआ और उनके परिवार, उनका प्यार और रोना सभी दृष्टिके सामने हो हो कर चले गये। धूवरीके बाबूजी, उनका लड़का, बिना पैसेके कहांसे कहां पहुंचना सभी बातोंको सोच कर कुछ आश्चर्य कुछ दुःख और कुछ भगवान्‌की इच्छाकी विचित्रता और उनकी दयाका अनुभव होता था। अन्तमें मनमें उत्साह हुआ। और भगवान्‌की प्रार्थना की। उनको हाथ जोड़े और पहाड़ चढ़ने लगा। लगभग एक घण्टे भरमें उसके एक शिखर पर पहुंच गया था। इधर एक पगडण्डीसी बराबर चलती दृष्टिमें आई। मुझे निश्चय हुआ कि इधरसे लोग आते जाते रहते हैं। इधर बड़े ही घने जङ्गल थे। इधरके वृक्षोंमें हमारी जान पहचानके वृक्ष भी कहीं कोई थे। क्षण भर विश्राम किया। दूर-दूर तक देखा पहाड़ोंकी पंक्तियां उनके मध्यमें जहां तहां छोटे-छोटे गांव और पानीके नाले छोटी नदी और फिर बड़े ऊंचे पहाड़ उनसे दूर और ऊंचे आकाशको चूमने वाले पहाड़। यही सब दीख रहा था। हमारे गांवमें जो महात्मा आये थे और जिन्होंने कहा था--"सब छोड़े विना भगवान् नहीं मिलते" वे धूवरी के पास जङ्गलमें रहते हैं। ऐसा उनसे ज्ञात हुआ था। अब पहले उनको ढूंढना था। उनके स्थानका नाम तो मैं भूल गया था। हां, उनका नाम था 'सच्चिदानन्द बाबा'। कोई मनुष्य यहां नहीं मिला, उतराई उतर कर गांवमें चलनेका विचार किया। यहांसे कई पगडण्डियां थीं, भगवान्‌का नाम लेकर एक पर चलना आरम्भ कर दिया। अब बड़े उत्साहसे चल रहा था। उतराईका पैर था और भी शीघ्रतासे मार्ग कट रहा था। न जाने कितना चला हूंगा। सूरज बहुत ऊपर आ चुका था, मैं चलते चलते एक झरने पर पहुंच गया। स्वच्छ शीशे जैसे जलको देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। वहीं स्नान संध्या करनेका निश्चय कर विश्रामके लिए बैठ गया। थकावट अब मिट गयी थी। अंगोछा मेरे पास नहीं था। कुर्ता लपेटा और स्नान किया। धोती पहनी, कुर्ता सूखने डाल दिया और संध्या करने लगा। उस दिन मुझे गायत्री जपमें बड़ा आनन्द आ रहा था। कुर्ता सूख चुका था, उसे पहन लिया। कोट लगाया टोपी लगाई और हाथ जोड़ भगवान्‌से प्रार्थना करने लगा—'भगवन्! शम्भो!! अब आपको छोड़ मेरा कोई नहीं है। प्रभो! अब आपके पास अनन्य शरण हो आया हूं। सबको छोड़ आया हूं। नाथ! दया करो।" क्षणभर मौन हो कर बैठ गया। आंखें बन्द कर लीं, और अपने गांवके शिवजीका ध्यान करने लगा। कुछ समयके अनन्तर मैंने आंखें खोलीं। मुझे बड़ा ही आनन्द हुआ। मेरी आंखोंके समक्ष एक बड़े ही सुन्दर शरीरवाले दिगम्बर महात्मा खड़े थे। उनके न दाढ़ी थी और न मूंछें। सिर पर बड़े बड़े लम्बे पीले बाल थे। लम्बे-लम्बे हाथ सोने जैसा सुन्दर रंग और बड़ी-बड़ी मोतीके समान श्वेत कुछ गुलाबीपन लिये आंखें और उनमें काली-काली भंवरोंके समान तारिकाएं थीं। उनको देख कमल पुष्पकी पंखुरी पर भंवरे बैठे हों, ऐसा भ्रम होता था। मैंने उनको प्रणाम किया, और सहसा रो पड़ा। उन्होंने

बड़ी मीठी वाणीसे मुझे समझाया, और मेरा परिचय पूछा। मैंने भी अथसे इति तक सब कह सुनाया। फिर वे बोले—"तुम निश्चय रखो तुम पर भगवान्‌की बड़ी ही कृपा है। तुम सब भय छोड़ दो। तुम यहांसे इसी पगडण्डीसे चले जाना। यहांसे छह मील दूर पर एक छोटी नदी आयेगी, इस नदीके तीर पर शिव मन्दिर है और उसके पास ही कोई आध मील गांव भी है। मन्दिरके पास एक बड़ी सुन्दर गुफा भी है, उसमें रहना, गांवमें से रोटी भिक्षा ले आना; भगवान्‌को भोग लगाकर थोड़ा नदीमें डाल दिया करो और थोड़ा स्वयं खा लिया करो। तीनों समय संध्या और गायत्री जप करो। मैं एक मन्त्र बताता हूं इसका निरन्तर जप करते जाओ, जहां तक हो मौन रखना।" यों कह कर उन्होंने एक मन्त्र बताया। फिर उन्होंने कहा—"तुमको भूख लगी होगी" इतनेमें एक पथिक आया। उन्होंने उस पथिकको कहा—'तुम्हारे पास रोटी है?' उसके 'हां' कहने पर उन्होंने उसको कहा—"इस बालकको भूख लगी है। इसको रोटी खिलाओ।' पथिकने बड़े प्रेमसे रोटी खिलाई। मकईकी रोटी साथ मक्खन और चटनी थी। मेरा पेट भर गया। मैंने बाबा सच्चिदानन्दके बारेमें पूछा तो वे महात्मा बोले—'वे अब यहां नहीं हैं। वे बदरिकाश्रम की ओर चले गये हैं। पथिक पहाड़ी पर चढ़ने लगा। दिगम्बर महात्माने मुझे फिर सब बातें ठीक ठीक समझाईं और वे कहीं चले गये। मैं उनकी बताई पगडण्डीसे चलता-चलता उस नदी पर पहुँच गया। मैंने शिवालय देखा, गुफा भी देखी, स्थान बहुत सुन्दर था, पेट भरा ही था, शिवजीके भव्य मन्दिरको देख कर चित्त बहुत प्रसन्न हुआ। मन्दिरका द्वार खोला और दर्शन किये, वहीं जगदम्बा पार्वती, गणपति विष्णु और सूर्य सभीकी मूर्तियां थीं। फिर गुफा भी देखी, बहुत अच्छी थी, । मैं वहां ठहर गया, गांवमें चार पांच घर ब्राह्मणोंके भी थे। गांव वालोंने मेरे साथ बड़ा ही अच्छा व्यवहार किया। मुझे किसी बातका कष्ट न था। दिगम्बर बाबाके कथनानुसार मैं रहने लगा कान की मुर्कियां और हाथका छल्ला मैंने उतार दिये थे, धोती फाड़कर कौपीनें और अंगोछे बना डाले थे। कुर्त्ता रखा था, कोट और टोपी गांवके एक लड़केको दे दी। मेरा चित्त पहले-पहले कुछ दिन बहुत घबराया करता था। घर वालोंकी स्मृति भी सारा-सारा दिन भजन में चित्त न लगने देती। पर धीरे धीरे मेरा चित्त शांत होने लगा। अब मैं मौन-से ही प्राय: रहने लगा था। बाल लम्बे-लम्बे हो रहे थे। गांवके लोग मुझे गायका दूध बहुत पिलाते थे। अपनी गुफा छोड़कर रात कभी कहीं मैं न रहा। गांवमें कभी न गया। साढ़े चार वर्ष बराबर वहां रहते हो गये थे। इतने लम्बे समयमें मुझे कभी कोई रोग न हुआ। एक दो साधु भी यदा कदा वहां आ जाते थे। मुझ पर लोगोंकी बड़ी श्रद्धा थी। आस-पास के गांवके लोग भी मेरे दर्शनोंको आने लगे थे। मैं किसीसे बोलता न था। सिरपर जटाएं हो गईं थी। पन्द्रहवां वर्ष मुझे चल रहा था। एक दिन दस पन्द्रह साधुओंकी एक टोली आई। वे कहने लगे—"परशुराम कुण्ड बड़ी सिद्ध भूमि है, तुम यदि वहां एक वर्ष भी तपस्या करोगे तो साक्षात् भगवान् शङ्कर तुम्हें दर्शन देंगे।" पहले तो मैंने उनके साथ जाना अस्वीकृत कर दिया था। पर उन सभी साधुओंके आग्रह वश और भावी वश हो उनके साथ चल पड़ा। अपना वह स्वर्ण बेच दिया, छब्बीस रुपये हो गये थे। परशुराम कुण्डकी यात्रा वर्ष भरमें एक ही बार होती है। सौ रुपया गांव वालों ने भी दिया था। साधुओंके साथ चलते हुए दस दिन हो गये थे। मार्ग बड़े ही भयानक हैं। कहीं पर ऐसे घने जङ्गल हैं कि दोपहर भी सूरजकी धूप के दर्शन नहीं होते। और कहीं भयानक पथरीली चट्टानें हैं। मिट्टी का नाम नहीं, पहाड़ और पत्थर, दस-दस मीलोंमें गांव के दर्शन तक नहीं होते।

वे महात्मा लोग जैसे पहले भले मानस प्रतीत होते [illegible] वैसे मार्ग में उनका व्यवहार अच्छा नहीं [illegible] दयालु थे। मेरे [illegible] था। कोई अवश्य [illegible] भी अब आधे उनकी सेवामें उड़ गये थे। मेरा नित्य नियम भी अब ठीक न बन पाता

था। टोलीमें सन्यासी उदासी और बैरागी साधु थे। मैं तो किसी भी सम्प्रदाय अथवा पन्थका परिचित न था। वे आपसमें मुझे शिष्य बनानेके लिये झगड़ते थे। बहुमत उदासियोंका था। मैंने अपना परिचय, 'ब्राह्मण हूं।' इससे अधिक न दिया। मैं उनमेंसे एकदोको छोड़कर सबसे अधिक बलवान् था। तीन चार साधू मेरे आचरण और सुस्वभावके कारण मेरेसे बहुत अधिक स्नेह करने लगे थे। मुझे उस स्थानको छोड़कर चले जानेका पश्चात्ताप हो रहा था। उन साधुओंमें साधु स्वभाव तो चार पांच ही थे। और तो पेटपालू ही दीखते थे, यह मेरा पहला ही अनुभव था। पढे लिखे भी रामका नाम ही समझिये। हां, तीन-चार पढ़े लिखे जो थे—वे तो न पढ़ते तो ही अच्छा होता। पढ़ पशु तो अपढोंसे अधिक बहिर्मुख देखे। मनमें सोचता था—'कहां आ फंसा।" भगवान्से प्रार्थना करता—"प्रभो! इनके पालेसे छुड़ाओ तो बड़ा अच्छा।" पन्द्रह सोलह मनुष्योंमें मेरे सवा सौ रुपये कब तक साथ दे सकते थे। अब छह दिनका और मार्ग अवशिष्ट था। मकर संक्रान्ति पर्व स्नान था। एक गांवमें हमारा पड़ाव पड़ा था, तस्मै बनी माल पुए बने। गांवके लोगोंने बड़ी सेवा की। उस दिन वहीं रहे थे। मेरे पास अब पचीस-एक रुपये बचे होंगे। पण्डितजी! क्या कहूं उन लोगोंके व्यवहारसे मुझे बड़ी घृणा हो चली थी। परन्तु ग्रामीण गृहस्थी लोग उन्हीं पर अधिक श्रद्धा भाव रखते थे। मैं भगवान्की इस विषम लीलाको न समझ सका। सम्भव है कलि—कालकी ही यह अनिर्वाच्य लीला हो। उस शिव मन्दिरके पास गुफामें रहते समय कभी कोई दुर्व्यसन न लगा था। किन्तु इन महात्माओंके सत्सङ्ग (कुसङ्ग) से पन्द्रह दिनोंमें ही चिलम पीना सीख गया था। कहते थे—"इधरका पानी दूषित है। तमाखू पीनेवालेको पानी कितना भी दूषित हो लाग नहीं कर सकता।"

प्रातः काल हुआ, हम लोग मार्ग चल पड़े। छह सात मील चल कर एक नाले पर पहुंचे, वहां नित्य कृत्य किया। भिक्षा लाई गई और टिक्कड़ ठोंके गये। नमक मिर्च डाले टिक्कड़ दो मैंने भी खाये पानी पीया। मण्डली कहने लगी—"मार्ग बहुत शेष है शीघ्र चलना चाहिये।" वह प्रति दिनका मार्ग चलना भिक्षा मांगना और अस्त व्यस्त अनर्गल बात चीतका व्यवहार इन सब बातोंसे मेरे तो प्राण कण्ठ में आने लगे। लोटा सोटा उठाया लच पड़े।

"लोटा सोटा लंगोटा जगति
विजयते साधवी सम्पदेषा"

बस मैं भी उनके साथ चला। चला क्या इच्छा न होने पर भी मुझे चलना पड़ा। पण्डितजी! घरकी स्मृति बार-बार आने लगी। अश्रु वृष्टि होना ही चाहती थी। नङ्गे पैर कांटों और कङ्करोंसे छलनी हो गये थे। पर किसको कहता और कौन सुनता। वे साधु दैत्य और दानवोंके अनुकरणमें लगे थे। उनको अभ्यास था। उन के पैरोंको कांटे चुभते न थे। कांटों और कङ्करोंको ही उनके पदप्रस्तर चुभते थे। वाह री प्रकृति!! इसी समय मेरे पेटमें मीठी मीठी पीड़ा प्रारम्भ हो गई थी। चार पांच मील तक तो मैंने पीड़ाको सह लिया, पर अब सही नहीं जाती थी। अन्तमें पीड़ा जीत गयी और मैं उसके समक्ष हो गया पराजित। मैंने महात्माओंसे हाथ जोड़ कर कहा—"महाराज! मुझे बहुत पीड़ा हो रही है। आप लोग थोड़ा विश्राम कर लें, मैं अब एक पैर भी चलने में असमर्थ हूं।" सब खड़े हो गये। कुछ तो पांच-पांच सौ हाथ दूर चले गये थे।

—क्रमशः



"युग परिवर्तन या-युग भ्रमणचक्र"

(ले०-राजज्योतिषी श्री पं० मुरारिलाल कौशिकाचार्य्य आयुर्वेद शास्त्री स ध० महोपदेशक)

इस लेखमें हम यह बतानेका प्रयत्न करेंगे कि जिस प्रकार दिनके बाद रात और रातके बाद दिन तथा गर्मीके अनन्तर सर्दी और सर्दीके अनन्तर गर्मी एवं सुखके बाद दुःख और दुःखके बाद सुख कुम्भकारके चक्रकी तरह घूम-घूम कर आते जाते रहते हैं, इसी प्रकार सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग भी घूम २ कर आते जाते रहते हैं। और प्रायः घटनाएं भी—"यथापूर्वमकल्पयत्' प्रमाणानुसार वही घटित होती रहती हैं जो कि पूर्व युगोंमें हो चुकी हैं। जैसे वर्तमान वैवस्वत मन्वन्तरमें २८ सत्ययुग २८ त्रेतायुग २८ द्वापरयुग बीत चुके हैं और इस समय २८ वां कलियुग चल रहा है। कहना न होगा कि प्रत्येक त्रेतामें रामावतार जब-जब हुए तो रावण भी अवश्य हुआ। इसी तरह प्रत्येक द्वापरान्तमें जब जब कृष्णजी प्रकट हुए तो कंसादि भी हुए। इसके प्रमाणके लिए पुराण-साहित्य अवलोकन किया जा सकता है।

संसार वास्तवमें प्रभुका रचा हुवा एक नाटक है इसमें पृथ्वीको नाट्यगृह (नाटक स्टेज) कहा जा सकता है। सूर्य, चन्द्र प्रकाश दीपक हैं। रात और दिन परदे का काम देते हैं, और ऊंचे २ पर्वत नदियें सागर, हरे २ जंगल वृक्ष इसमें चित्ताकर्षक दृश्य हैं। सम्पूर्ण प्राणिमात्र उस नाटकके पात्र हैं। और परमेश्वर इस नाटकका जहां सूत्रधार है वहां इसका दर्शक भी है।

गीता में—

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरो पराणि,
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही। गी. २।२२

अर्थात्—मनुष्य जैसे पुराने फटे वस्त्रको त्याग कर नवीन वस्त्र धारण कर लेता है उसी प्रकार शरीरधारी पुराने जीर्ण शरीरको त्याग कर नवीन शरीर धारण कर लेता है। अर्थात् मनुष्यादि सृष्टिके आरम्भमें जो शरीर धारण करते हैं, वही सृष्टिके अन्त तक बदलते रहते हैं।

जिस प्रकार एक नाटक पात्र अपना पार्ट अदा करने के अनन्तर छुट्टी पा जाता और विश्राम करता है तथा दूसरे दिन फिर समय पर अपना पार्ट प्ले करनेको आकर उपस्थित हो जाता है ठीक इसी प्रकार सब जीव पूर्व कर्मानुसार अपना काम करके परलोक सिधारते हैं और फिर समय आने पर जब वही नाटक पुनः आरम्भ होता है तो पूर्ववत् वही प्राणिमात्र तरह २ के शरीर धारण कर अपने २ हिस्से का पार्ट अदा करनेके लिए इसी डरा रूपी नाटक स्टेज पर आकर उपस्थित हो जाते हैं।

किन्तु प्रश्न यह होता है कि वह नाटक कितने २ समयके अनन्तर होता रहता है? इसको इस प्रकार समझिये कि हमारे शास्त्रोंमें लिखा है कि प्राणियोंको ८४ लाख योनियोंमें भ्रमण करना पड़ता है। अर्थात् ८४ लाख बार यह नाटक खेला जाता है। ब्रह्माके एक दिनमें ही यह सब घटना घटित होती है। ब्रह्माके एक दिनमें चार अर्ब बत्तीस करोड़ ४,३२,००,००,००० वर्ष होते हैं। इसका वर्णन वेदमें भी बहुत अच्छी तरह वर्णन किया गया है—

शतं ते अयुतं हायनान्द्वे युगे त्रीणि चत्वारि कृण्मः॥
अथर्व ८।२।२१

अर्थात् सौ अयुत वर्षोंके आरम्भमें दो, तीन, चार की संख्या लिखनेसे एक कल्पका समय बन जाता है। अयुत १० हजारका होता है" सौ अयुतके दशलक्ष हुए। दश लाखकी ७ बिन्दु लिखकर उनके आरम्भमें "अंकानां वामतो गतिः" प्रमाणसे ४,३२,००००,००० हैं। यह संख्या

एक सहस्र चतुर्युगियोंके वर्षोंकी होती है, इसीको ब्राह्म दिन या कल्प कहते हैं।

इसी प्रकार शतपथ-ब्राह्मण १०।४।२।२२-२५ के अग्निचयन प्रकरणमें लिखा है कि ऋग्वेदके अक्षरोंसे प्रजापतिने बारह १२००० सहस्र बृहतीछन्द (जो कि हर ३६ अक्षरका) बनाये। यदि बारह सहस्रको ३६ से गुणन किया जाय तो ४३२००० यह कलियुगके वर्ष बन जाते हैं। इसी प्रकार अन्य युगोंकी वर्ष संख्या भी वेदों द्वारा जानी जा सकती है। लेख बढ़नेके भयसे इस पर अधिक अभी नहीं लिख सकते फिर कभी इस पर प्रकाश डाला जायगा।

कल्पकी वर्ष संख्या अर्थात् ब्रह्माके १ दिनके वर्षोंमें यदि ५०० से भाग दिया जाय तो ८४ लाख बनते हैं। जो एक कल्पके वर्षोंकी संख्या है वह सृष्टिके आरम्भसे ली गई संख्या है। और आरम्भके अर्थ हैं मुक्त प्रकृतिका पारस्परिक संघात। अर्थात् बिखरे हुए परमाणुओंका फिरसे मिलकर द्व्यणुक त्रसरेणुक बनना आरम्भ होना। इसमें मानुषी सृष्टिके बनने तक करोड़ों वर्ष खर्च हो जाते हैं— इस हिसाबसे प्रमाणु द्व्यणुक, त्रसरेणुकसे लेकर सूर्यादिग्रह नक्षत्रादिके बनने तकके समयको स्वायंभुव मनु काल कहते हैं। स्वायम्भुव मनुके समयमें उत्पन्न प्रियव्रत, उत्तानपाद, ध्रुवादि, नक्षत्र प्रत्यक्ष आकाशमें आज भी देखे जाते हैं। क्योंकि वेदोंमें आकाशीय जगत्का भी वर्णन है और स्वायंभुव मनुके समयमें नक्षत्र देव संसार तैयार हुआ था। इससे स्वायंभुवमनुका सम्बन्ध नक्षत्र जगत्से अधिक है। दूसरे "स्वारोचिष" मनुके समयमें पृथ्वी तैयार हुई। और तीसरे "उत्तम" मनुके समयमें चन्द्रमादि पृथ्वीसे अलग हुए या भूगोल खगोल दो भागोंमें विभक्त हो गये। चतुर्थ 'तामस' मनुके समय समुद्रसे पृथ्वी खुश्की को प्राप्त हुई। पांचवें "रैवत" मनुके समय पृथ्वी घास फूस, बेल, वृक्षादिकी उत्पन्न करनेके योग्य बनी तथा वृक्ष वनस्पति पैदा हुए। छठे "चाक्षुष" मनुके समय पशु-पक्षी आदिकी उत्पत्ति हुई और सातवें "वैवस्वत" मनुके समयसे मानुषी सृष्टि हुई। इस ६ मनुओंकी सृष्टि के बनने तक पचास या सौ वर्ष नहीं बल्कि करोड़ों वर्ष लगे होंगे।

प्रो० "लिचाफ" साहिबने तो अपनी "सेक्रट डाक्टरन" पुस्तकमें लिखा है कि जमीनको दो हजार डिगरी गर्मी से दोसौ डिगरी गर्मी तक पहुंचनेमें ३५ करोड़ वर्षसे कम नहीं लग सकते। इसी प्रकार और भी कितने ही वैज्ञानिक अपने अनिश्चित अन्दाजे लगा रहे हैं, किन्तु १२ करोड़ वर्ष ६ मनुओं तक व्यतीत हुए हैं, यह वर्ष ब्राह्म दिन अर्थात् कल्पके वर्षोंमें से निकाल देने पर ४ अर्ब २० करोड़ वर्ष जो बाकी रहते हैं उनमें ५०० सौ से भाग करने पर ८४ लाखका हिसाब ठीक बैठता है, इससे यह हिसाब अधिक उपयुक्त भी है, क्योंकि वैदिक कालसे ही जो ८४ लाख जन्मका सिद्धान्त चला आ रहा है वह इसीको दृष्टिमें रखकर निश्चित किया गया है। अर्थात् पांच पांच सौ वर्षका एक एक नाटक होने पर ब्रह्माके एक दिनमें ८४ लाख बार यह नाटक हो जाता है। इसीको शास्त्रोंमें ८४ लाख जन्म धारण करना बताया गया है।

युग कहीं चले नहीं गये हैं सब इसी भूमण्डल पर घूम रहे हैं, जब वह भ्रमण चक्र घूमकर हमारी भूमि पर आएगा तब यह कलियुग समाप्त हो कर यहां सत्ययुग होगा और यह कलियुग अन्य भूमि पर चला जायगा। इसे इस प्रकार समझिएगा—

"अनन्ता वै लोकाः" अर्थात्—सूर्य, चन्द्र, तारे, सितारे, सियारे आदि अनेक ब्रह्माण्ड या लोक लोकान्तर हैं, किन्तु इस भूलोकमें हमारी ही पृथ्वीके समान अर्थात् सूर्यसे या चांदसे इतनी ही दूरी पर रहने वाली इतनी ही लम्बी चौड़ी नद नदी पर्वतादि युक्त "८६४०" भूमियें गणित द्वारा जानी जाती हैं। इन समस्त भूमियोंका एक गोलाकार चक्र बना हुआ है इसे ही भूगोल कह सकते हैं।

सत्ययुग, त्रेता, द्वापर कलि आदि चारों युग क्रमशः भ्रमण करते रहते हैं। यह नहीं समझें कि इन समस्त

भूमियों पर आजकल कलियुग ही है। प्रत्येक युगके हिस्सेमें कितनी २ भूमि हैं—इसको इस प्रकार समझियेगा कि प्रत्येक युगकी वर्ष संख्यामें ५०० से विभाजित करें तो वह उसकी भोग्य पृथिवियोंकी संख्या बन जायगी। जैसे—

सतयुगके वर्षों १७२८००० को पांच सौ से भाग दिया तो ३४५६ भूमियें सत्ययुगके हिस्सेमें आईं। इसी प्रकार त्रेतायुगके १२९६००० वर्षोंमें पांचसौका भाग दिया तब २५९२ त्रेतायुगकी भोग्य भूमियां बन गई। एवं—८६४००० द्वापरके वर्षोंको ५०० से विभाजित पर १७२८ पृथिवियें द्वापर की हुईं और कलियुगके ४३२००० वर्षोंमें पांचसौसे भाग करने पर ८६४ पृथिवयें कलियुगके हिस्सेमें आईं।

इससे यह तो निर्विवाद सिद्ध हो ही गया है कि—ब्रह्माके एक दिनमें प्रत्येक अमुक्त जीवको हर पांच पांच सौ वर्षके बाद क्रमशः उक्त भूमियों पर जन्म लेना पड़ता है। और अपने कर्मका उपभोग करनेके बाद विश्रामार्थ परलोकमें चला जाता है इस तरह प्रत्येक युगकी भूमियों का उपभोग होता रहता है।

हर समय ३४५६ भूमियों पर तो सतयुग रहता है। और २५९२ पर त्रेतायुग तथा १७२८ भूमियों पर द्वापर युग का पहरा है, एवं ८६४ पृथिवियों पर कलियुग महाराज विराज रहे हैं।

इस समय पृथ्वी नम्बर १ से लेकर ३४५६ तक पर सत्ययुग है और नम्बर ३४५७ से ६०४८ तक पर त्रैतायुग तथा ६०४९ से ७७७६ तक पर द्वापर युग और ७७७७ से ८६४० तक पर कलियुग है। यह काल-चक्र सर्वथा उलटी चालसे चलता रहता है। पांच २ सौ वर्षमें एक २ पृथ्वीको छोड़ कर दूसरी पर अधिकार जमा लेता है। इस बातको वैज्ञानिक भी मानते हैं और आकाशस्थ तारे सितारे सियारे भी इसी उल्टी गतिसे भ्रमण करते देखे जा सकते हैं।

जैसे ५०० वर्षमें सत्ययुग अपनी ३४५६ नम्बर वाली अन्तिम पृथ्वीको सर्वथा छोड़ देगा, क्योंकि उनपर आये हुए १७२८००० वर्ष हो चुकेंगे।

जब सतयुग उस पृथ्वीको छोड़ेगा, उसी समय उस पर त्रेतायुग अपने अग्र भागसे प्रवेश कर लेगा। जो कि तेत्रा युगका अग्र भाग आजकल ३४५७ नम्बरकी पृथ्वी पर है। जब त्रेताका अग्र भाग ३४५६ नम्बरकी पृथ्वी पर आएगा तो उसके बदले त्रेता अपनी अन्तकी ६०४८ नम्बर वाली भूमिको अपना पूरा समय भोग चुकनेके कारण सर्वथा छोड़ देगा।

इस ६०४८ नम्बर की पृथ्वी पर द्वापरयुगके अग्र भागका प्रवेश हो जायगा। और द्वापर अपने अन्तकी ७७७६ नम्बर वाली पृथ्वीको छोड़ देगा। उस पर कलियुगके अग्र भागका प्रवेश हो जायगा। जो कि इस समय ७७७७ नम्बर वाली पृथ्वी पर है। और ८६४० नम्बरकी पृथ्वी पर इस समय अन्तिम भाग है। जिस समय ७७७६ नम्बरकी भूमि पर आरम्भ होगा, उस समय अपने अन्तकी पृथ्वी ८६४० नम्बर वालीको सर्वथा परित्याग कर देगा। तब उस समय सतयुग इस पृथ्व पर अपने अग्र भागसे प्रवेश करेगा, जिस अग्र भागको इस समय नम्बर १ की पृथ्वी पर कहा जा सकता है।

इस प्रकार चारों युग ब्रह्माके प्रातः कालसे सायंकाल तक एक सहस्र चक्र लगा चुकेंगे। इसी कारण कलियुग के इस भूभागके जीव भी उसी २ भागकी पृथ्वी पर चले जायंगे। गणित द्वारा इस पृथ्वी पर ७७८७ नम्बर आता है। जब हम लोग इस पृथ्वी पर अपने कर्म भोग-चक्र को पूरा कर चुकेंगे तब इस संसार रूपी नाटक से छुट्टी पाकर परलोक में ५०० वर्षोंमें शेष रहे वर्षों तक आराम करेंगे। या उस लोकमें कर्मफल भोग करेंगे और पुनः ५०० वर्ष के समाप्त होने पर हम ७७८६ नम्बर की भूमि पर अपने जन्मको धारण कर पहुँच जायंगे। और उस पृथ्वी पर भी वैसा ही और उतना ही काम करेंगे जितना कि इस समय इस पृथ्वी पर कर चुके हैं या कर रहे हैं—न्यूनाधिक कुछ भी न कर सकेंगे।

इस प्रकार एक एक चौकड़ी भरमें पांच २ सौ वर्षमें क्रमशः एक २ पृथ्वी पर जन्म लेते हुए सब पृथिवियों पर घूम चुकेंगे। जब पांच सौ वर्षके बाद हमारा दूसरी पृथ्वी पर जन्म होगा तब यही समय या काल वहां भी रहेगा जैसा कि इस समय कलियुगकी ५१ वीं शताब्दी और विक्रमकी २१ वीं शताब्दी चल रही है। इसी प्रकार दूसरी पृथ्वी पर भी हमारे जन्म समय यही समय और शताब्दियां होंगी। इसीसे कहा जा सकता है जिस पृथ्वी पर इस समय त्रेतायुग होगा वहां वही रामावतार-दशरथ तथा रावण होंगे, और जहां द्वापरयुगका अन्त होगा वहां कृष्णजी कंस कौरव पाण्डव भी होंगे। यह लीला निरन्तर और सर्वथा चलती ही रहती है। इसीसे भगवान्‌ने गीता में कहा है :—

बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन !
तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परंतप !
गीता अ० ४।५

अर्थात् हे अर्जुन ! मेरे और तेरे बहुतसे अवतार और जन्म हो चुके हैं, परन्तु हे परंतप ! उन सबको तू नहीं जानता है और मैं जानता हूं। अर्थात प्रत्येक द्वापर युगकी भूमिपर मुझको और तुमको यही भूभार हरण करनेके लिये जाना पड़ता है मैं, ईश्वर हूं इसलिये यह सब घटना मेरे तो सर्वथा प्रत्यक्षकी तरह स्मरणमें रहती है, किन्तु तुम देवांश पुण्यात्मा होते हुए भी जीव कोटि में हो इससे उन सबको अगम्य एवं अदृश्य होनेके कारण नहीं जानते हो।

=

"मानस पर विचार"

[ले०—श्री पं० चिमनलाल शर्मा ज्योतिषी, गणितमार्तण्ड]

मैंने आश्विन मास संवत् २००६ के 'श्रीस्वाध्याया' पत्रके अङ्कमें 'मानस पर विचार' नामक लेख देखा, उस पर कुछ लिखनेकी इच्छा हुई क्योंकि लेखकने उस पर विचार मांगे हैं। अतएव लेख लिखा जाता है। लेख का सार यह है कि कन्यादानके समय दाताकी पत्नी पतिके दक्षिणांग होनी चाहिए अथवा वामांगमें। पं० नन्दकुमार जीने तुलसी रामायणकी चौपाई—"जनक वाम दिशि सोह सुनयना। हिमगिरि संग बनी जनु मयना।" का अर्थ करते हुए वामांग कहा तो वहां ही एक पंडितजीने कहा कि दक्षिणांग होनी चाहिए। इस पर पं० नन्दकुमार जीने अपने लेखमें मानस प्रेमियोंसे अनुरोध किया है कि इस पर विचार करें। दक्षिणांगके प्रमाण लिखे जाते हैं जो कि 'श्रीस्वाध्याय' अङ्क आश्विन संवत् २००६ में प्रकाशित हो चुके हैं। 'दाता स्वदक्षिणे पत्न्या सह वरदक्षिणपार्श्वभागे शुभासने उदङ् मुख उपविश्य आचम्य प्राणानायम्य देशकाल कीर्तनान्तेऽग्रिम-संकल्पं कुर्यात्' ॥

स्मृतिसंग्रहे—"व्रतबन्धे विवाहे च चतुर्थी सहभोजने। व्रते दाने मखे श्राद्धे पत्नी तिष्ठति दक्षिणे" ॥१॥ सर्वेषु धर्म-कार्येषु पत्नी दक्षिणतः शुभा। अभिषेके विप्रपाद क्षालने चैव वामतः ॥

गदाधरः—'दाता वर-दक्षिणतः स्वदक्षिणदेशस्थपत्नी सहित उपविश्य'।

विश्वनाथः—'उदङ्मुखः प्रदःकन्याय आसने उपविशेत्। दक्षिणतः पत्नी तिष्ठेदिति ॥'

पत्नी दक्षिणांग हो या वामांग हो, इस पर विचार लिखनेसे पूर्व आपको एक बात दर्शाना चाहता हूं। जिसका सम्बन्ध कन्यादानसे है। दाताका मुख पूर्व दिशा में हो और वरका मुख पश्चिम दिशामें हो। यथा—तिष्ठेत्पूर्वमुखो दाता वरः प्रत्यङ् मुखो भवेत्। मधुपर्कार्चितायैनं तस्मै

दद्यात्सदक्षिणाम्" इति शृंगोक्तिः ॥ दाताका मुख पश्चिम दिशामें और वरको पूर्वाभिमुख माना है यथा—प्राङ् मुखायाभिरूपाय वराय शुचि सन्निधौ। दद्यात्प्रत्यङ् मुखः कन्या लग्ने लक्षणसंयुतः "इति बृहस्पतिरुक्तिः" ॥ कन्याका मुख पूर्वमें और वरका मुख पश्चिम दिशामें लिखा है यथा—"कन्या वरयमाणानामेष धर्मो विधीयते। प्रत्यङ् मुखा वरयन्ति प्राङ् मुखा प्रतिगृह्यते" इति आश्वलायनोक्ति ॥ दाताका मुख उत्तरको वरका मुख पूर्वको हो ऐसा भी लिखा है यथा—"सर्वत्र प्राङ् मुखो दाता ग्रहीता चाप्युदङ् मुखः। एष दानविधिः प्रोक्ता विवाहे तु विपर्ययः" इति व्यासोक्तिः ॥ पाठक देखें कि ऋषि वचनोंमें दाता और वर विषयक मुख करके बैठने में कितना मतभेद है! यदि हम एक श्लोकके प्रमाणसे कहें कि दाताका मुख पश्चिमादि दिशामें लिखा है उत्तर दिशामें नहीं तो जो प्रथा दाताकी धर्मशास्त्रानुसार उत्तर मुखकी चली आरही है उसका खंडन करना लाभदायक नहीं है, इसी तरह कन्यादानके समय दाताकी पत्नी विषयक भी मतभेद जानना। हमें वही मत मानना चाहिये जो कि हमारे पूर्वज मानते आये हैं। जहां पर पत्नीको कन्यादानमें दक्षिणांगमें माना है वहां पर कन्याका मुख पश्चिम दिशामें होना लिखा है और अमुकस्य प्रपौत्राय, पौत्राय, पुत्राय, अमुकस्यप्रपौत्रीं, पौत्रीं, पुत्रीं यह शब्द एक बार ही बोलकर कन्यादानका संकल्प लिखा है। परन्तु विवाहमें सर्वत्र उपरोक्त प्रपौत्रादि तीन बार ही उच्चारण किये जाते हैं और कन्याका मुख पूर्व दिशामें होता है, परन्तु गदाधर कन्याका मुख पश्चिमको और एक बार ही परदादे आदिका नामोच्चारण लिखता है, इसलिए गदाधरके वाक्यानुसार कन्यादानकी विधि दृष्टिगोचर कहीं भी नहीं आती और न आगेको दृष्टिगोचर होगी।

गदाधरः—"ततो मातुलादि कन्यानयनं करोति सा चागत्य प्रत्यङ् मुखी उपविशति" ॥ हरिहर भी कन्याका मुख पश्चिमको हो ऐसा लिखता है परन्तु परदादे (प्रपौत्राय) आदिके नामोंका बोलना तीन बार मानता है। यथा हरिहरः—"अथ कन्यापिता कुशजलाक्षतपाणिः उदङ् मुखोपविष्टः प्राङ्मुखोपविष्टायवराय प्रत्यङ्मुखो पविष्टां कन्याम्, अमुकगोत्राय......तुभ्यमहं संप्रददे" ॥ विश्वनाथका कन्यादान संकल्प हरिहर गदाधरसे भी पृथक् है और वह भी कन्याको पश्चिमाभिमुखी मानता है। यदि कन्याका मुख पश्चिममें न होवे ऐसा विश्वनाथका मत होता तो अपने भाष्यमें हरिहर और गदाधर मतका खण्डन करता, पर यहां पर मौन हैं इसलिये उक्त भाष्योंसे सहमत है, 'परमतम प्रतिषिद्धमनुमतम्' (न्याय)। विश्वनाथ, हरिहर गदाधरके बाद हुआ है सं० वि० १६६२में विश्वनाथने भाष्य किया है। जिस दाताने कन्याका मुख कन्यादानके समय पश्चिम दिशाको किया हो वह तो पत्नीको दक्षिणांगमें विराजमान करे ऐसा लेख है। यथा—

अथ कन्यादानविधिः—ततः प्राङ् मुखं वरं प्रत्यङ् मुखीं कन्यां कृत्वा दाता दक्षिणे सपत्नीक उपविश्य... कन्यामेवं दद्यादिति धर्मसिन्धौ। क्योंकि वरका मुख पूर्वमें होगा, दाताका उत्तरको, कन्याका मुख पश्चिमको हो तो वरके सन्मुख बैठेगी तब दाताकी पत्नीका मुख भी उत्तर को होगा तब वह कन्याके भली प्रकार समीप होगी जो कि कन्याकी हर प्रकारकी सहायता भी कर सकेगी, यदि कन्याका मुख पूर्व दिशाको हो और वर भी पूर्वाभिमुख बैठता है और दाताका उत्तरको मुख होता है तब पत्नी वामांगमें बैठी भली प्रकार कन्याके समीप होगी जोकि कन्याकी सहायता भी कर सकेगी। विवाह वेदीमें कन्याका मुख पश्चिम दिशाको हो ऐसा अभी तक नहीं देखा गया। जिस तरह दाता और वरके पूर्वादि दिशाओंको मुख करके बैठनेमें मतान्तर है वैसे ही कन्याका मुख पश्चिमको और दाताकी पत्नीके बैठनेमें मतभेद है। तुलसी रामायणकी "जनक वाम दिशि...यना" इस चौपाई पर पं० देवनारायण द्विवेदी, पं० ज्वालाप्रसाद पराशर, सूर्यदीन सुकुल, श्री हनुमान्प्रसाद पोद्दार, श्रीराम नरेश त्रिपाठी, श्री रामेश्वर भट्टादिने जो भाषाटीका की है वहां पर जनककी स्त्री सुनयना (सुधन्वा) को सीताके दान कालमें जनकके वामांगमें लिखा है। और ज्वालाप्रसाद मिश्रने दोनों अर्थ किये हैं बहुमत वामांगमें हैं। सीताकी माताका नाम "धन्या" है। सुनयना विशेषण है। यथा—

"धन्या जनकपत्नी च सीता-माता पतिव्रता

अयोनिसम्भवा सीता धन्या चायोनिसंभवा" इति ब्रह्म वैवर्त्ते ॥ प्राचीन हस्त लिखितादि विवाहपद्धतियोंमें जो सप्तपदीमें नित्यानुरागिणी व्याख्या, मार्जनी व्याख्या, सरला टीकादिमें प्रतिज्ञायें लिखी हैं वह भी वामका समर्थन करती है। यथा-"होमे यज्ञे विवाहे च कन्यादाने मखे व्रते। शय्यागजाश्वगोदाने सर्वेषु शुभकर्मसु ॥ अंचल-ग्रंथिमादाय भवेद्वामांग संस्थिता—॥ होमे यज्ञे विवाहे च कन्यादाने व्रते मखे। अंचल-ग्रंथिमादाय पत्नी वामे मतो बुधैः" ॥ "तीर्थं व्रतोद्यापन यज्ञदानं मया सह त्वं यदि कर्म कुर्याः। वामांगमायामि तदा त्वदीयं जगाद वाक्यं प्रथमं कुमारी" ॥ "वामभागेस्थितिः प्रोक्ता भार्याया धर्मकर्मसु। पत्नी वामे सदा प्रोक्ता—॥ इति प्रभृति ॥ "यज्ञे होमे च दानादौ भवेयं तव वामतः। यत्र त्वं तत्र तिष्ठामि पदे षष्ठेऽब्रवीद्वरम्" इति संस्कारमार्तण्डे। "शान्तिकेषु च सर्वेषु प्रतिष्ठोद्यापनादिषु। वामे तूपविशेत्पत्नी व्याघ्रस्य वचनं तथा" इति विवाहपद्धतिप्रभायांम् ॥ लल्लाचार्यकृत रत्नकोशमें भारद्वाज और कश्यप मुनिके कैसे स्पष्ट प्रमाण हैं दाताकी पत्नी कन्यादानमें वामांग होनी चाहिये। यथा—

"तिष्ठेदुदङ्मुखो दाता कन्या पूर्वमुखी भवेत्। वामाङ्गे स्थिता जाया सुतां दद्यात् सदक्षिणाम्" ॥ "दाता उदङ्मुखो भूत्वा कन्या प्राङ्मुखी भवेत्। वाम भागे स्थिता पत्नी कन्यादानं करोति सः ॥ मानवगृह्यसूत्रकी टीकामें स्वर्गीय पं० भीमसेन इटावा निवासीने स्पष्ट लिखा है कि कन्यादानके समय दाताकी पत्नीका आसन दातासे पश्चिम दिशामें हो। दाताका मुख उत्तर होगा तब पश्चिम दिशा वामांग ही होती है। भारतके विभाजनसे पूर्व मानव गृह्यसूत्र मेरे पास था अब हम स्थानको त्याग कर पूर्वी पंजाबमें रहते हैं यहां पर मुझे मानवगृह्यसूत्र नहीं मिल सका इसलिए पूर्ण प्रमाण नहीं लिख सका भावार्थ लिख दिया है। [मानस गृह्यसूत्रका मूलवचन इस प्रकार है—'पश्चाद् अग्नेः चत्वारि आसनानि उप कल्पयीत तेषु उपविशन्ति पुरस्तात् प्रत्यङ्(पश्चिम) मुखो दाता, पश्चात् प्राङ्(पूर्व) मुखः प्रतिग्रहीता (वरः), दातुरुत्तरतः प्रत्यंग (पश्चिम) मुखी कन्या, दक्षिणत उदंग उत्तर मुखो मन्त्रकारः' [१।८।१-२] यहां पर दाताको पश्चिमाभिमुख, वरकोपूर्वाभिमुख, दातासे उत्तर कन्याको पश्चिमाभिमुख, दातासे दक्षिण आचार्यको उत्तराभिमुख होना बताता है—केवल यही चार आसन बताये गये हैं

—सम्पादक]

विवाहपद्धतिप्रभामें तो वेद-वचनसे हीपत्नीको वामाङ्ग माना है। यथा—

"उत्तरत आयतना हि स्त्रीति श्रुतिः" ॥ सप्तपदी विधिमें जो प्रथम प्रतिज्ञा वामाङ्गकी की हुई हैं उस प्रतिज्ञाका खंडन करना ही दोष है और उसकी रक्षा करना ही धर्मरक्षा है। "सप्तपदीविधिविधानावसरे यया खलु पुरा प्रतिज्ञातं वामांगस्थितिविषये, सा कथं नाम साम्प्रतं स्वप्रतिज्ञाभंग कुर्यात्, प्रतिज्ञाभंगे च महान् दोषः, तद्रक्षणे हि धर्मरक्षा इति सुस्पष्टं किल मतिमतां सताम्। भार्यायाश्च वामभागस्थितावपि समुक्तानि बहूनि प्रमाणानि। वामभाग स्थिता च दातुः पत्नी साहाय्यमपि कर्तुं शक्नोति पाणिग्रहणविधिविधानसमये।

दक्षिणाङ्ग पत्नी बैठानेके वास्ते कन्याका मुख पश्चिम दिशामें होना चाहिये ऐसे प्रमाण हरिहर, गदाधर और धर्मसिन्धुके प्रथम लिखे जा चुके हैं। जो दाता कन्याका मुख पश्चिमको करके कन्यादान करे वहां तो दक्षिणांग पत्नी होनेमें कुछ सार है। परन्तु कन्याका मुख पूर्व दिशाको ही तब दाता दान करे और पत्नी दक्षिणांग हो तो यह बात अयुक्त है। तुलसी रामायण की चौपाई "जनक वामदिशि—मयना" पर टीका की है उसमें पचानवें [९५] प्रतिशत विद्वानोंने जनकके वामांगमें सीता की माता कन्यादान समयमें लिखी है वह ठीक है। मुनि वचनोंमें दातादि मुखविषयक परस्पर भिन्नता होने पर देशाचारको ही मुख्य माना गया है ऐसे ही दाताकी पत्नी विषयक भी जानना। अतएव उपरोक्त प्रमाणोंसे ज्ञात होता है कि कन्यादान समयमें दाताकी पत्नी दाताके वामांग होनी चाहिये, प्रथा भी यही है। दो चार प्रामाणिक ग्रन्थोंके प्रमाण वामांगविषयक अन्य भी लिखे जा सकते हैं। परन्तु लेखवृद्धि के कारण और भारत-विभाजन के सम्बन्ध से पुस्तकोंका अभाव होनेके कारण यहां ही 'इति' की जाती है। विद्वानोंको इस पर स्थिर रहना चाहिये। अलमतिविस्तरेण ॥

स्वातन्त्र्य

[लेखकः—श्री प्रो० बलजिन्नाथ पण्डित शास्त्री M. A., M. O. L.]

उपोद्घात

स्वातन्त्र्य सभी चाहते हैं। स्वातन्त्र्यके लिए संसारमें सदैव संघर्ष चले आये हैं। मनुष्य जीवन ही स्वातन्त्र्य संघर्ष है। परन्तु पूर्ण स्वातन्त्र्यके वास्तविक स्वरूपको बहुत थोड़े लोग समझते हैं। वस्तुतः मनुष्य क्या सभी प्राणियोंकी अन्तरात्मा ही स्वातन्त्र्यमय है। स्वातन्त्र्य सभी प्राणियोंका अपना स्वभाव है। केवल प्राणियोंका ही नहीं, समस्त विश्वका स्वभाव ही स्वातन्त्र्य है। परन्तु स्वयं स्वातन्त्र्य स्वरूप होते हुए भी हम अपने ही स्वातन्त्र्यको बाहर ढूंढ रहे हैं। यही बड़ा वैचित्र्य है। ।इसीको संसार कहते हैं। क्योंकि वैचित्र्य ही संसार है। इस वैचित्र्यका जो मूल आधार है, जिसमें यह वैचित्र्य बीज रूपमें रहता है, जिससे इस वैचित्र्यका विकास होता है। और अन्तमें जिसमें ही यह वैचित्र्य लीन हो जाता है। वह परमेश्वर नामक आत्मतत्व ही पूर्ण स्वातन्त्र्यमय है। इसीलिए शिव सूत्रोंमें आत्माका लक्षण यह कहा है—

"चैतन्यमात्मा" (शिवसूत्र १-१

चैतन्यका अर्थ पूर्ण स्वातन्त्र्य है। पूर्ण स्वातन्त्र्यकी ही महिमासे आपेक्षिक पारतन्त्र्य और आपेक्षिक स्वातन्त्र्य रूप इस जगत्का विकास होता है, इसलिए इस जगत्में स्वातन्त्र्य अनेक रूपोंमें प्रकट होता है। पूर्ण स्वातन्त्र्य ही संसारका स्वभावभूत मूल आधार है। जैसे कटक कुण्डल आदि भूषणोंका मूल आधारभूत स्वर्ण उनका स्वभाव है। ज्ञाता ज्ञान और ज्ञेय यह तीनों ही स्वातन्त्र्यके कल्पित रूप हैं, इसी तरह प्रमाता प्रमेय और प्रमाण भी उसीका विलासमात्र है। इस कारण इस मूल आधार स्वातन्त्र्यका वर्णन निरूपण या व्याख्यान आदि नहीं किया जा सकता। क्योंकि स्वातन्त्र्य इन सबके ऊपरकी वस्तु है। स्वातन्त्र्य इनका आधार है। यह स्वातन्त्र्यके आधार नहीं, फिर भी यदि स्वातन्त्र्य का निरूपण किया जा रहा है तो सारा कल्पनामात्र ही है। हम कल्पित स्वातन्त्र्य और कल्पित पारतन्त्र्यका वर्णन करते हैं, उनके ज्ञानसे हम समझ सकते हैं कि इनसे अतीत कोई तत्व वास्तविक स्वातन्त्र्य होगा, फिर अभ्यास द्वारा हमें पूर्ण स्वातन्त्र्यका साक्षात्कार स्वयं ही हो सकता है।

शाब्दी कल्पनासे हम स्वातन्त्र्यके दो भेद ठहराते हैं। व्यावहारिक स्वातन्त्र्य और पारमार्थिक स्वातन्त्र्य। दोनोंको समझनेके लिए हमें पारतन्त्र्यको समझना पड़ता है। पारतन्त्र्यका लक्षण है परमुखापेक्षिता अर्थात् दूसरेके मुखकी ओर देखना। उदाहरणके तौर पर हमें भूख है। तो इसको शान्त करने के लिए हमें अन्नका सहारा लेना पड़ता है। अर्थात् हम अन्नकी ओर देखते हैं कि यह हमारी अशान्तिको दूर करेगा। भारतवर्षमें इस समय अन्नकी न्यूनता है। इसलिए भारतवर्षको दूसरे देशोंकी ओर देखना पड़ता है। यह परमुख प्रेक्षिता ही पारतन्त्र्य है। दूसरे प्रकारसे भी लोग परमुख प्रेक्षी बनते हैं। एक दास है तो अपने स्वामीके मुखकी ओर देखता है कि वह क्या आज्ञा करता है। इस प्रकारका पारतन्त्र्य तो घोर पारतन्त्र्य है। इसीको मनुजीने श्ववृत्ति अर्थात् कुत्तेकी वृत्ति कहा है। तो परमुखप्रेक्षिताका अभाव ही स्वातन्त्र्य है। जिस योगी ने भूख प्यासको जीत लिया हो उसे अन्न-पानीकी ओर देखना नहीं पड़ता। आशा है कि कुछ वर्षोंमें

हमारे देशमें इतना अन्न उत्पन्न होने लगेगा कि हमें पूर्व और पश्चिमकी ओर देखना नहीं पड़ेगा। हमने दासता की बेड़ियोंको तोड़ डाला, तो अब हमें विलायतकी पार्लियामेण्टके मुखकी ओर नहीं देखना पड़ता कि ये लोग क्या आज्ञा करते हैं। इस तरहसे हम अब स्वतन्त्र हैं। हमारा शरीर कभी स्वस्थ और कभी अस्वस्थ होता है। कभी क्षीण और कभी पुष्ट होता है। तो यह स्वस्थता और पुष्टता ही शारीरिक स्वातन्त्र्य और अस्वस्थता और क्षीणता ही शारीरिक पारतन्त्र्य है। क्योंकि इन अवस्थाओं में हम परमुखप्रेक्षी बन जाते हैं। भूख और प्यासकी पराधीनता हमें प्राणोंके सम्बन्ध से आती है। सुख, दुःख, काम-क्रोध आदिके आधीन हम बुद्धिके सम्बन्ध से हो जाते हैं। इस जीवदशामें हम अपने वास्तविक स्वभाव स्वातन्त्र्यको पहचान नहीं सकते। हम अनेक प्रकार की कामनाओं अर्थात इच्छाओंके अधीन हैं। हम इन इच्छाओंके मुखकी ओर देख रहे हैं, कि यह क्या आज्ञा करती है। यही हमारी मूल पराधीनता है। ज्यों ही इनकी आज्ञा मिल जाती है; त्यों ही हम उसे पूरा करनेका प्रयत्न करने लगते हैं, कोई इन इच्छाओं की आज्ञाको पूरी कर सकता है। उसमें थोड़ा बहुत स्वातन्त्र्य है। कोई बिचारा इतना परतन्त्र होता है कि इन्हें भी पूरा नहीं कर सकता। उसके प्रयत्नोंमें सहस्रों रुकावटें आ जाती हैं। इच्छायें उसे खूब नचाती हैं। परन्तु नाच-नाच कर भी वह उन्हें पूरा नहीं कर सकता है। इच्छापूर्तिकी वासना उसमें रहती है और वहीं रह कर भीतरसे ही जलाने लगती है। विवश होकर बेचारा दास वृत्ति भी कर लेता है या किसी प्रेमी मित्र या बन्धुके मुखकी ओर देखने लगता है। इस तरहसे घोर पराधीनताके नरकमें पड़ जाता है। इस प्रकारसे शरीर मन, बुद्धि आदिके सम्बन्ध से जो कामनाएं उत्पन्न हो जाती हैं। उनके अधीन होना और उनके इशारे पर चलना (नाचना) ही पारमार्थिक परतन्त्रता है।

[क्रमशः]

दो दीन

[श्री 'चन्द्र' पन्त]

गिड़गिड़ा कर मैं आत्मीय अब,
क्षुधानिधन माँग रहा भोजन।
जीवन मरणका अन्तिम प्रश्न,
सुन जीवन धन मम आराधन॥

आ बैठ सिर आंखों पर अतिथि,
क्या दें निश्चेष्ट तुम्हें खाना।
अपने ही खानेको जगमें,
जब कभी कभी मिलता दाना॥

हा! तृषावन्त छटपटा रही,
ये व्याकुल प्राणोंकी रानी।
आकुल जीवनकी रटना ये,
ला पिला मुझे शीतल पानी॥

पात्र रहित सूनी कुटियामें,
मृग तृष्णा गई कभी जानी?।
हो गये नेत्र भी शुष्क स्रोत से,
अब नहीं रहा जिनमें पानी,॥

हैं एक रोगके दोनों रोगी,
है दोनोंका एक निदान।
आओ कर लें चल कर दोनों,
एक साथ ही प्राण-पयान॥

अच्छा आता हूं कह खड़ा हुआ,
शीघ्र ही चलने लगी उसास।
मिल कर आपसमें दोनों ने,
की शांत; दग्ध हृदय की प्यास॥

चलनेके उपरान्त कई दिन,
देखी घन-गोलक सी रेत।
राका निशीथमें समझ नीर,
वे घुर-घुर ही को गये लेट॥



श्रीविक्रमादित्य-पञ्चाशिका

[प्रणेता—म० म० पं० छज्जूरामजी शास्त्री विद्यासागरः]

विप्रवंशमें सूर्यरूप हुआ पुष्यमित्र पटनाका नाथ।
बौद्धधर्म इसने हटवा कर हिन्दु धर्मको किया सनाथ॥
पुष्यमित्रका स्वर्गारोहण आठ वर्ष पहले केवल है।
विक्रमाब्दसे रामकृष्ण भाण्डारकरादिकका निर्णय है॥
वायुपुराण कथनसे भी इस मतकी होती है पुष्टि।
पुरातत्वके सञ्चयनसे होती सबकी सदैव तुष्टि॥
पुष्यमित्रने भारतके सब देशों पर जय पाई।
अश्वमेध कर फिरसे हिन्दु संस्कृतिको जमवाई॥
पुष्यमित्रने अग्निमित्र था किया पूर्व ही विदिशानाथ।
पुष्यमित्रके मरने पर भी वही हुआ पटना का नाथ॥
वीरसेन था अग्निमित्रका भृत्य, पुत्र वसुमित्र प्रसिद्ध।
शूद्रक भी था अग्निमित्रका नाम चीर स्वामीसे सिद्ध॥
कथा अवन्तीमें दण्डीने देवमित्र शूद्रकसुत माना।
भृत्यवीरवर शूद्रकका वेताल-पचीसीमें भी माना॥
मालविकामें कालिदासने अग्निमित्र लिखा विदिशानाथ।
बाणभट्टने शूद्रकको भी माना है विदिशाका नाथ॥
गौडवहोंमें वाक्पतिने कवि अग्निमित्र बतलाया।
मृच्छकटिकमें शूद्रकने कवि चमत्कार दिखलाया॥
अग्निमित्रने बौद्धधर्मका पूर्ण ह्रास करवाया।
बौद्धोंने इसके देशों पर यवनाक्रमण कराया॥
अग्निमित्र इत्यपर-नाम शूद्रकने मालवगणके साथ।
मेनेन्दर पर जय पा करके उज्जयिनीको किया सनाथ॥
इसी विजयसे अग्निमित्र शूद्रकने कृत संवत् चलवाया।
अश्वमेध यज्ञादि द्वारा कलियुगको कृतयुग बनवाया॥
अग्निमित्र शूद्रकने भी था धारण किया विरुद विक्रम।
कथा-सरित्सागरमें इसको माना है पटनाका विक्रम॥
शारङ्गधरने 'लिम्पतीव' यह मृच्छकटिकका एक वृत्त।
किया शार्ङ्गधर-पद्धतिमें श्रीविक्रमार्क नाम्नैवोद्धृत॥
दण्डि बाण अरु रामिलने शूद्रकका लिखा पराक्रम।
समुद्रगुप्तने शूद्रकको संवत् कारक माना विक्रम॥
श्रीसमुद्रने इसको माना ब्राह्मण जातिय विक्रम।
शस्त्रशास्त्रका अनुपमवेत्ता शक्र समान पराक्रम॥
मृच्छकटिकमें शतवर्षायुः इसने मानी अपनी।
बृहत्कथा वेतालपचीसी ग्रन्थों में भी मानी इतनी॥
बड़े बड़े आश्चर्य कर्म शूद्रकने कर दिखलाये।
अब तक भी पृथिवीतलमें न किसीसे जो बन पाये॥
नाटकवर्ती नाणकमुद्रा रुद्रदाम शूद्रकका काल।
द्वितीय शतको बतलानेमें होते नहीं प्रमाण विशाल॥
याज्ञवल्क्यसे कविने नाणक मुद्रा नाम लिया है।
अस्त व्यस्त होता शकार भाषण शिवराजारुद्र किया है॥
कह्लणने विक्रमशकारिसे माना है पहले शूद्रक।
बृहत्कथासे भी होता है सिद्ध यही निश्चय पूर्वक॥
उज्जयिनीका था शक-राजाके हाकिम चष्टनने जीता।
इस जयमें मथुरापति राजुलषोड़शने की थी सहायता॥
असली विक्रम हर्षदेव विक्रम था कृत सौ चौंतिस बीते।
इसने पञ्चाणवशकसेना चष्टन अरु राजुल भी जीते॥
इन्हीं शकों पर जय पाकर विक्रमने शक संवत् चलवाया।
इसको जीता शालिवाहने शालिवाह संवत् कहलाया॥
द्वात्रिंशत्पुत्तलिकामें है शालिवाह विक्रमका युद्ध।
गाथा सप्तशती इसने ही लिखवाई है अति प्रसिद्ध॥
गाथा सप्तशतीमें हर्ष विक्रमके दानका है वर्णन।
प्रवरसेनकी गाथाओंका सप्तशतीमें है उद्धरण॥
मातृगुप्तके बाद हुआ है प्रवरसेन कश्मीर महीन्द्र।
इसने उज्जयिनी ले रिपुसे शिलादित्य किया उज्जयिनीन्द्र॥
रामिलसोमिल मातृगुप्त अरु मेण्ठ हर्षके कवि थे।
रामिल के गुरु शंकरेन्द्र स्वामी प्रेमी इसके थे॥
मातृगुप्त का ही था एक कालिदास अति सुन्दर नाम।
इसने अपने ग्रन्थोंमें भी यही दिया है अपना नाम॥

तीनों नाटक कुन्तलेश (शालिवाहन) दौत्य निर्माता।
प्रवरसेनके भी है सेतुबन्धकाव्यका यही विधाता॥
कवितासे हो सुप्रसन्न कश्मीर नरेश बनाया।
मातृगुप्तको हर्षदेवने, रामिलने बतलाया॥
श्रीसमुद्रगुप्तने अपने कृष्णचरितमें भी यह।
सभी वृत्त लिख किया हमारा सभी दूर सन्देह॥
विषमशील भी एक नाम था इसी हर्ष विक्रमका।
कथा सरित्सागरमें वर्णन दिया सभी है जिसका॥
मंजरिमें अरु सागरमें इस विषमशील विक्रमका।
पिता महेन्द्रादित्य लिखा है जो था स्कन्द विक्रमका॥
बृहत्कथामें यह सम्मिश्रण कभी नहीं हो सकता।
पूर्ववर्ति लेखक अग्रिमका नाम नहीं दे सकता॥
इस विक्रमका सिंहासन बतलाता है पुत्तलिकावर।
पर दुखभंजनमें विक्रमसम हुआ न होगा पृथ्वीपर॥
चन्द्रगुप्तविक्रम तृतीय था चष्टन शाखाका नाशक।
हिन्दु धर्मका परम प्रेमी एकच्छत्र भारत शासक॥
पर वह पटनाका विक्रम था नहीं पुरी उज्जयिनीनाथ।
ह्यूनसांग कथनानुसार था स्कन्दगुप्त भी पटनानाथ॥
उज्जयिनीपति यशोधर्म विक्रम था विद्वानोंका प्रेमी।
कालिदास आदि नवरत्न इसके थे पृथिवीमें नामी॥
शीलादित्य अरु भोजराज थे नाम इसी के इसका काल।
छःसौ छयासठ संवत् तक निश्चित है छोड़कर संशय जाल॥
तीन भोज राजोंमें यह था प्रथम टाडने किया ग्रहण।
कालिदासके मित्र निचुलने किया इसीका था आश्रयण॥
चिरंजीवि भर्तृहरि था इस विक्रमका ज्येष्ठ भ्राता।
भट्टिकाव्य शतकत्रय आदिक ग्रन्थरत्न निर्माता॥
श्रीधरसेन पिता था इनका गोपीचन्द्र भगिनीका पुत्र।
गोपीचन्द्र अरु भर्तृहरि माने जाते हैं दोनों मित्र॥

यशोधर्मने वलभीसे आ दशपुर केन्द्र बनाया।
हूणराज मेहरकुल जीता कीर्तिस्तम्भ गड़वाया॥
मालवभूको यशोधर्मने करके म्लेच्छोंसे निर्मुक्त।
उज्जयिनीको राजधानि कर विक्रम पदवी की संयुक्त॥
दशपुरवासी कालिदासने मालवेन्द्र पदसे निर्देश।
ज्योतिर्विदाभरणमें इसका किया नहीं संशयका लेश॥
वराहमिहिर मतको स्वीकृतकर ज्योतिर्विदाभरणका काल।
कालिदासने स्वयं लिखा है छःसौ अरु सैंतिसवां साल॥
छःसौ और चवालिस माना बराहमिहिर निर्वाण समय।
आमराजने खण्डखाद्यमें किया सुधाकरने निर्णय॥
पत्रकौमुदीमें वररुचिने और सुबन्धुने भी।
किया इसी विक्रमका वर्णन टीकामें हरिने भी॥
इत्सिंगने भर्तृहरि मृत्यु लिखी सात सौ आठ समय।
वाक्य पदीय आदिका कर्ता हरिस्वामी था वह निश्चय॥
नागस्वामिसुत इस हरिसे था भिन्न भर्तृहरि व्यक्ति।
भागवृत्तिमें हरिने खण्डित किया भट्टि यथा शक्ति॥
छःसौ छानवे शतपथ टीका समय लिखा हरिने प्रत्यक्ष।
यही रहा होगा पहले इस विक्रमार्कका धर्माध्यक्ष॥
ज्योतिर्विदाभरणका हरि था यही जो संशय था अब तक।
धन्वन्तरि हरिश्चन्द्र वैद्य था सिद्धसेन था क्षपणक॥
कृत संवत्का विक्रमाब्दसे इस विक्रमने किया प्रचार।
कृतमालव संवत्से जिसका होता था पहले व्यवहार॥
यशोधर्मका मालवेन्द्र होना तो है सबको ही ज्ञात।
द्वात्रिंशत्पुत्तलिकाका भी यही भोज है निश्चित बात॥
ह्यूनसांगने शिलादित्यको मालवेन्द्र कहा बारंबार।
शत्रुंजयमें धनसूरीने शिलादित्य कहा भोज पुकार॥
सूर्यवंश्य वलभी राजा थे शिवके महान् उपासक।
शतकत्रयकर्त्ताने निजको लिखा शंकरोपासक॥



स्वरोदय साधन विज्ञान

[लेखकः—श्री पं० मोहनलालजी शर्मा ज्योतिषी]

(हेमन्ताङ्कसे आगे)

इससे पहले पाठकोंको पंचतत्त्व ज्ञान करनेकी विधियें बतला दी गई हैं, अब पंचतत्त्वोंकी धारण करनेकी विधियें बतलाई जावेंगी। किन्तु अब यह जान लेना आवश्यक है कि कौन-कौन इस परमोपयोगि-साधन के अधिकारी है, और कौन नहीं। उपनिषद् कहते हैं—

नाविरतो दुश्चरितान्नाशान्तो नासमाहितः।
नाशान्तमानसो वापि प्रज्ञाने नैनमाप्नुयात्।
(कठोपनिषद्)

अर्थात् जो व्यक्ति दुराचारसे दूर नहीं रहता, जो अशांत है, जिसका मन चंचल है, अशान्त चित्त है वह इस विज्ञानको ज्ञानपूर्वक प्राप्त नहीं कर सकता। भगवान् श्रीकृष्ण भी गीता में कहते हैं।

नात्यश्नतस्तु योगोऽस्ति नचैकान्तमनश्नतः।
न चातिस्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैव चार्जुन॥

अर्थात् जो अधिक खाने वाला है, अथवा जो बिल्कुल नहीं खाता, तथा जो बहुत सोता है या जो जागता ही रहता है उससे योग नहीं हो सकता। तात्पर्य यह है कि जिसका जीवन असंयत और अनियमित होता है, वह योग साधनमें विशेष उन्नति नहीं कर सकता और वह योगका अनधिकारी है। जिन्हें इस साधना पर चलना हो उन्हें अपने जीवनको नियमित बनाना चाहिए। जो नियमसे काम करता है उसे ही सर्वत्र सिद्धि प्राप्त होती है। क्योंकि भगवान् ने श्रीमद्भगवद् गीतामें लिखा है:—

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्त स्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा॥

जिसका आहार विहार नियमित होगा और जिसकी कर्मोंमें नियमित प्रवृत्ति होगी तथा जो नियमानुसार सोता जागता है उसको ही दुःखहारी योग धन की प्राप्ति हो सकती है। स्वर साधन भी योगका मुख्य अंग है। तथा पंचतत्व ज्ञान बिना योग-साधन हो नहीं सकता। क्योंकि इसके अटल सिद्धांत हैं। कहा भी है —

धरणी टरे गिरवर टरे ध्रुव टरे सुन मीत।
वचन स्वरोदय ना टरे मुरली सुत रणजीत॥

अतः जो साधक इसे जानना चाहे वह नियमानुसार शाँत चित्त होकर ईश्वर चिंतवन करता हुआ कार्य करता रहे। यदि श्रेष्ठ गुरु की शरण मिल जाय तब तो कहना ही क्या? चरणदास जी कहते हैं—

तप के बरस हजार हों, गुरुसंगति घड़ी एक।
तो भी सरवरि ना करे सुकदेव किया विवेक॥

बिन सद्गुरु भेद न पावा।
धरतीसे आकाश लों धावा॥

इससे ज्ञात होता है कि बिना गुरुके वास्तविक ज्ञान नहीं हो सकता। यदि सद्गुरु न मिले तो योग निर्माता भगवान् श्री शंकरकी शरण लेकर अहर्निश ज्ञान ध्यान करना चाहिए। क्योंकि—

आदि नाथो महादेवि! महाकालो हि यः स्मृतः।
गुरुः स एव देवेशि! सर्वयोगेषु नापरः॥

अब आपको पंच महा भूतोंकी धारणा विधि बतलाई जाती है।

धरती और आकाश है और तीसरा पौन।
पानी पावक पांच ये करत श्वास में गौन॥

प्रथम नम्बर है पृथ्वी तत्व का— "पादादि जानु

पर्यन्तं पृथ्वीस्थानम्" अर्थात् इस मनुष्य शरीरमें पैरसे लेकर जानु पर्यन्त पृथ्वी मण्डल है, इसका रंग पीला है चतुष्कोण आकृति है। इसके अधिष्ठातृ देवता ब्रह्मा हैं। 'लं' बीज है। प्राणोंको स्थिर करके पांच घटी (दो घण्टे) पर्यन्त उपयुक्त धारणा करनी चाहिए। इस धारणाके करते करते ऐसा अनुभव होने लगता है कि मैं एक शरीर में आबद्ध अथवा शरीर नहीं हूँ। मैं सम्पूर्ण पृथ्वी हूँ, ये बड़े बड़े नदी नद मेरे शरीरके नस नाड़ियां हैं, तथा समस्त पार्थिव शरीर मेरे अपने ही अंग हैं। धारणा करते समय अपने आप पृथ्वी तत्व चलता है और उत्तम रूप से पृथ्वी तत्वका ज्ञान हो जाता है। इसके अतिरिक्त स्थिरता आ जाती है, चित्त स्वयं शान्त बन जाता है। इस साधना के कर लेने पर मनुष्य समस्त पृथ्वी पर विजय प्राप्त कर लेनेमें समर्थ हो जाता है। मृत्यु पर विजय प्राप्तकर लेता है, और किसी प्रकारका रोग नहीं हो सकता।

जल तत्वका धारण इस प्रकार किया जाता है। "जान्वादि नाभिपर्यन्तं आपस्थानं" अर्थात् जानुसे लेकर नाभि पर्यन्त जल स्थान है। कितने ही आचार्य पायु इन्द्रिय तक जल स्थान कहते हैं। किन्तु उपयुक्त स्थान ही ठीक अनुभव में आता है। जल स्थान श्वेत वर्ण है, इसका बीज 'वं' है, यह अमृतमय है। इसके अधिष्ठातृ देवता भी चतुर्भुज पीताम्बरधारी श्वेत वर्ण; मंद मंद मुस्कराते हुए परमकोमल भगवान् नारायण हैं। इस जल मंडल का चिन्तवन करके प्राणोंके साथ हृदय में ले आवे और पांच घटि (दो घण्टे) पर्यन्त चिंतन करे। चिन्तवन करनेसे ऐसा अनुभव होने लगता है कि मैं जल तत्व हूँ। पृथ्वीकी कण-कणकी स्निग्धतामें हूं। विष तथा अमृत मेरा ही स्वरूप है। मैं ही नारायणका निवास स्थान हूं। यह धारणा सिद्ध हो जाने पर समस्त ताप मिट जाते हैं। अन्तःकरण शुद्ध हो जाता है और जलमें अबाध गति बन जाती है। ऐसा अनुभवी सन्तोंने कहा है।

अग्नितत्वकी धारणा इस प्रकार की होती है। पायु इन्द्रिय (नाभि से लेकर हृदय पर्यन्त) अग्निस्थान है, रक्त वर्ण, त्रिकोणाकृति, अधिष्ठातृ देवता रुद्र और 'रं' बीज है। इसका चिन्तवन करते हुए प्राणों को स्थित करे तब ये धारणा सिद्ध हो जाती है और अनुभव होने लगता है कि सूर्य चन्द्रमा, बिजली, रत्नादि की चमक दमक में ही हूं तथा सबके उदर में रहकर मैं ही शरीर का पोषण करता हूं। नेत्रोंमें प्रकट होकर मैं ही सबको देखता हूं। पांच घटी तक ध्यान धारणा कर लेने पर अग्नि तत्व सिद्ध हो जाता है फिर काल चक्रका भय नहीं रहता। अग्निका भय नहीं रहता। इस धारणामें रुद्र भगवान्का स्वरूप सूर्य समान तेज, तीन नेत्र, सम्पूर्ण शरीर में भस्म लगाये हुए होना चाहिए और प्रसन्नता से वर देने को उत्सुक मूर्ति का ध्यान होना चाहिए।

शेष विवरण के लिए आगामी अङ्क की प्रतीक्षा करें। (क्रमशः)

चन्द्र-मंगल योग

[ले०—श्री 'दिव्य-दृष्टि']

यद्यपि शुक्र मंगल लग्नमें अशुभ हैं तथापि कुम्भ लग्नके लिये यह अशुभ फल इतना दृष्टिमें नहीं आवेगा। कारण कुम्भ लग्नजात व्यक्तियोंके लिए शुक्र नवमाधिपति और मंगल दशमाधिपति है। नवम और दशम स्थानके अधिपति की युतिसे शुभ राजयोग होता है। इसी कारण कुम्भ लग्न जात व्यक्तियोंके लिये शुक्र और मंगलका योग फल अशुभ होते हुए भी शुभाशुभ मिश्र फल देवेंगे और जहां शुभ है वहां विशेष शुभ फल देवेंगे। इसी पद्धतिसे प्रत्येक लग्नके लिये ग्रहका भावाधिपतिका भी विचार करके युति (योग) फलका न्यूनाधिक्य न्यायसे ग्रहण करना ठीक है। जहां युति कारक उभय ग्रह ६।८।१२ घरके अधिपत्वमें आ जाय वहां अशुभ फलकी वृद्धि और शुभ फल का ह्रास होना चाहिये। यहां चन्द्र मंगल युति (योग) का फल पाठकों को बतायेंगे।

चन्द्रः—प्रकृति शांत, आंखें सुन्दर, वाणी मधुर, गति चंचल, वर्ण गौर, बाल पतले और बारीक, कभी-कभी कुंचित, शरीर नाजुक, गुण सात्विक, देखनेमें तरुण, बड़ी आयु वाली स्त्रियों से मित्रता और समागम, सफेद वस्तु और सफेद वस्त्रोंमें इच्छा, बुद्धिमान्, विवेकी, शरीर गोल, प्रकृति कफ वातात्मक है। चन्द्रमाके अंश या वर्गजात व्यक्ति प्रवासमें उन्नतिशील होते हैं।

मन, बुद्धि, राजकृपा, मातृसुख, संपत्ति इत्यादिका विचार चन्द्रके शुभाशुभ से किया जाता है। पाण्डुरोग, श्लेष्मा जनित रोग, पागलपना, स्त्री सम्बन्धि रोग, इत्यादि चन्द्रकी कारकतामें हैं।

पत्रिकामें चन्द्र शुभ भावका अधिपति हो या शुभ स्थानमें रहे तो जातक लौकिक व्यवहारमें विशेष कुशल रहता है। विभिन्न शास्त्रों का ज्ञान समाज या धर्म शोधक, अनिश्चित गवेषणा (Research) आदि कर्मोंमें तत्पर रहते हैं। ये लोग एक स्थानमें स्थायी नहीं रहा करते। स्थान, घर या देश अवश्य बदलते हैं। परिवर्तनमें इन लोगोंको सुख अधिक मिलता है। भूत या भविष्यके ऊपर इतना विचार या दृष्टि नहीं रखते अतः चालू समयके ऊपर इनका ख्याल अधिक प्रमाणमें रहत है। चन्द्र अशुभ होनेसे जातक आलस्य युक्त, शौकीन खर्चीला, असावधान, और कभी कभी व्यसनी भी रहते हैं। इनका जीवन विशेष असंतुष्ट रहता है।

युति—जिस मनुष्यके जन्मकालमें चन्द्रमा और मंगल एक राशिमें युक्त हों वह रक्त विकार से पीड़ाके कारण सदैव आतुर रहता है। मिट्टी, चमड़ा, तांबा, चांदी सोना इत्यादि धातु और चित्र शिल्पके व्यवसायमें धन कमाता है। लड़ाई झगड़ा, वाद विवादमें यश पाता है और शूर कहलाता है।

चन्द्र और मंगलके कारण स्त्रियोंका मासिक धर्म संगठित होता है। यदि स्त्रीकी पत्रिकामें चन्द्र मंगलका योग हो तो उन्हें अनियमित मासिक धर्मके कारण तथा रक्त विकारके कारण विशेष कष्ट मिलता है। यह योग यदि अशुभ भावमें अर्थात् ४।६।८।१२ में पड़ जाय तो स्त्रियोंके गर्भाशयमें विशेष पीड़ा और रोग रहता है।

चन्द्र और मंगल दोनों चंचल हैं इसलिए यह योग जात व्यक्ति विवाद या युद्धमें शीघ्रताके साथ विरोधी दलको आक्रान्त और पराजित करनेमें समर्थ होते हैं। चन्द्रमा शांत और मंगल शुभ होनेके कारण इस योग वाला व्यक्ति अपने पक्षको सम्भालते हुए अपने शौर्यका प्रकाश करते हैं। चन्द्र और मंगल प्रवासमें भाग्योदय

करनेका गुण है। इसी कारण इन दोनोंकी युतिसे जातक या तो परदेशमें रहने लगता है, नहीं तो ऐसे कर्मोंमें लिप्त रहता है, जिसमें उसको बहुत भ्रमण करना पड़ता है। दोनों मित्र होनेके कारण यह योग जात धनी न हों तो, निर्धन भी नहीं होते। (चन्द्र मंगलका योग प्रायः मनुष्यको धनवान् ही बनाता है शुभस्थान और अंशोंमें जितना अधिक सामीप्य होगा उतना ही मनुष्य विशेष धनी होता है। —सम्पादक)

विभिन्न लग्नसे चन्द्रका फल और चन्द्र मंगलके योगका फल नीचे दिया जाता है।

(१) चन्द्रः—चन्द्र यदि लग्नमें हो तो जातक धनी, गुणी उपार्जन करनेमें समर्थ, बलवान् और सुन्दर होता है। यदि वृश्चिक लग्न हो और लग्नमें पाप ग्रहोंका संयोग हो तो जातक जड़बुद्धि और दरिद्र होता है।

युतिः—लग्नमें मंगल और चन्द्रमा की युति होनेसे मनुष्य विषयी और लोभी होता है। उसका स्वभाव दुष्ट होता है, और वे सदा विवाद और तर्ककी इच्छा रखते हैं और धनहीन होते हैं।

(२) चन्द्रः—दूसरे स्थानमें चन्द्रमा हो तो मनुष्य त्यागशील, मतिज्ञ, नाना प्रकारके धनसे युक्त, चंचलमन, हृष्टचित्त, अति सुखी, कीर्तिशाली, सहिष्णु, प्रफुल्लमन, और रूपवान् होता है।

यदि क्षीण चन्द्रमा द्वितीय स्थानमें हो (अर्थात् कृष्णपक्षकी पंचमी से शुक्ल पक्षकी पंचमीके बीचमें यदि जन्म हुआ हो तो) जातक अपनी बात रखनेमें असमर्थ, धन हीन और अल्पबुद्धि वाला होता है।

युतिः—दूसरे स्थानमें चन्द्र और मंगलका योग हो तो परिवारमें अशांति, अपनी स्त्री या स्वामीसे मनोमालिन्य, दूसरोंका उपकार न मानने वाला, निष्ठुर बोलने वाला, कांतिहीन और पेटका रोगी होता है।

(३) चन्द्रः—यदि पाप ग्रहके घरमें (मेष, वृश्चिक मकर, कुम्भ, सिंह) तृतीय भावमें चन्द्र हो तो जातक बहुत बात करता है। वह मूर्ख होता है, भाइयों से उसका झगड़ा रहता है तथा उसके हाथसे भाइयोंको पर्याप्त हानि पहुंचती है। कभी कभी तो भाइयोंके प्राणोंका भी भय रहता है।

तीसरा घर यदि शुभ ग्रहका हो (वृषभ, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, धनुः, मीन) तो जातक बहुत सद्‌गुणोंसे युक्त रहता है और सुखी होता है। काव्य और शास्त्रमें उनकी श्रद्धा रहती है और वे उन बातोंके जानकार भी रहते हैं।

युति—तीसरे घर में यदि चन्द्र और मंगल की युति हो तो जातक विनयी होता है। खेती आदि कामों में दक्ष रहते हैं। अथवा उनको दूसरोंसे जमीन जायदाद का कुछ लाभ होता है। यदि दशम भावके बलाबलसे इन्हें कृषि विभागमें नौकरी मिल गई तो वे इस विभाग में बहुत उन्नति कर सकते हैं। इस योगजात व्यक्तिको चित्त-वृत्तिके अनुसार स्त्री लाभ होता है। अर्थकी तुलनामें इन्हें सम्मान अधिक मिलता है।

(४) चतुर्थ स्थानमें चन्द्रमा बहुत मित्र देते हैं। अपना हो वा पराये यान वाहनका सुख उन्हें मिलता है। कृषि कर्ममें या अनाज आदिके व्यवसायमें इन्हें उत्तम लाभ होता है। इन्हें रहनेके लिए उत्तम घर प्राप्त होता है। यदि जातक कृष्ण पक्ष की पंचमीसे शुक्ल पक्षकी पंचमीके बीचमें पैदा हुआ हो तो उपरोक्त फलोंका भोग नहीं मिलता। चन्द्रमा यदि पाप ग्रहोंके साथ हो तो शुभ फल कम मिलता है, उपरन्तु फल विपरीत होता है।

युति—चतुर्थ स्थानमें चन्द्र मंगलका योग हो तो जातक पराई स्त्रीसे प्रेम रखने वाला होता है। संतान सुखसे ये प्रायः वंचित रहते हैं, क्षमा गुण इनमें कम रहता है और ये बड़े निष्ठुर होते हैं।

(५) पंचम स्थानमें यदि पूर्ण चन्द्र रहे (शुक्ल ५ मीसे कृष्ण ५ मी) अथवा शुभ ग्रहके साथ रहे या शुभ ग्रह उनको देखते हों तो जातक पुत्र, पौत्र कन्यादि से युक्त रहता है और उनके सन्तान वर्ग सुशील और सद्‌गुणी होते हैं। पंचम स्थानमें क्षीण चन्द्रमा हो (कृष्ण

५ मीसे शुक्ल ५ मी) अथवा पाप ग्रहसे युक्त हो तो, चंचल प्रकृति वाली कन्या पैदा होती है।

युति—पंचम स्थानमें चन्द्र मंगल योगसे जातक गो ब्राह्मण देवताओंमें श्रद्धा और भक्ति रखने वाला होता है। नाना प्रकारकी विद्याओंका लाभ उन्हें प्राप्त होता है, सत्संग और साधुसमागम होता है और काव्य पुराणोंमें इच्छा रहती है। उन्हें नाना प्रकारका सौख्य लाभ होता है। कर्क और मकर लग्नजात व्यक्तियोंके लिए यह योग उत्तम होता है।

(६) चन्द्र—मेष, वृश्चिक, मकर कुम्भ और सिंह राशि में यदि षष्ठ भावमें चन्द्रमा रहे अथवा छठे स्थानमें चन्द्रमा यदि पापग्रहसे युक्त होकर रहे अथवा चन्द्रमा यदि क्षीण हो तो जातकको जीवनमें बहुत कष्ट उठाने पड़ते हैं। विशेष कर चन्द्रमाके दशा अन्तरमें अनेक यंत्रणा मिलती है। आयुकारक अन्य योगायोग यदि सबल नहीं, तो इस योगसे मनुष्य अल्पायु होता है। मात्र यह चन्द्रमा यदि धनु या मीन राशिमें रहे और शुक्ल ५ मीसे कृष्ण ५ मी के बीचमें जन्म हुआ हो और शुभ ग्रह की युति या दृष्टिमें हों; तो जातक शत्रुओं का विनाश कर सुखसे जीवन यापन करता है।

युति—षष्ठमें यदि चन्द्र मंगलका योग हो तो, मनुष्य विभिन्न रोगोंसे सदैव पीड़ित रहता है। बुद्धि भ्रष्ट होती है और सदैव आफतोंसे सामना करना पड़ता है। इनको दूसरोंकी शत्रुतासे राजदण्ड आदि भी भोगना पड़ता है। तथा नाना प्रकारके दुर्भाग्य इन्हें घेरे रहते हैं।

(७) चन्द्र—सप्तम स्थानमें यदि पूर्ण चन्द्र रहे तो जातकको सुन्दरी स्त्री लाभ होता है। वह स्वतः सुन्दर होता है और घर में सुवर्ण बहुत रहता है यह चन्द्रमा यदि क्षीण हो (कृष्ण ५ मीसे शुक्ल ५ मी तक) अथवा यदि मकर, कुम्भ, मेष, वृश्चिक और सिंहमें रहे अथवा पाप ग्रहोंसे युक्त या दृष्ट हो तो जातककी स्त्री नाना प्रकारके रोगोंसे पीड़ित रहती है। तथा जातक स्वयं सुख भोग नहीं कर सकता।

युति—सप्तममें चन्द्र मंगलकी युति हो तो जातक सदैव आर्त्त रहता है। चिकित्सा शास्त्रमें श्रद्धा तथा ज्ञान रखता है। निर्धन होता है और कभी कभी महा-भयका मुकाबला करना पड़ता है, अर्थात् आने वाली आपत्तियोंकी आशंकाकी सूचनासे भयभीत रहता है।

(८) चन्द्र—चन्द्रमा यदि ८ वें घरमें पड़े तो जातक का शरीर क्षीण रहता है। वह रोगसे पीड़ित रहता है। चित्त चंचल होता है। चोरी, शत्रुता या राजपीड़ाके कारण इनके धनका नाश होता है। और धनके कारण यह सदैव चिंतित रहता है।

युति—अष्टम घरमें चन्द्र मंगल युति हो तो जातक दुष्ट होता है। रोगसे पीड़ित तथा शरीर क्षीण रहता है। किसी भी अंगमें पीड़ा या विकलता रहती है। और वे सदैव दूसरों पर टीका टिप्पणियां करते रहते हैं।

(९) चन्द्र—नवम घरमें पूर्ण चन्द्र रहे तो जातक धनी और मानी होता हैं। स्त्रियोंको आकर्षण करनेकी मोहक शक्ति इनमें रहती है। यह चन्द्रमा यदि वृश्चिक में हो तो मनुष्य धर्म हीन, गुणहीन और विचार हीन होता है।

युति—नवम स्थान में यदि चन्द्र-मंगलकी युति हो तो मनुष्य विद्वान् तथा बहुधनी होता है। वह बोलने में मुखर अर्थात् बहुत बातचीत करता है। दूसरोंसे प्रति संपादनमें समर्थ होता है। पान, भोजन, मिष्टान्नादि इन्हें बहुत मिलता है।

(१०) चन्द्रमा दशम भावमें हो तो जातकको राजासे धन मिलता है। वह धनी होता है तथा उसको रहने के लिए उत्तम गृह प्राप्त होता है। वे सदैव संतुष्ट रहते हैं और गुणी तथा कीर्तिमान् होते हैं।

युति—दशम स्थानमें चन्द्र मंगलकी युति हो तो मनुष्य राजपूज्य होता है और नाना प्रकारके कर्म के द्वारा उनको सम्मान तथा धन प्राप्ति होती है। वह शत्रु पक्ष को पराजित कर जयी और सुखी होता है।

कन्या लग्न जातक

[ले०—श्रीअम्बालाल गोविन्दराम दवे बी. एस. सी.]

[मेषसे सिंह राशि पर्यन्त पांच लग्नोंका सविस्तर विशेष फल हम 'श्रीस्वाध्याय'के ८।९।१०।११ वें वर्षोंके अंकों में प्रकाशित कर चुके हैं, उसे पाठकोंने बहुत अधिक पसन्द किया। बीचमें एक वर्ष यह क्रम टूट गया था, अब श्री अम्बालाल दवेके सौजन्यसे यह विशेषलग्न-फल पुनः प्रारम्भ किया जा रहा है। आगामी 'नववर्षाङ्क'में तुलालग्नका विशेष फल प्रकाशित होगा और आगे प्रत्येक अंकमें एक राशिका फल इसी प्रकार प्रकाशित होता रहेगा। —सम्पादक]

राशि—कन्या; द्विस्वभाव, स्त्री, द्विपद, शीर्षोदय, सम, स्वामी बुध।

कन्या छठी राशि है और वह दूसरी राशि है जिसका स्वामी बुध है। कन्या लग्न वालोंका रूप बुधके ही अनुकूल होता है। उसका डीलडौल न अधिक बड़ा और न अधिक छोटा ही होता है शारीरिक पुष्टता अधिक नहीं होती, यहां तक कि कभी-कभी उनका शरीर अति-कोमल देखा जाता है। स्वभावतः उनका शरीर अधिक मोटा ताजा नहीं होता। फिर भी उनके अवयवोंमें चंचलता होती है, और बुध प्रबल हुआ तो काफी चुलबुलापन होता है। उनका शारीरिक गठन अति सुडौल और सुहावना होता है और यदि अन्य ग्रहोंकी स्थिति ठीक हुई तो वे सुन्दर भी होते हैं। वे लड़कियोंका सा आकर्षण रखते हैं जैसा इस लग्नके नामसे ही स्पष्ट है, वे स्त्रियों की भांति लज्जाशील होते हैं। और पुरुषोचित उद्दण्डता उनमें कदापि नहीं होती। कभी-कभी उन्हें लज्जाका आवरण उतारना अति कठिन जान पड़ता है, किन्तु एक बार खुल जाने पर वे सबको अपनी ओर आकर्षित कर लेते हैं।

वे मिथुन लग्न वालोंकी भांति प्रत्येक व्यक्तिसे मित्रता करना ठीक नहीं समझते। अपनी मित्र मण्डली बढ़ानेमें वे विवेकसे काम लेते हैं। अतः उनके मित्र बहुत नहीं होते, किन्तु जिस वर्गमें वे विचरते हैं वहां सभीकी सहानुभूति उनके साथ होती है।

कन्या राशि बुधकी उच्च राशि है। अतः इस लग्न वालोंमें बुधके गुण मिथुन लग्न वालोंसे भी अधिक मात्रा में पाए जाते हैं। यदि बुध ठीकसे बैठा हो तो उनमें अत्यधिक बुद्धि होती है। वे बड़े ही मननशील, विचार शील और अध्ययनशील होते हैं। उनकी स्मरण शक्ति,

---

(११) चन्द्र—ग्यारहवें स्थानमें चन्द्रमा नाना प्रकार के सन्मान, वाहन, कीर्ति, भोग, गुण और प्रसन्नता प्रदान करते हैं।

युति—११ वें स्थान में चन्द्र मंगलकी युति हो तो जातक देखनेमें बहुत सुन्दर होता है। उनके मित्र वर्ग विश्वसनीय होते हैं। ये बुद्धिमान् होते हैं। अपने बन्धु वर्गोंमें प्रेम रखते हैं तथा उनमें काम करने की शक्ति रहती है।

(१२) चन्द्र—द्वादश घरमें चन्द्र रहे तो जातक गुणहीन तथा मित्रहीन होता है आंखोंमें पीड़ा होती है अथवा दृष्टि-शक्ति कम होती है। उनके बहुत शत्रु होते हैं और बहुत क्रोधी होते हैं।

युति—१२ वें स्थानमें चन्द्र मंगलकी युति हो तो मनुष्यका स्वभाव खूब कठोर रहता है। वह विचार और भद्रता हीन होता है। आफतकी आशंकासे सदैव भयभीत तथा धनके कारण सदैव चिंतित रहता है।



अपार होती है, और वे जिस वस्तुको एकबार देख लेते हैं उसका स्मरण उन्हें जीवन पर्यन्त बना रहता है। वे अच्छे कलाकार व लेखक और वक्ता बन सकते हैं। संसार के कुछ चुने हुए विचारक और बुद्धिमान् पुरुष कन्या लग्नमें ही हुए हैं।

अपने ज्ञानके ही बलसे वे जीवनकी गहराइयोंमें पहुंच जाते हैं। वे उच्च कोटिके मनोवैज्ञानिक व आलोचक देखे गए हैं। आध्यात्मिकता और दर्शन शास्त्र आदिको वे समझ लेते हैं (ऐसा कोई विषय नहीं जिसे वे न समझ सकते हों) और उसके प्रगाढ़ विद्वान् व पंडित बन जाते हैं, किन्तु भौतिकता उनसे नहीं छूटती। भौतिकता और आध्यात्मिकताके बीच पुल बांधनेका वे किञ्चित् निरर्थक प्रयास करते रहते हैं।

उनके हृदयमें उद्गार होते हैं, और भाव होते हैं। इसके साथ-साथ उनमें ज्ञान प्राप्त करनेकी प्रबल लालसा होती है। नीचे दिये गए चित्रसे ज्ञान प्राप्त करनेकी भावमयी भावना प्रत्यक्ष ही है। किन्तु उनकी ज्ञानके प्रति लालसा और कोमल भावुकता प्रत्यक्षमें नहीं दीखती। उनके हृदयके उद्गार रूपी अङ्गारे शीलताकी राखमें दबे रहते हैं। जिससे कोई भी व्यक्ति उनसे पहली बार मिलकर उनके बारेमें गलत ख़याल बना लेता है, और समझ लेता है कि वे नितान्त भावहीन व्यक्ति हैं। अधिक सम्पर्कके बाद वास्तविकता प्रकट हो जाती है, और उनका व्यक्तित्व अतिविशाल लगने लगता है। सर्व शास्त्र और दर्शनकी जन्मभूमि भारतवर्षकी कुण्डलीमें कन्या लग्न है। इसीलिए बाहरसे आने वालोंने इस देशको पहले सम्पर्कमें नहीं समझ पाया। यहांकी सौम्यता और साधुता का उन्होंने उलटा अर्थ लगाया और इस देशके बारेमें एक अजीब गलत ख्याल बना लिया। किञ्चित् वे (ऊपर कहे गए) राखसे ढके अंगारे न देख सके। पर फिर भी इस देशने उनकी परवाह न की और अविचलित रहा। अब जब संसारने यहांके राखसे ढके अंगारोंका परिचय ले लिया है तो इस देशकी महानताने भी बढ़कर आसमान चूम लिया है। यह शत प्रतिशत कन्या लग्नका ही लक्षण है। सचमुच कन्या लग्न वालोंको आप पहले सम्पर्कमें कदापि नहीं समझ सकते।

भारतवर्षका इतिहास एक कन्या लग्न वाले मनुष्यके जीवनसे बिल्कुल मिलता है। कन्या लग्न वाले भौतिक शक्तियोंकी प्रबलताकी ओरसे उदासीन होते
लिए सारा महत्व अध्ययन और दर्शनमें ही होता है। इससे वे अति नम्र होते चले जाते हैं और परिस्थिति सम्बन्धित अपना अस्तित्व ही भूल बैठते हैं—यहां तक कि अपने विरोधीका शस्त्रसे सामना करनेमें वे असमर्थ होते हैं। वे हार जाते हैं। किन्तु अपने अन्तरमें अपनी हारकी निरर्थकता खूब समझते हैं। और अपने पर भौतिक विजय पाने वालेको नीच समझ कर उसकी अवहेलना करते रहते हैं। इस प्रकार अपने हृदयमें वे कभी हार स्वीकार नहीं करते और अपने विरोधीसे अपनेको सर्वदा ऊंचा ही देखते हैं।

वे अपने आपको बढ़ाना नहीं जानते। अपनी विद्या का प्रदर्शन भी वे स्वयं नहीं कर सकते। किसी कामको स्वयं आगे बढ़ कर करनेमें डरते हैं। उनमें आत्म-विश्वासकी कमी होती है। इसीसे वे राजनैतिक क्षेत्रमें लीडरी नहीं कर सकते। [दार्शनिक क्षेत्रको जाने दीजिए—वहां तो उनका सम्मान निश्चित ही होता है] उनका कोमल और अबलाओंकासा शरीर धूल भरी भीड़ोंमें शीघ्र ही परेशान हो जाता है। उन्हें जीवनमें सफलता लेनेके लिए निश्चय ही किसी निर्देशककी आवश्यकता होती है।

वे स्वयं बने ठने रहना पसन्द करते हैं। कोमल वस्त्रोंसे विशेष कर श्वेतवर्णके वस्त्रोंसे उन्हें प्रेम होता है। वे सफाई के पीछे दीवाने रहते हैं। अपनी और अपने बच्चोंकी सफाईका उन्हें बेहद ख्याल रहता है। वे प्रत्येक कार्यमें नियम बद्धता चाहते हैं और जरा सी भी त्रुटि उन्हें असह्य हो जाती है। वे स्वयं भी जिस कार्य को करते हैं, नियम बद्ध होकर करते हैं और दूसरोंसे भी यही आशा रखते हैं। जब किसीकी नियम परायणता में कमी देखते हैं, तो वे उसकी बड़ी कड़ी आलोचना करते हैं। यह नियम-परायणता कन्या राशिकी विशेषता है। किसी भी लग्नके मनुष्यमें नियम-परायणता

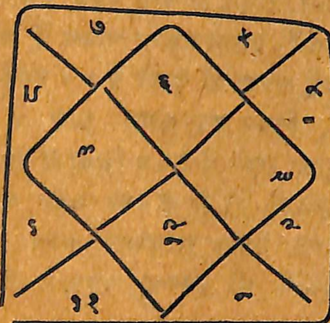
तभी आती है जब उसकी कुण्डलीमें यह राशि केन्द्रमें हो, या चन्द्रमा कन्या पर हो, या सूर्य कन्या पर हो, अथवा लग्नेश कन्या पर हो। यदि इनमेंसे कुछ न होगा, तो वह पुरुष कोई भी नियमबद्ध कार्य सफलता पूर्वक नहीं कर सकता।

कन्या राशि नौकरीकी राशि है और कन्या लग्न वाले नौकरीके ही मतलबके होते हैं। जितनी आसानीसे नौकरी कन्या लग्न वालोंको मिल जाती है, अन्य लग्न वालोंको किंचित् नहीं मिलती। वे नेता नहीं होते, किन्तु नेताओंके सेक्रेट्रीके पदके लिए उनसे अधिक उपयुक्त व्यक्ति नहीं होता। उच्च वर्गके राज्याधिकारियोंमें जो सिंह लग्नसे प्रभावित नेताओंके सेक्रेटरी बने रहते हैं, कन्या राशिका ही मुख्य प्रभाव होता है।

इसी से वे बड़े बड़े इन्तजाम कर लेते हैं और दुश्मन की गहरीसे गहरी चालाको एक लहमेंमें समझ जाते हैं। वास्तवमें किसी बातकी तहमें पहुंच जानेमें वे अपना सानी नहीं रखते। अपनी अन्दाजके वे बड़े सच्चे होते हैं। राज्य संचालनकी बागडोर उनके हाथोंमें सुरक्षित होती है।

अधिक भावुक न होते हुए भी वे बड़े सेवापरायण होते हैं। प्रत्येक कार्यमें उन्हें आगे बढ़ानेमें जितना हाथ बुद्धिका होता है किंचित् हृदयका नहीं होता। इस बुद्धिकी छाप उनके प्रत्येक कार्य पर होती है। भावोंमें बहना उन्हें नहीं आता और उनका मस्तिष्क कभी सन्तुलन नहीं खोता। संक्षेपमें वे बड़े अध्ययन शील, मनन शील, बुद्धिमान्, कोमल अपने पर कम भरोसा करने वाले और अतिशय नियम परायण होते हैं।

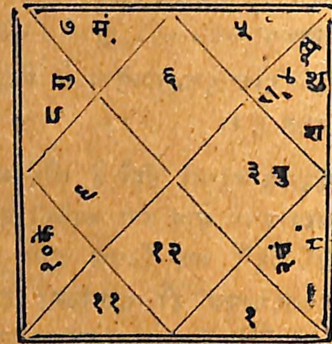
उनकी कुण्डलीमें :—



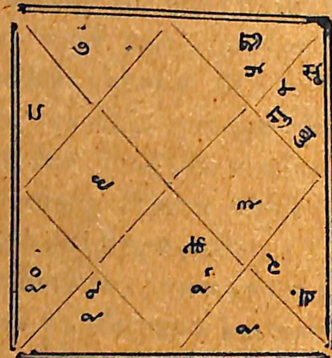
सूर्य द्वादशेश होनेसे अशुभ होता है। चन्द्रमा एकादशेश होनेसे शुभ होता है। मंगल अष्टमेश और तृतीयेश होनेसे अशुभ होता है। बुध लग्नेश और दशमेश होनेसे शुभ होता है। बृहस्पति चतुर्थेश और सप्तमेश होनेसे शुभ होता है। शुक्र नवमेश और द्वितीयेश होनेसे शुभ होता है। शनि पंचमेश और षष्ठेश होनेसे सम होता है।

नीचे दी हुई कुण्डलियोंमें ऊपर लिखे गुण देखे जा सकते हैं।

सर एस. बी. रामामूर्ति



अर्ल आफ बेलफोर



[सम्राट् नेपोलियन, सम्राट् शाहजहां, प्रे. रूजवेल्ट और लार्ड हार्डिङ्ग आदि कई सुप्रसिद्ध व्यक्तियोंका जन्म लग्न भी कन्या ही था। स्थाना-भावके कारण उन सबकी जन्मकुण्डलियां यहां नहीं दी जा सकीं। —सम्पादक]

★

ज्योतिष के अनुभूत योग

[श्री ला० बद्रीप्रसादजी गुप्त ब्वानिया गणकचूड़ामणि ज्योतिषभूषण]

मैं कुछ वर्षोंसे ज्योतिषका अनुसंधान कर रहा हूं, उनमें जितने योगोंकी अनुभूति हो चुकी है उनकी जन्मकुंडलियां एकत्रित की हुई हैं, जिनको प्रकाशित करानेका प्रयास किया जा रहा है। उनमेंसे कुछ योग नीचे दिये जाते हैं। विद्वज्जन इन योगोंका अन्य कुंडलियोंमें विचार करें और यदि वह कुंडली मुझे भी भिजवानेकी कृपा करें तो वह कुंडली भी उदाहरण तथा कुंडली संग्रहमें दे दी जावेंगी।

१. सूर्य यदि पंचम भावमें शनि या शुक्र सहित हो तो जातकको प्रमेह रोग होता है।

२. मंगल दशम भावमें यदि शनिसे युक्त या दृष्ट हो तो प्रमेह रोग होता है।

३. षष्ठभावेश यदि बुधकी दृष्टिसे वर्जित हो और मंगलसे युक्त हो तो लिंगरोग (गर्मी, सूजाक आदि) होता है।

४. लग्नेश तथा षष्ठभावेश शनिसे युत या दृष्ट हो तो आंव (पेचिश) रोग होता है।

५. बृहस्पति अथवा चन्द्रमा यदि जल राशिगत अष्टम भावमें हो और पापग्रहसे दृष्ट हो तो जातक क्षयरोगसे पीड़ित होता है। बृहस्पतिके अष्टम भावगत होने पर वैद्य तथा डाक्टरको रोग निदानमें अधिक कठिनाई होती है।

६. राहु अथवा शनि यदि धन भावमें हो तो संग्रहणी होती है।

७. चन्द्रमा तथा शुक्र यदि छठे या आठवें भावमें हो तो मंदाग्नि तथा गुद रोग होता हैं।

८. दिवसके जन्ममें बृहस्पति पर मंगलकी पूर्णदृष्टि हो और मंगल विनष्ट (क्रूरग्रहोंसे अर्दित) हो तो पेट तथा हृदय में शूल होता है।

९. षष्ठभावेशका सौम्य तथा क्रूर दोनों प्रकारके ग्रहोंसे सम्बन्ध हो और सूर्य वृश्चिक राशिमें हो तो उदर तथा हृदयमें शूल होता है।

१०. मंगल तनुभावमें हो और षष्ठभावेश निर्बल हो तो अजीर्ण, गुल्म तथा उदर शूल होता है।

११. शुक्र यदि शनिसे आक्रांत लग्नस्थ हो तो जंघा में धातु पाषाणिक रोग होता है।

१२. चतुर्थेश सुख भावमें लग्नेश सहित हो और कर्मेशसे दृष्ट हो तो नदी, कूप या सरोवर आदिमें पतन होता है।

१३. चतुर्थेश स्थित राशिका स्वामी यदि चतुर्थेशसे युत या दृष्ट हो तो नदी, कूप या सरोवर आदिमें पतन होता है।

१४. शनि यदि मंगल अथवा राहुसे युक्त (युत या दृष्ट) हो अथवा शनि सुखभावमें हो तो जलका भय होता है।

१५. लग्नमें चरराशि हो जो षष्ठभावेशसे दृष्ट हो और मंगल लाभ भावमें स्थिर राशिका अथवा नवम भावमें द्विस्वभाव राशिका या सप्तम भावमें हो तो जातकको शत्रुका अभिचार (मूठ आदि) होता है।

१६. लग्न पर मंगलकी दृष्टि हो तथा षष्ठभावेश १०।७।१ भावमें हो तो जातकको शत्रुकी ओरसे अभिचार होता है।

१७. रात्रिके जन्ममें बुध छठे भावमें हो तो जातकका दाहिना कर्ण उच्चस्वरसे और शुक्र दशमभाव में हो तो बायां कर्ण उच्चस्वरसे सुनता है।

१८. यदि तृतीय भाव पापग्रह सहित हो और पाप ग्रहसे दृष्ट भी हो तो जातकके कानमें रोग होता है।

१९. शनिसे सप्तम या लग्नमें बृहस्पति हो तो वायुके स्पर्शसे लकुआ आदि होता है।

अनुभूत योग माला

[लेखक—राजगुरु ज्योतिषालंकार श्री पं० तारादत्तजी राजज्योतिषी]

[शरदङ्कसे आगे]

१. जिसके जन्म समयमें चन्द्रमा सूर्यसे केन्द्रमें [१।४।७।१०] होता है, उस व्यक्तिमें विनय, धन, ज्ञान, बुद्धि और चातुर्य अधम होते हैं।

२. जिसके जन्म-समयमें चन्द्रमा सूर्यसे पणफरमें [२।५।८।११ वें] होता है उस व्यक्तिमें विनय, धन, ज्ञान बुद्धि और चातुर्य मध्यम होते हैं।

३. जिसके जन्म-समयमें चन्द्रमा सूर्यसे आपोक्लिम [३।६।९।१२ वें] में होता है, उस व्यक्तिमें विनय, धन, ज्ञान, बुद्धि और चातुर्य श्रेष्ठ होते हैं।

अधमसमव रिष्ठान्यर्क-केन्द्रादि संस्थे।
शशिनि विनयवित्त ज्ञान धी नैपुणानि॥

[बृहज्जातक]

उपपत्तिः—चन्द्रमा शैत्यका अधिष्ठाता मृदुस्वभाव वाला ग्रह है। सूर्य आग्नेय उग्र स्वभाव वाला ग्रह है। इसलिए सूर्यके साथ चन्द्रमाकी शक्तियां अत्यन्त क्षीण हो जाती हैं।

चन्द्रमा मनका अधिष्ठाता ग्रह है

चन्द्रमा मनसो जातः [यजुर्वेद]

बुद्धि, ज्ञान और चातुर्यका मनसे घनिष्ठ सम्बन्ध है। इसलिए चन्द्रमाके शक्ति-हीन होने पर बुद्धि ज्ञान और चातुर्यकी न्यूनता युक्ति-संगत है।

चन्द्रमा राज-ग्रह होनेसे धनका देने वाला भी है।

सोमो ऽस्माकं ब्राह्मणानां राजा [यजुर्वेद] इसलिए चन्द्रमाके शक्तिहीन होने पर धनकी न्यूनता भी युक्ति-संगत है।

चन्द्रमाके किरणोंका मृदुत्व प्रत्यक्ष है, इसलिए वह विनयका भी अधिष्ठाता सिद्ध होता है। इसलिए उसके शक्ति-हीन होने पर विनयकी न्यूनता भी युक्ति संगत है।

इस प्रकार सूर्य-कुंडलीमें चन्द्रमाके प्रथम केन्द्रमें होने पर विनय धन, ज्ञान, बुद्धि और चातुर्य की अधमता सिद्ध होती है।

सप्तम संमुखमें होता है, इसलिए सप्तमकी ओर शक्तियां वेगसे जाती हैं। वेगसे जानेमें संघट्टन होना अनिवार्य है। संघट्टनसे आग्नेयी शक्तियां प्रकट होती हैं इसी अभिप्रायसे सप्तम स्थान कलह-स्थान निर्णीत किया गया है।

हृताध्व कलि मार्गादि चिन्त्यं द्यूने ग्रहोऽशुभः

[सज्ञातन्त्रे]

इस प्रकार प्रथम और सप्तममें उनकी उग्र शक्तियां परस्पर व्याप्त होती हैं। चतुर्थ-दशम प्रथम-सप्तमसे समानान्तरमें होनेसे इनके मध्यमें होते हैं। इसलिए वे उग्र शक्तियां चतुर्थ-दशममें भी व्याप्त होती हैं। इसी प्रकार चतुर्थ-दशमके सम्बन्धसे उत्पन्न उग्र शक्तियां प्रथम-सप्तम में व्याप्त होती हैं। इस विचारसे सब केन्द्रोंमें उनके सम्बन्धसे उग्र शक्तियोंका व्याप्त होना सिद्ध होता है। इसलिए सूर्यकुंडलीमें किसी केन्द्रमें चन्द्रमाके होने पर

---

२०. लग्नेश यदि बुधके षड्वर्गमें षष्ठभावेशसे युक्त हो तो षष्ठेशकी दशामें वायु या वातसे शरीर-जाड्य (बेकार) होता है।

२१. राहु तथा बुध यदि सूर्यसे युत तथा सूर्यरश्मि (१२° के समीप) के भीतर हो तो जातकका उदर भेद (अग्रशन) होता है।

१. यह सम्पूर्ण योग जन्म लग्न तथा चन्द्र लग्न दोनोंसे लागू होते हैं।

२. फल कहनेमें जहां युक्त, सहित, अन्वित शब्दों का प्रयोग है वहां पाराशर ऋषि मतानुसार जो चार सम्बन्ध हैं उनसे विचार करना चाहिये।



सूर्यकी उग्र शक्तियोंसे उसका शक्तिह्रास प्रतीत होता है। अतएव सूर्य कुंडलीमें चन्द्रमाके किसी केन्द्रमें होने पर विनय धन, ज्ञान, बुद्धि और चातुर्यकी अधमता युक्ति-संगत है।

पणफर-स्थान केन्द्र स्थानोंसे आगे होते हैं। इसलिए सूर्यकुंडलीमें चन्द्रमाके पणफर-स्थानमें होने पर विनय धन, ज्ञान, बुद्धि और चातुर्य मध्यम सिद्ध होते हैं

आपोक्लिम स्थान पणफरस्थानोंसे भी आगे होते हैं। इसलिए सूर्य-कुण्डलीमें चन्द्रमाके आपोक्लिममें होने पर विनय धन ज्ञान बुद्धि और चातुर्य श्रेष्ठ सिद्ध होते हैं। केन्द्रसम्बन्ध द्वारा सूर्यकी आग्नेयी शक्तियोंसे शैत्यके अधिष्ठाता चन्द्रमाकी शक्तियां विकल होती हैं। परन्तु चन्द्रमामें सूर्यका प्रकाश-सम्बन्ध उपकारी होता है। इसी अभिप्रायसे पूर्णचन्द्र शुभ और क्षीणचन्द्र अशुभ माना गया है। पौर्णमासीके दिन सूर्यके प्रकाशका चन्द्रमाके दृश्य गोलार्धसे पूर्ण सम्बन्ध होता है। अतएव पौर्णमासीका जन्म श्रेष्ठ माना गया है। पौर्णमासी तिथि में उत्पन्न बालक मनस्वी अनुभूत होते हैं। पौर्णमासीके अन्तमें सूर्य-चन्द्रमाके पूर्ण सम-सप्तक-सम्बन्धसे कुछ विनयादिमें न्यूनताका अंश भी अनुभूत होता है। अमावास्याके दिन प्रकाश-सम्बन्धकी न्यूनताके कारण अनिष्ट फल अनुभूत होता है।

चन्द्रमाके नीचादिस्थ होने पर क्रूर ग्रहोंसे अधिक दूषित होने पर और अनिष्ट स्थानस्थ होने पर पौर्णमासी तिथिमें भी विनय धन ज्ञान बुद्धि और चातुर्य अधम अनुभूत होते हैं। चन्द्रमाके उच्चादिस्थ होने पर शुभ-युक्त-दृष्ट होने पर और शुभस्थानस्थ होने पर अमावास्या तिथि में भी अधिक अनिष्ट फल अनुभूत नहीं होता है।

शुक्ल पक्षकी अष्टमीमें चन्द्रमा सूर्यसे चतुर्थ और कृष्णपक्षकी अष्टमीमें दशम होता है। दोनों अष्टमियोंमें चन्द्रमाके दृश्य गोलार्धका अर्धभाग प्रकाशित होता है। इसलिए उनमें अमावास्याके अनिष्ट फलसे न्यून और पौर्णमासीके अनिष्ट फलसे अधिक अनिष्ट फल अनुभूत होता है।

सूर्य आत्म ग्रह और चन्द्रमा मनोग्रह है। अमावास्यामें सूर्य चन्द्रमा की बाह्य शक्तियों का संबन्ध यद्यपि हानिकारक होता है; परन्तु उनकी आभ्यन्तरीय शक्तियोंका संबन्ध उपकारी होता है। अमावास्यामें धर्मशास्त्रविहित स्नान दान आदिसे आविर्भूत अपूर्वका सूर्य चन्द्रके सम्बन्धसे आविर्भूत आभ्यन्तरीय शक्तियोंसे सम्बन्ध प्रतीत होता है। इसलिए अमावास्याकाल पुण्यकाल माना गया है। उस समय स्नान दान आदिसे बाह्य अनिष्ट शक्तियोंका भी निराकरण होता है।

कर्म करनेसे जो अदृश्य पदार्थ संचित होता है उसे अपूर्व कहते हैं।

फलाय विहितं कर्मस्थिरं न चिरभाविने ।
तत्सिद्धिर्नान्यथेत्येवमपूर्वं प्रति चक्षते ॥

(कुमारिल भट्ट)

इस लेखका साररूप बृहज्जातकके श्लोकार्धसे सहित स्वनिर्मित श्लोकार्धः—

अहिम रुचि समेतः शीतरश्मिर्न शस्तः,
प्रसरति फलमेतत् सर्वकेन्द्रेषु यस्मात् ।
अधम सम वरिष्ठान्यर्ककेन्द्रादि संस्थे,
शशिनि विनय वित्त ज्ञान धी नैपुणानि ॥



पाश्चात्य ज्योतिष

(यूरोपीय ज्योतिषियोंके मतसे तेजी मन्दी विचार)

यूरोपीय पाश्चात्य ज्योतिषियोंके मतानुसार हम यहां ग्रहोंके दृष्टियोगों द्वारा तेजी मन्दी देखनेका प्रकार पाठकोंके लाभार्थ प्रकाशित कर रहे हैं। ग्रहोंके दृष्टियोग (Aspects) ग्रीन्वीच वेधशालासे प्रकाशित होने वाले "रैफलस-एफेमरीज" में लगे रहते हैं। अब भारतमें भी अंग्रेजी हिंदी में एफेमरीज प्रकाशित होने लगी हैं, दृष्टियां वहां देखनी चाहिए।

रैफलस नामक पंचांग में जो एस्पेक्टस अर्थात् योग लिखे रहते हैं उनमें प्रथम सूर्य चन्द्रमाके योगोंका केवल फाटकामें होने वाला प्रभाव लिखते हैं। प्रारम्भमें रैफलस में लिखा हुआ योग दिखाकर बाद उसका फलाफल लिखा गया है। नीचे लिखे योग बहु-परीक्षित हैं तथापि सोच समझ कर काम करना चाहिए।

१—"प्योरलल" नामक योग सूर्य और चन्द्रमाके किसी भी एक राशि तथा एकही अंश (डिग्री) में होता है। यह यदि मेषराशि (एरियस) में हो तो सूर्यके उच्च राशिके होनेके कारण चन्द्रमा पराजित होता है, अतः चांदी, श्वेतवस्त्र, प्लास्टिक आदि मन्दे होते हैं। और अकस्मात् मन्दी का दौरा आता है। और यह मन्दी प्रायः १॥-२ घण्टा ही रहती है। इसी प्रकार वृष (टारस) में भी जानना। किन्तु मिथुन (जैमिनी) में मन्दी न होकर केवल घटा बढ़ी होती है। और कर्क (कैन्सर) मे भाव जमे रहते हैं। तथा सिंह (लियो) में होने पर भी मेषके समान जानना। कन्या और तुलामें सूर्य निर्बल होनेके कारण चांदी आदिमें कुछ तेजीका ही रुख रहता है। तांबा कपड़ा शेयर मन्दे रहते हैं। वृश्चिक राशिमें बाजारमें विशेष जोरकी घटाबढ़ी होती है। धनु राशिमें समानभाव और मकर तथा कुम्भराशि में शेयरोंमें उथल पुथल होकर रुख तेजीका रहता है। मीनमें समान, मन्दा होता है।

२—युति या [कंजक्शन] यह योग ५ डिग्री अंशके अन्तर रहने पर होता है और एक राशिमें होने पर तो इसका फल प्रायः प्योरललके समान ही होता है, यदि भिन्न राशिमें होता है तो प्रायः निष्फल होता है, क्योंकि दूसरे और बारहवें घरमें हमारे आचार्योंने दृष्टियोगको नहीं माना है।

३—द्विर्द्वादश या सेमी सिक्सटाइल—यह योग ३० अंश [डिग्री] के अन्तर पर होता है। इस योगमें सूर्य मेष राशिमें और चन्द्रमा वृष राशिमें हो तो यह योग पूर्ण बलवान् होता है, क्योंकि दोनों ही ग्रह अपनी उच्च राशिके होते हैं, उस समय बिना धारणाकी उथल पुथल होती है, और अचानक होती है। बाजारका उतार चढ़ाव देखने योग्य होता है और कर्क तथा सिंह राशियोंमें क्रमशः चन्द्र सूर्य रहने पर जमी हुई तेजी आती है। तीसरे नम्बरमें मकर कुम्भको जानना चाहिये। अन्य राशियोंमें कोई विशेष प्रभाव नहीं होता।

४—सेमीक्वेंटल—यह ३६ अंश [डिग्री] के अन्तर पर माना जाता है। यह जहां पर दूसरे या बारहवें घरमें होता है, वहां तो फलाफल प्रायः समान ही होता है। पर जब एक ग्रहसे दूसरा ग्रह तीसरी राशिमें होता है, वहां पर एक पाद दृष्टि होती है और से सिक्सटाईलकी तरह इस योगमें भी प्रायः घटाबढ़ी ही विशेष रहती है, परन्तु रुख तेजीका ही रहता है। सूर्य चन्द्रमा दोनोंमें से एक ग्रह स्वगृही अथवा उच्च राशिका होतो उसकी वस्तु पर विशेष प्रभाव होता है, क्योंकि वह बलवान् समझा जाता है। शुभग्रहकी राशि पर होने वाला ग्रह पराजित और पाप ग्रहकी राशि पर

ज्योतिषका आरम्भिक शिक्षण

संसारमें प्रत्येक मनुष्यको अपने जीवनका शुभ व अशुभ फल जाननेकी सदैव प्रबल इच्छा रहती है। हमारे अच्छे दिन कब आवेंगे ? आज कल हम बड़े दुःखी हैं ? अमुक मास हमारा कैसा बीतेगा ? इत्यादि अनेक प्रकार की बातोंको जाननेकी सदा आवश्यकता रहती है और इसके लिए ज्योतिषी व भविष्यवेत्ताओंकी खोज बराबर हुआ करती है। इसलिए सर्वसाधारणके हितार्थ इस ज्योतिष-प्रकरणमें ऐसे ऐसे ज्योतिषके विषय दिये जायेंगे जो आपके लिए लाभकारी व उपयोगी होंगे और किसीकी सहायता बिना आप स्वयं समझ सकेंगे। इस बार इस अंकमें ३ बातें दी जा रही हैं।

(१) पहिला—राशि निकालनेकी विधि।

(२) दूसरा—चन्द्र राशिफल—अर्थात् अपनी राशि मात्रसे अपने पूरे जीवनका शुभाशुभ फल ज्ञात कर लेना।

(३) तीसरा—अपनी राशिसे अपना मासिक शुभाशुभफल ज्ञात करना कि यह मास हमारा कैसा बीतेगा।

राशि निकालनेकी विधि

अब राशि जाननेके लिए इसमें एक तालिका (नक्शा) दी जाती है। १२ राशियां होती हैं। जिनके नाम तालिकामें यथाक्रम लिखे हुए हैं। प्रत्येक राशिके सामने नामसे अक्षर दिये हैं। नामके प्रथम अक्षरसे राशि तुरन्त जानी जा सकती है और राशिके स्वामियोंका नाम भी लिखा गया है। आपके नामका जो पहिला अक्षर हो; उसके सामने देखिये राशि लिखी है। जैसे आपका नाम "चुन्नीलाल" है, तो पहिला अक्षर "चू" हुआ। बस नक्शेमें देखनेसे आपकी 'मेष" राशि हुई। ह्रस्व-दीर्घ मात्राका भेद इसमें नहीं माना गया और 'श ष स' तथा 'व' 'ब' का भेद भी राशि-निर्णयमें नहीं है। जैसे नरसिंहदास और नारायण दत्त, तथा यज्ञदत्त और योगेश्वरकी वृश्चिक राशि ही होगी। नामके प्रथमाक्षरमें ह्रस्वदीर्घ मात्रा भेद (न-ना, य-या) से राशिमें कोई भेद नहीं पड़ेगा। इसी प्रकार शंकरदत्त, सुभाष, लक्ष्मणकी राशि कुम्भ ही होगी।

नीचे दोहा चौपाईमें जो फल दिया गया है वह राशि और तत्तद्भावोंके बलवान् होने पर ही पूर्णरूपेण मिलेगा। राशियोंके बलाबलका ज्ञान आगामी अंकमें देंगे।

राशि निकालनेकी तालिका (नक्शा)

क्रम	अक्षरकी संख्या	राशि	स्वामी
(१)	चू चे चो ला ली लू ले लो अ	मेष	मंगल
(२)	ई ऊ ए ओ वा वी वू वे वो	वृष	शुक्र
(३)	का की कु घ ङ छ के को ह	मिथुन	बुध
(४)	ही हु हे हो डा डी डू डे डो	कर्क	चन्द्र
(५)	म मी मू मे मो टा टी टू टे	सिंह	सूर्य
(६)	टो प पी पू ष ण ठ पे पो	कन्या	बुध
(७)	रा री रु रे रो ता ती तू ते	तुला	शुक्र
(८)	तो ना नी नू ने नो या यि यू	वृश्चिक	मंगल

होने वाला विजेता होता है, ऐसी स्थितिमें पराजित ग्रहकी वस्तु मन्दी और विजेताकी वस्तु तेज होती है।

५ अर्धकेन्द्रयोग—[सेमी स्क्वायर] यह योग ४५ डिग्री अंश पर होता है। यूरोपीय विद्वानोंके मतमें यह योग अशुभ माना गया है और भारतीय विद्वानोंके मतमें यह केन्द्रार्ध दृष्टि होनेसे शुभ माना गया है। यह भी जहां पर शुभ घरमें होता है वहां मन्दी और अशुभ घरमें हो वहां तेजी आदि सेमी क्विंटाइलकी भांति ही जानना।

६—तृतीयैकादश—[सिक्सटाईल] यह योग ६० अंश [डिग्री] के अन्तरमें माना गया है और यह प्रायः शुभ ही माना गया है। किन्तु सूर्य चन्द्रमें से कोई भी एक यदि स्वगृही अथवा उच्चराशिका होता है तो वह दूसरेको जीत लेता है, उस स्थितिमें जीते गये ग्रहकी वस्तुमें मन्दी ही होनेकी सम्भावना होती है।

[शेष आगामी अंक में]



(९) ये यो भ भी भू ध फ ढ भे ····· धनु ·· गुरु
(१०) भो ज जी खी खू खे खो ग गी मकर ·· शनि
(११) गू गे गो सा सि सू सो द ··· कुम्भ ··· शनि
(१२) दी दू थ झ ञ दे दो च ची ·· मीन ···गुरु

चन्द्रराशिविज्ञान अर्थात् अपनी राशि द्वारा जीवनका भविष्य ज्ञात कर लेना

प्रिय पाठकों ! इस अंकमें "मेष" राशिका वर्णन किया जाता है। राशि ज्ञात होने पर आप उनके जीवनका पूरा वृत्त बतला सकेंगे, परन्तु फलादेशमें कमी वेशी ग्रहों की स्थिति तथा उनके बलाबल पर निर्भर रहती है, जिसका वर्णन समयानुसार आगे चल कर किया जायगा।

अथ प्रथम "मेष" राशि वर्णन

दोहा—मेष राशि है जाहिको, ताकर मीठ सुभाव।
अन्तर झूठ फरेब बहु, बाहर कपट बनाव ॥

छप्पय

दिशा सुपूरब तासु हो। पक्के रंग देही।
नहि लघु दीरघ अंग गुमानी मान न केही ॥
कछु सीतला सुदाग निसानी श्याम बदन पर।
स्वामी मंगल तासु रंग कछु श्याम ललिधर ॥
होय जवान में ज्वान सो कि बूढ़नमें बूढ़ा बनै।
चरण बदन या बगल तर श्याम दाग जोतिष भनै ॥

चौपाई

अथवा जखम होय कछु ताको। मेष भौन स्वामी है जाको॥
नहिं जामिनी सुकरै वकीली। होवे चतुर जबान रसीली॥
अश्व वृक्ष ऊंचे ते कबहीं। लागै चोट बचै पुनि तबहीं॥
आदि अन्त में धन भी रहै। कष्ट उपद्रव बहु कछु सहै॥
जादू टोना कछु नहिं ब्यापै। दुश्मन होय सो मनमें कांपै॥
दुतियै वर्ष कछु माल दियावै। रहै न वेगि खर्च ह्वै जावै॥
क्रय विक्रय कछु करता रहई। तृतिये मिथुन केर फल कहई॥
भाई बन्धु मतलब के यार। उनते सब विधि होवै हार॥
आधी उमर बीति जब जाय। होय प्रताप कोउ सहि न सकाय॥
चौथे कर्क पड़ा है भाई। मातु पिता सो लाभ सवाई॥
पंचम सिंह प्रसन्न मन रहैं। वृद्ध समय कछु कष्ट न सहै॥
कन्या छठे रोग उपजावै। दस्त के रास्ते लोहू आवै॥
गर्म खुश्क बादी का जोर। होता रहै बहुत नहिं थोर॥
सप्तम तुला नारि दो राखै। परगट गुप्त जोग दोउ भाखै॥
अष्टम वृश्चिक रोगी करे। लोहू दस्त पेंट सों परै॥
नवएं धनका वही सुभाव। तीरथ सफर नफा करि आव।
दसवें मकर होत है जाको। बड़ेकी सोहबत होवै ताको॥
निज समान औरहिं नहिं मानै। आपहिं आप बड़ा करि जानै॥
सब मुशकिल होवै असान। एकादसे कुंभ परमान॥
जो उम्मेद करे सोई होय। सदा सुखी होइ विचरे सोय॥
द्वादश मीन केर फल गावैं। दुश्मन सोइ निबह जो खावैं॥
अब जो हैं ता कहं भलवार कहों सकल निज मति अनुसार॥

छन्द

असनान भूषण बसन औ सब काजको फल भौम है
हठि त्यागिये शुक्र हिं सदा सामान्य कारक सोम है॥
औ करे नालिस किसी पर या राजद्वार हिं जाइये।
तंह दाहिने दिशि होइ ठाढ़ो कुशल काज निबाहिये॥
एक मुद्रिका हकीक की जो सदा राखै हाथ में।
रहै भूमिसुतकी कृपा निसदिन लछमी रहे साथ में॥
जब चन्द्र देखैं दूज को तब रक्त वस्तु विलोकई।
बीतै महीना खुशी सो सुख सुकृत निज अवलोकई॥
दोहा—तीन दुआ दस बीस औ पैंतालिस परमान।
चारि अल्प एहि रासि को इतने बचै जो प्रान॥
छोछठ या सत्तर बरस दिनको छूटै देह।
लगै चोट या अगिन कछु अथवा बरिसै मेह॥





स्वास्थ्य और स्वच्छता--

लौंगके लाभ

आयुर्वेदिक शास्त्रमें लवंग एक बड़ी उपयोगी वस्तु है। औषधालयमें लवंगादि वटी क्षुधा वृद्धि और उदर रोगोंकी बहुमूल्य दवा इससे तैयार होती हैं। प्रतिदिन के व्यवहारमें शाकसब्जीमें पड़ने योग्य गर्म मसालेका प्रधान उपादान लवंग ही है। मलाया सिङ्गापुरादिसे लाखों बोरे प्रति वर्ष भारत आते हैं। यह बड़ी उपयोगी वस्तु है इसके लाभ सर्वसाधारणकी जानकारीके लिये हम यहां संक्षेपमें देते हैं: -

लवंगसे कई प्रकारके तेल भी बनते हैं।

१—लवंग खानेमें स्वादिष्ट कुछ तिक्त सुगन्धित ठण्डा अग्नि वर्धक है, पाचन शक्ति बढ़ाता है रुचिकर है। मियादी ज्वर में दो चार लौंग का पानी उबाल कर रोगी को पिलाते रहनेसे हैं ज्वर शमन होता है।

२ —सवा रत्ती लौंग और सवा रत्ती जलापा मिलाकर देनेसे कोष्टबद्धता दूर होती है।

३—लौंगको पीस कर मिस्रीकी चाशनीमें मिलाकर चाटने से गर्भवतीकी पीड़ा दूर होती है।

४—लौंगको शीतल जलमें पीसकर पिलाने से पिपासा (प्यास) मिटती है।

५—लौंग और चिरायता समभाग लेकर ठण्डेपानी मे पीसकर रोगीको देनेसे विषम ज्वर तक दूर होता है और रोगीकी निर्बलता भी मिटती है।

६—लवंङ्ग और दालचीनीका चूर्ण लेनेसे पाचन शक्ति बढ़ती है। कमजोरी भी दूर होती है।

७—लौंगका तेल वातरोग गठियादि में बड़ा लाभकारी है।

८—लवंग तैल मस्तक पीड़ामें मस्तक पर लगानेसे लाभ होता है।

९—दन्त पीड़ामें लवङ्ग तैल लगानेसे दान्तका दर्द मिटता है।

१०—लवङ्गको पानीमें पीसकर मस्तक पर लेप करनेसे सूक्ष्म नाड़ियोंकी पीड़ा दूर होती है।

११—मुंह में रखने से मुख की दुर्गन्ध मिटती है।

१२—लौंङ्ग आकको डोडी [फूल] और काला नमक दोनों को पीसकर गोली बनाकर चूसनेसे श्वास रोग दमा आराम होता है।

१३—लौंग दाल चीनी-मिश्री की फक्की (चूर्ण) लेने से पाचन शक्ति बढ़ती है।

१४—लौंङ्ग मुंहमें रखने चूसनेसे कफ दूर होता है।

१५—लौंङ्गके व्यवहारसे शरीरकी सुस्ती और ढ़ीलापन मिटता है।

१६—लौंङ्गको तांबेके बरतन में घिसकर लगानेसे चक्षु रोग दूर होते हैं।

१७—लवङ्गको ठण्डे पानीमें पीस छानकर मिश्री मिलाकर पीनेसे हृदय रोगको लाभ होता है।

१८—लौंङ्गको मन्द मन्द अग्नि में भूनकर मधुके साथ चाटने से खांसी मिटती है।

१९—दो लौङ्ग चार रती अफीमके साथ घिस कर माथे पर लेप करनेसे नजले का दर्द मिटता है।

२०—लौंङ्ग और हल्दी का लेप करनेसे आंख के अंजनी आराम होती है।

२१—लौङ्ग और हरड़के काढ़े में सेन्धा नमक औटा कर पीने से अजीर्ण दूर होता है।

२२—लवङ्गको साधारण गर्म पानीमें पीसकर पीने से प्यास और उल्टी होनी बन्द होती है।

२३—लवङ्गको पीसकर तालू पर लेप करनेसे सरदी ठीक होती है।

२४—लौङ्ग और हल्दी पीसकर लगानेसे नासूर आराम होती है।

२५—गर्दनसे ऊपर साधारण फोड़ा-फुन्सीमें लौंग घिसकर लगाने से आराम होते हैं।

❀❀❀

चांदी सोनेका त्रैमासिक भविष्य

(ले० राजवैद्य श्री डा० अमरदत्त जी मिश्र एच० एम० डी० एस० कोमरशीयल एस्ट्रोलोजर)

[Acters can act on this at their own risk]

'श्री स्वाध्याय'के पाठकोंके लाभार्थ वसंताङ्कमें हमने ग्रहयोगोंके आधार रर सायन सिद्धान्तानुसार जोलाई १९५३ तकका व्यापार भविष्य दिया था जिसकी सचाई से पाठक सम्यक् परिचित होंगे ही। एवं शुक्रके उदय अस्त फलका भी परिणाम पाठकोंकी दृष्टिसे परे नहीं है। अतः इस बार पुनः अगस्तसे अक्टोबर १९५३ तक व्यापारिक तेजो मंदीका संक्षेप विवरण पाठकोंके लाभार्थ 'श्रीस्वाध्याय' द्वारा प्रकाशित करते हैं।

अगस्त १९५३ ई०

इस मासमें बाजारमें काफी परिवर्तन होगा। यहां सूर्य कन्या सायनमें हैं, हर्शल कर्कमें है एवं शुक्र भी ४ को कर्कमें प्रवेश होगा। बुध और शुक्र ११ तक साथ कर्कमें हो जाते हैं, मंगल सिंहमें हैं, शनि तुलामें हैं और गुरु सायन मिथुन में है, इस प्रकार ३ ग्रह तेजीकी राशि कर्क में हैं, यह बाजारको तेजीमें चलावेंगे। ता० ११, १२से बाजार मंदीमें चलेगा, क्योंकि १२से शनि तुलामें है और मंगल बुध सिंहमें है, तुला और सिंह दोनों मंदी कारक राशियां हैं, अतः ११से तीन ग्रह मंदी पर चलेंगे और गुरु मिथुनमें हैं यह मंदी लावेगा। अतः व्यापारियोंको सतर्क होकर व्यापार करना है। प्रारम्भमें चांदीका बाजार तेजीमें चलेगा और अन्य पदार्थोंमें कुछ मंदी आवेगी। ता० ३ को बुधका उदय होता है यह भी ता० ३ से बाजारमें तेजी लावेगा। ४ को शुक्र कर्कमें प्रवेश करता है यह भी तेजी लावेगा विशेषरूपसे अतिचारी होनेसे। ७ को पुनः हर्शलकी युतिसे क्षणिक तेजी आवेगी। ता० १४को मंदी रहेगी, सू० ने० केन्द्रयोगसे। ता० १५ को सब बाजारोंमें मंदी चलेगी और चांदी सोनेमें तेजी। पुनः बाजार ग्रह योगाधार पर चलेगा। ता० २२को सब वस्तुओंमें तेजी आवेगी और २६को बुधास्त होगा यह भी तेजी करेगा। ता० २९ को मंगलका उदय होता है यह बाजारमें तेजी लावेगा, लाल पदार्थोंमें–सोना–लालमिर्च अलसी नारियल गेहूं, गुड़, सरसों आदिमें फिर बाजार Tense रहेगा।

सितम्बर १९५३ ई०

इस मासमें सूर्य कन्यामें एवं मंगल भी १५से कन्या में आरहा है और बुध भी १५से तुलामें जावेगा और २४ से शुक्र तुलामें आता है अतः १५ से पूर्व कन्यामें ग्रह योगसे बाजार Steady रहेंगे पुनः मंगल कन्यामें आता है तब कुछ सरगर्मी लावेगा क्षणिक। २४से शुक्र भी तुलामें और शनि भी तुलामें बुध भी तुला तीन ग्रहोंके बलसे बाजार मंदीमें चलेगा और मिथुनका गुरु है यह भी मंदीकारक है। यह मास व्यापारके लिये मध्यम रहेगा—बाजार Steady में चलें और उनका झुकाव मंदीकी तरफ ही रहेगा। २४ से विशेष मंदीकी संभावना है अतः विशेष मंदी आ सकेगी। ३ से बाजार चांदी सोनेका तेज शेष सबका मंदा रहे। ५से सोनेमें मंदीके योग आते हैं, यह हमारा परीक्षित योग है, पाठक परीक्षा करें एवं उनमें भी तेजी आवेगी क्षणिक। पुनः ६ को बाजार पलटेगा, फिर १२ को मंदी चलेगी, चंद्र शुक्र समान क्रांति बलसे और १५से बाजार मंदीमें चलेगा। बुध तुलामें प्रवेश करता है शनिके सहयोगसे मंदी आवेगी। २७को चांदीका बाजार फिर गरम होगा, फिर ३० को भी तेजीके योग हैं, विशेष जानकारीके लिये हमारी चांदी सोनेकी Special report मंगावें जिसका प्रतिमास ३५) रु० है।

अक्टोबर १९५३ ई०

यह मास बड़ा ही क्रांतिकारक है, क्योंकि इस मासमें शनि २३ को वृश्चिक सायनमें प्रवेश करता है यह बड़ी

❀ व्यापारिक तेजी मंदी ❀

[लेखक—श्री यादवचन्द्रजी जैन ज्योतिर्विद्]

'श्रीस्वाध्याय'के गतांकमें हमने एक नवीन प्रकारकी गणित द्वारा निकाला हुआ ग्वार मटरकी तेजी मंदी विषयक लेख प्रकाशित कराया था जिसकी सत्यता सिद्ध होनेके विषयमें हमारे पास अनेकों व्यापारियोंके पत्र प्राप्त हुए और आशा है कि इस अंकमें प्रकाशित ग्वार मटरकी तेजी मंदी इसी प्रकार सही बैठेगी। कृपा करके अबकी बार भी व्यापारी महोदय परीक्षा करके अपना अनुभव हमारे पास पत्र द्वारा भेजनेका कष्ट करें।

श्रावण मास

वदी १ सोम ता० २७ जुलाई—चांदीमें घटा बढ़ी होके तेज, ग्वार मटर ३ बजे तक मंदा फिर तेज, सरसों तेज।

वदी २ मं० ता० २८ जु०—चांदी मंदी, ग्वार मटर मंदी होके तेज।

वदी ३ बुध ता० २९ जु०—ग्वार मटर ११ बजे तक सम या मंदी फिर तेज।

वदी ४ बृह० ता० ३० जु०—चांदी तेज, ग्वार मटर १२ बजे तक सम या मंदी फिर तेजी ५ बजे तक रहेगी।

वदी ५,६ शु० ता० ३१ जुलाई - चांदी तेज, ग्वार मटर १०॥ बजेसे २ बजे तक तेज फिर मंदी।

वदी ७ शनि ता० १ अगस्त ग्वार मटर दोपहर तक तेज।

वदी ९ सोम ता० ३ अगस्त—चांदी तेज, सरसों, गुड़ तेज, मटर मंदा होकर रातको ९ बजेसे तेज।

वदी १० मं० ता० ४ अगस्त—चांदी तेज, ग्वार मटर सम या मंदे हों।

वदी ११ बुध ता० ५ अगस्त—चांदी मंदी रातको हो। मटर ग्वार मंदी।

१२ बृह० ता० ६ अगस्त—चांदी मंदी; ग्वार मट दिनमें मंदे रातको तेज।

वदी १३ शु० ता० ७ अगस्त - चांदी मंदी, ग्वार मटर तेज होके मंदी।

वदी १४ शनि ता ८ अगस्त—ग्वार मटर दिनमें सम रातको तेज।

तेजी लाने वाला ग्रह है यहांसे प्रत्येक व्यापारमें मंदीकी धारणा छोड़ दें। १०को बुध पश्चिमोदय होता है यह मंदी लावेगा और १५को गुरु मिथुनमें वक्री होता है यह भी परिवर्तन लाने वाला है। मंगल तुलामें है एवं शुक्र भी, यहां तीन ग्रह तुलामें आजाते हैं यह भी बाजारमें परिवर्तन करेंगे। २३ तक मंदीका चांस है फिर तेजीमें चलेगा। प्रारम्भ में ता० ३को बाजारमें तेजी आवेगी फिर ४को मंदी, यह मंदीकी लाईन है, यहां बुध सायन वृश्चिकमें आता है यह तेजी कारक है, जनरल रूपसे २४से लम्बी लाइन तेजी की है। शनिने तुलामें रहकर २॥ वर्षमें सभी पदार्थोंमें मंदीका पूरा असर किया और अब वृश्चिकमें आकर सभी बाजारोंमें तेजी लावेगा यहां २ ग्रह प्रधान हैं। गुरु मंदीमें खींचता है और शनि तेजीमें, किन्तु जहां जहां इनके साथ अन्य ग्रहोंका सहयोग मिलेगा वहां यह ग्रह मंदी वाले मंदी और तेजी वाले तेजी करेंगे। यहां कई पदार्थोंमें अच्छी तेजी आवेगी। इस संबंधमें यदि आप पूरी जानकारी चाहते हैं तो श्री स्वाध्याय सदन सोलन द्वारा हमसे पत्र व्यवहार करके हमारी Special report नकद मनी आर्डर द्वारा ३५) रु० भेजकर मंगा लें, जिसमें दैनिक ग्रहयोग व पर आपको तेजी मंदीका पूर्ण ज्ञान हो सकेगा और उसके आधार पर आप व्यापारमें अच्छा लाभ उठा सकते हैं।



श्रावण सुदी १ सोम ता० १० अगस्त—चांदी बेचो, ग्वार मटर सम।

सुदी २ मं० ता० ११ अगस्त—शामको सरसों तेज ग्वार मटर १२ बजेसे मंदी।

सुदी ३ बुध ता० १२ अगस्त—चांदी तेज होके मंदी ग्वार मन्दी।

सुदी ४ बृह ता० १३ अगस्त—चांदी तेज होके मंदी ग्वार दिनमें तेज रातको सम।

सुदी ५ शु० ता० १४ अगस्त—चांदी मन्दी, ग्वार मटर मन्दे।

सुदी ६ शनि ता० १५ अगस्त—चांदी मन्दी, सरसों में घटबढ़ निकले। ग्वार तेज, मटर तेज।

सुदी ७ सोम ता० १७ अगस्त—ग्वार मटर तेज। चांदीमें लाइन निकलेगी।

सुदी ८ मं० ता० १८ अगस्त—चांदी मंदी, सरसों मन्दी, ग्वार मटर सम।

सुदी ९ बुध ता० १९ अगस्त—चांदी तेज होके मंदी, ग्वार मटर सम।

सुदी १० बृह० ता० २० अगस्त—चांदी मंदी, ग्वार मटर दिनमें सम रातको तेज।

सुदी ११ शु० ता० २१ अगस्त—ग्वार मटर दिनमें सम रात को तेज।

सुदी १२-१३ शनि ता० २२ अगस्त—ग्वार मटर मंदे।

सुदी १५ सोम ता० २४ अगस्त—चांदी मंदी, सरसों तेज।

—: सारांश :—

इस मास ५ सोमवार होनेसे आंखोंका रोग बढ़ेगा, सर्प आदि विषैले जानवरोंका उपद्रव होगा। इस मास चांदीमें घटा बढ़ी विशेष होगी। सरसों आदि तिलहन पदार्थोंमें ता० १७-१८ अगस्तसे मंदी चल पड़ेगी। अन्नादि पदार्थ वदी १० तक तेज रहकर मंदे हो जावेंगे। ग्वार मटरमें ता० २९ जुलाई दोपहर तक खरीदें। ता० १ अगस्तके दोपहर तक घटाबढ़ी के साथ तेजी रहेगी फिर ता० १ से १४ अगस्त तक घटाबढ़ी और तेजीके उछालोंके साथ मंदी। ता० १५से १७ तक तेज, फिर बादमें रुख मंदीका रहेगा। ऊपर जहां ग्वार मटरकी तेजी मंदीमें सम लिखा गया है वहां मंदी भी आ सकती है। चांदीमें इस मास इकतरफा लाइन चलेगी।

भादों मास

यह मास तेजी मन्दीके लिए अधिक महत्वपूर्ण रहेगा। अर्थात् इस मासमें प्रत्येक वस्तुमें विशेष तेजी मन्दी होगी। अन्नादि पदार्थ विशेषकर तेज ही रहेंगे। रुईमें इस मास तेजीका वातावरण रहेगा। ज्वरका प्रकोप बढ़ेगा। वर्षा साधारण होगी। गुड़, खांड, शक्कर, नमक आदि रस पदार्थ तेज ही होंगे। ग्वार, मटरकी चालू मन्दी ता० २८ अगस्तकी शाम या ता० ३० अगस्त तक चल सकेगी। ता० ३१ अगस्तसे ता० ४ या ७ सितम्बर तक तेज। फिर ता० १० से १३ सितम्बर तक इकतरफा लाइन बनेगी। ता० १४ से २३ सितम्बर तक घटाबढ़ी और तेजीके उछालोंके बाद मन्दी आवेगी। शेयर बाजारमें भी इस मास तेजी रहेगी। चांदी, सरसों ग्वार, मटरकी विशेष तथा दैनिक तेजी मन्दीके लिए पत्र डाल कर पूछिये।

आश्विन मास

इस मास ता० ३० सितम्बरके आसपास अच्छी वर्षा होनेका योग है, उसके पश्चात् साधारण रूपसे वर्षा होगी। इस मास भूकम्पका योग बन रहा है, अतः इस मास २ ३ मास पहिले या २ ३ मास पीछे तक भीषण भूकम्प अवश्य होगा। गुड़, शक्कर, खांड, नमक आदि रसादि पदार्थोंमें इक तरफा लाइन बनेगी। सरसों आदि तिलहन आदि पदार्थ ता० १३ तक तेजी फिर ता० १३ से १६ तक मन्दे फिर तेजी। चांदीमें कई बार इकतरफा लाइनें बनेगी। हिमालयकी चोटी पर चढ़े हुए भावोंमें एक बार मन्दीका झटका भी अवश्य आवेगा। ग्वार मटरमें ता० २४ से ७ अक्टूबर तक भाव साधारण घटा बढ़ीमें पड़े रहेंगे या मन्दी आना संभव है। ता० ८ अक्टूबरके बाद शनि अस्त विशेष घटाबढ़ी करेगा।



तैल और तिलहन बाजार का आगाही

[लेखक—श्री मनुभाई शाह]



[क] जिन दिनों बाजार तेजीमें जाने वाला हो वे दिन 'अच्छी तेजी' और 'तेजी' के सामने बताये गये हैं। और जिन दिनोंमें बाजार मंदीमें जाने वाला हो वे दिन 'मंदी' और 'अच्छी मंदी' के सामने बताये गये हैं। भविष्यकी तारीखोंकी तेजी मंदी भी दिनके भावके संबन्धमें समझनी चाहिए।

[ख] बाजार गौरसे देखते रहिये। वह दिन-ब-दिन लंबे समयकी तेजी या मंदीमें चढ़ता है उसे नियत कर लीजिये। [१] जो लम्बे समयकी तेजी चलती हो तो पहले लेकर बेचिए। [२] लम्बे समयकी मन्दी चलती हो तो पहले बेचकर खरीदिये। लम्बे समय की तेजी चलती हो तो पहले मत बेचिये। लम्बे समयकी मंदी चलती हो तो पहले मत खरीदिये।

अगस्त सन् १९५३ ई०

नीचे दिये हुए दिनोंमें बेचिये [मत खरीदिये] अच्छी तेजी।

तेजी ता० १, २, ४, ६, ७, १०, ११, १२, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६, २८, २९, ३०, ३१।

नीचे दिये हुए दिनोंमें खरीदिये [मत बेचिये]

मंदी ता० १३, १४, १८, १९, २४, २७, २८,

अच्छी मंदी ता० ३, ४, ५, ८, ९, १५, १६, १७,

नोटः—२२ जुलाई से बाजार मंदीमें जायगा, इस लिए बेचकर खरीदनेकी सूचना है। तेजीकी तारीखोंमें बेचना और मंदीकी तारीखोंमें खरीदना।

सितम्बर १९५३ ई०

नीचे दिये हुए दिनोंमें बेचिये। [मत खरीदिये]

अच्छी तेजी ता० २, ३, ४, ५, १२ १३, १४, १५, २१, २२, २३, २४,

तेजी ता० १, ६, ७, ८, १९, २०, २५, २६,

नीचे दिये हुए दिनों में खरीदिये। बेचिये मत।

[शेष पृष्ठ ४८ पर]

मंदी ता० ६, १०, ११, १६, १७, १८, २७, २८, २९, ३०,

अच्छी मंदी × ×

नोटः— ता० १ सितम्बरसे खरीदकर बेचनेकी सूचना है। मंदीकी तारीखों में खरीदना और तेजीकी तारीखों में बेचना।

[ग] जब आप खरीदनेकी इच्छा रखें तो मंदीकी तारीखोंमें ही खरीदना चाहिए।

[घ] जब आप बेचनेकी इच्छा रखें तो तेजी की तारीखोंमें ही बेचना चाहिए।

[च] आपको उपर तेजी-मन्दी' या 'मन्द तेजी' की तारीखोंके अनुसंधानमें पूरा करना चाहिए। उसका ख्याल रखिए। चाहे बाजारकी चाल आपके अनुकूल हो या प्रतिकूल।

[छ] एक ही तारीख दो जगह पर बताई गई हो। तो बाजार दो पहरको बदल जाएगा ऐसा समझ लेना। जो बाजार तेजीमेंसे मन्दीमें जा रहा हो तो पहले मन्दी और पीछे तेजी होगी ऐसा समझना। और मन्दीमेंसे तेजीमें जा रहा हो तो पहले तेजी और पीछे मन्दी होगी ऐसे समझ लेना।

[ज] यह आगाही ज्योतिष शास्त्रके आधारसे निकाली गई है और वह सिर्फ 'श्रीस्वाध्यायके' ग्राहकोंके मार्ग दर्शनके लिये ही है। यदि इससे ग्राहकोंको सन्तोष हुआ तो आगामी 'नववर्षाङ्कमें' विशेष अनुसंधान करके रुई चांदी आदि पर भी लिखा जाएगा।



क्या सम्भव है ?

[श्री 'सम्राट्']

क्या सम्भव है इस दुनियामें
सुखका सज्जनतासे नाता।

कंटक कंकर संकुल पथ पर
नग्न चरण मानवका चलना।
फिर भी सम्भव बच कर रहना
रक्तबिन्दु भी एक न बहना॥

कालकूट मिश्रित पय पीकर
शंक हीन दो घड़ियां सोना।
सम्भव क्या फिर भी उठ सकना
जीना अथवा विकल न होना॥

छिद्र समन्वित जीर्ण तरीसे
क्षुब्ध महासागरको तरना।
है क्या सम्भव तट पा सकना
धरा वक्ष पर फिर पग धरना॥

दावानलकी महाज्वालसे
जलती अति भीषण अटवीमें।
सम्भव क्या सोते पंगुका
जीते रह सकना जगतीमें॥

भग्न पंख दीना चिड़ियाका
श्येन राजका झपटा खाकर।
सम्भव क्या फिर भी बच सकना
जीते रहना गाने गाकर॥

द्रवण शील जो पर पीड़ासे
करुणा भूषित मानस पाकर।
ठगा न जाता इस दुनिया में
रहता होकर सुखका आकर॥

हन्त! मुझे कोई मिल पाता
उत्तर पृच्छाका मिल जाता।
क्या सम्भव है इस दुनिया में
सुख का सज्जनतासे नाता॥

त्रैमासिक व्यापार--रुख

[ले०—ज्योतिषाचार्य श्री गणेश, विद्यासागर शर्मा दैवज्ञ]

ता० २२ जुलाईको शनि नैपच्यूनकी युति होगी इसका प्रभाव मंदीका पहलेसे ही चालू हो गया है ।

ता० २३ शुक्र गुरु युति ता० २६ तक बाजारों में मंदी का जोश रखेगा। यहां और भी बहुतसे योग इस प्रकारके हैं कि ता० २१ से २६ तक चांदी ४) ४।।) सोना १) १।।) गुवार मटर शेयर ।।।) १) रुई, डिफर्ड, कालीमिर्च ३०) ३५) अलसी सरसों मूंगफली २) २।।) की मंदी लाकर रहेंगे। ता० २८ को शुक्र प्लूटोका त्रिएकादश योग बनेगा यह गिरे हुये भावोंको फिर उठाएगा, जहां भी बाजार मंदे दिखाई दें माल खरीदो, भाव फिर बढ़ जावेंगे, यह परिस्थिति ता० ३० तक रहेगी। यहां घटे भावोंमें खरीद हाथों हाथ नफा खाते रहना।

अगस्तका व्यापार-रुख

ता० १ को तेजी खेलना। ता० २ को बुध शुक्रका द्विर्द्वादश योग बनेगा। अतः ता० ३ को अच्छी तेजी हर वस्तु मात्र में समझो। ता० ४ से ६ तक प्रथम कुछ बाजार मंदे हो जायेंगे फिर धीरे धीरे तेजी हो जायेगी। ता० १० को तेजी खेलना, ता० ११ तेजी २ बजे तक रहेगी फिर थोड़े बाजार मंदे हो जायेंगे। ता० १२-१३ को दोनों तरफ बाजार चलेगा, यहां घटे भावोंमें माल पौते करना (खरीदना) अच्छा है। कारण ता० १४ को इस प्रकारका योग आ गया है जो अचूक तेजीका सूचक है। ता० २० तक हर घटे भाव खरीद करो और आये उछाले नफा खाते रहो भाव बढ़ेंगे परीचित चांस है। गरीब व्यापारी तेजीकी गजियां लगा दे अवश्य लाभ होगा। यह तेजी हर वस्तु मात्रमें चलेगी, होशियार को इशारा काफी होता है। ता० २१ से २६ तक आये उछाले मालका बेचाण करो भाव यहां घट जायेंगे कितने रुपमें यह पत्र व्यवहार द्वारा पूछना जो व्यापारी हमारे प्रधान कार्यालय श्रीस्वाध्याय सदन को २५) रु० भेजेंगे वे ही इस चांससे कमा लेंगे। ता० २७ से ३१ तक फिर बाजार तेजीकी लाइन पकड़ लेगा यहां ग्रहोंके अनुसार मंदी तो आती रहेगी लेकिन ठहरेगी नहीं, हर आये हुये मंदीके झटकेमें माल खरीद नफा बढ़ाते रहना अच्छा है।

सितंबरका व्यापार-रुख

ता० १ को तेजी। २ बजे तक तेजी रखना फिर मंदी आयेगी, ता० २ से ५ तक तेजी खेलना, यहां चांदी ३) ३।।) सोना, शेयर, गुवार, मटर १) १।) रुई अलसी सरसों मूंगफली बारदाना २) २।।) तेजी खेलना ता० १४, १५ को मंदी आयेगी, ता० १६ को कुछ मंदा आकर बाजार फिर बढ़ जायेगा। ता० १७ से २० तक दोनों तरफ चलता बाजार तेजी ही पकड़े रहेगा। लेकिन तेजी चलेगी धीरे धीरे यह तेजी ता० २५ तक बनी रहेगी। ता० २७ से ता० ३० के १२ बजे तक मंदी खेलना फिर बाजार तेज हो जायेंगे।

अक्टूबरका व्यापार-रुख

ता० १ से ३ तक अचूक परीचित चांस तेजीके हैं, नफा खाना। ता० ४ से १२ तक हर आये उछाले माल बेचो और नफा बढ़ाते रहो बेचकर लेने वाले को अच्छा लाभ होगा। ता० १३ से कुछ तेजी आकर फिर बाजार गिर जायेंगे। ता० १५ को गुरु देव मार्गी होंगे और भाव गिर पड़ेंगे। यह मंदी तारीख २० तक रहेगी अस्तु। शेष फिर आगामी 'नववर्षाङ्क' में।



व्यापारिक अनुभूत जनरल योग

[ले० — श्री पं० कृष्णदत्त शर्मा ज्योविंद्]

(१) ता० २१ जौलाई से २६ जौलाई तक मार्केटमें तेजीका बोल-बाला रहे, भाव स्टेडी रहें; परन्तु रुईमें निश्चय ही मंदी आवे।

(२) ता० २७ जौलाईसे ४-५ अगस्त तक बाजार ऊंचा-नीचा चलते मंदे आवे चांदीमें ८) १०) सोना ३) ४) सरसों २) ग्वार-मटरा १) मंदे हो जावें।

(३) ता० ५ अगस्तसे १३ अगस्त तक चांदी ४) ५) सोना २) २॥) तेज।

(४) ता० १४ अगस्तसे २१ अगस्त तक चांदीमें ८) १०) सोना ४) ५) सरसोंमें १॥) २) मंदा।

(५) ता० ५ अगस्तसे २० अगस्त तक ग्वार मटरा में २) २॥) की तेजी की लाईन बन रही है।

सावधान !

(६) ता० २१ अगस्तसे २१ अगस्त तक ग्वार मटरा के भावोंमें मंदा ही रहे ॥=) ॥।) का अधिक भी आ सकता है।

(७) ता० १ सितम्बर की खरीद सोना, चांदी, सरसों ग्वार, मटरा, रुई लाभकारक सिद्ध होगी क्योंकि ता० १० सितम्बर दोपहर १२-१ बजे के आसन्न ऊंचे भाव बन जायेंगे चांदी ५) ७) सोना ३) ४) रुई में १५) २०) प्रति खंडी सरसों २) गुवार-मटरा १) १।) प्रति मन स्टैपल में २) २॥) की तेजी का चांस है; हर मन्दे में खरीदने की राय है।

(८) ता० १० सितम्बर से ५ अक्टूबर तक घोर मंदी का दौर चालू होने वाला है सावधान रह कर व्यापार करने का समय है।

(९) ता० ६ अक्टूवर से १८ अक्टूवर तक तेजी की लाईन है।

इन तीनों मासोंमें वायदा भावोंमें आश्चर्यजनक तेजी-मंदी चालू होने जा रही है, आकाशमें ऊंचे उठे हुए भाव एक दम रसातलमें चले जावें तथा रसातलमें गए हुए भाव एक दम ऊंचे पहाड़ पर पहुंच जावें; अतः व्यापारी वर्गको इन तीन मासोंमें सावधानीसे व्यापार करना चाहिए। विशेषतया अनुभवी ज्योतिर्विद्की रायसे व्यापार करनेका समय है; क्योंकि समय निकलने पर पश्चात्ताप ही करना होगा।

हमारा विश्वास है कि चांदी में ऊंचा भाव १६७) यदि इसके आगे चला जाय तो १७२) और नीचेमें १२६) भाव, सोना ऊंचेमें ९५।।।) नीचेमें ७५।=) ग्वार नीचेमें ९) ऊंचेमें १३) मटरा नीचे में ११॥) ऊंचेमें १६) १६॥) सरसों ऊंचे २८।।।) नीचेमें २०) का भाव आना निश्चय हो रहा है, अतः इस तूफानी घट बढ़ के लिए शीघ्र चेतो। किसी अच्छे अनुभवी ज्योतिषीकी रायसे काम करो या 'श्रीस्वाध्याय सदन सोलन द्वारा २५) में हमारी रिपोर्ट प्राप्त करके लाभ उठावें।

त्रैमासिक अनुभूत रिपोर्ट

चांदी सोना रुई आदि की तेजी–मन्दी और जनरल चांस

[लेखकः—ज्यो० भू० श्री पं० गिरिधारी लाल जी शर्मा दैवज्ञभूषण]

प्रथम सप्ताह—

आषाढ़ शुक्ला १० मंगलवार ता० २१ से २६ जुलाई तक घटबढ़ रहेगी। तेजी होगी वह ठहरेगी नहीं। ता० २१ को घटके बढ़ेगा। ता० २२ को मामूली सी तेजी होगी। ता० २३-२४ दोनों मन्दी नहीं तो एक अवश्य होगी। ता० २५ को तेज होकर मन्दी होगी। ता० २७ से ३१ तक २–२॥) को मन्दी होगी। दो-तीन रुपयों की मन्दी होवे वहां व्यापार बदल दो। ता० २७-२८-३० में जरूर मन्दी होगी। ता० ३१ को बहुत घटबढ़ है।

दूसरा सप्ताह—

ता० १ से ६ अगस्त तक यहां ता० ५ तक एक तरफी तेजी रहेगी। घटे भाव बढ़े भाव खरीदना अच्छा है। ता० १-३-४ अवश्य तेज होगी। ता० ६ में मन्दी तेजी दोनों होगी। ता० ६-७ को घटबढ़ से मन्दी। ता० ८-६ को सामान्य या तेजी होगी १) १॥) की, यहांपर वायुका वेग रहेगा।

तीसरा सप्ताह—

ता० १० से १७ अगस्त तक ३ अच्छी मन्दी होगी। ३)४) की मन्दी होगी परन्तु ता० १३ से या १५ से मन्दी होगी। ता० १० को एक बार तेजी होगी, वहां बेचो। ता० ११ को घटबढ़से मन्दी होगी। ता. १२को २-२॥ बजे से तेजी होगी। ता. १३ के ३-४ बजे से १७ के ३-४ बजे तक घटबढ़ कितनी ही होवे आखीरमें अच्छी मन्दी होगी। ता० १५ को मन्दी रहे तों भविष्यमें ८ दिन मंदी रहेगी।

चौथा सप्ताह—

ता० १८ से २४ अगस्त तक बाजार में तेजी मंदी स्थिर नहीं रहेगी। दैनिक कार्य करना अच्छा है। ता० १८ को घटबढ़ से तेजी, १६ को मंदी, २०-२१को दो-तरफा लगावें। १२ बजे बाद घटबढ़ अच्छी होगी। ता. २२–२४ को तेजी होगी।

पांचवां सप्ताह—

ता. २५ से ३१ अगस्त तक एक ही ध्यान रखो तेजी का। घटे वहां खरीदो। ता. २५ को एक बार मंदी होगी, वहां खरीदो। ता. २६-२७-२६-३१ को अवश्य तेजी होगी।

छठा सप्ताह—

ता. १ सितम्बर से ता० ३ सितम्बर तक घटबढ़से मंदी होगी। बढ़े वहां बेचो, ता० १को तेजी होगी। एक बार वहां बेचो। ता. २ को सायंकाल बेचो। ता. ३ को अच्छी मन्दी होगी। ता. ४ से ८ तक तेजी होगी। ता. ४ को दोबार घटेगा दो बार ही बढ़ेगा, १ घण्टा से दूसरे समय घटने पर लेवें। ता. ५-६-७ को तेजी होगी। ता. ८ को घटबढ़ अच्छी होगी।

सातवां सप्ताह—

ता. ६ से १४ सितम्बर तक मन्दी। अगर ता. १४ को मंदी रहे तो २२ तक मन्दी। हमारा ध्यान मन्दीमें हैं, २) ३) मन्दी रहेगी। ता. १०की सायंकाल से १४ तक अवश्य मंदी होगी। दौतरफा लगावें। १४

आठवां सप्ताह—

ता. १५ सितम्बर को घटबढ़ होगी, बढ़े वहां बेचो।

ता० २१-२२ तक २) २॥) की मन्दी होगी। ता. १५-१६ को घटबढ़ से मंदी। ता. १६ को मन्दी होके तेजी होगी। ता. १७ की सायंकालसे २२तक अवश्य मंदी होगी। ता. १७-१८ में या २१-२२ में २ दिन अच्छी मन्दी होगी।

नौवां सप्ताह—

ता० २४ से ३० सितम्बर तक दैनिक नहीं लिख सके। जनरल ध्यान मंदा है। वैसे ७ अक्टूबर तक तेजी नहीं जंचती है, इसी ध्यानसे काम करते रहो।

दसवां सप्ताह—

ता० ८ अक्टूबरसे १७ तक अवश्य तेजी होगी २) ३ की। ता० ८-९ में कुछ मंदी होगी, वहां खरीदो। ता० १०-११-१२-१४ तारीखें तेजीमें रहेंगी प्रायः करके। अगर ता० १४ को तेजी स्थिर रह जावे तो ता० १७ तक अचूक तेजी होगी, नहीं तो ता०१७ को अचूक तेजी है ही।

३ मासकी जनरल राय तेजी मंदीका चान्स—

ता० २६ जुलाईसे ३१ जुलाई तक मंदी १) २॥) की। ता० १० से २१ अगस्त तक ३) ४) की मंदी और वर्षाकी भर मार रहेगी। पूर्व दक्षिणमें बाढ़ का प्रकोप रहेगा। शांति में अशांतिका वातावरण बनेगा। ता० २५ से ३१ अगस्त तक वर्षा का अभाव, लड़ाई दंगे में तेजी, सोना चांदी में अच्छीतेजी। लाल वस्तु मात्रमें तेजी। अग्निकांड भूकम्पका जोर। ता० ६ से २३ सितम्बर तक कितना ही बढ़ो बढने वालेको घटना पड़ेगा। कुछ वर्षा भी होगी।



❀ त्रैमासिक व्यापार विमर्श ❀

आधे-आधे सप्ताह वा ३॥ दिनका व्यापार रुख

[लेखकः— श्री पं० विहारीलालजी शर्मा दैवज्ञभूषण]

आषाढ़ शुक्ला १२ गुरुवार ता० २३ जुलाई प्रातः ६ बजे से ३॥ दिन में—

वस्तुतः सटोरियों और व्यापारियोंमें भावोंके मुताबिक रसा-कसी चलते रूईके रेटमें १५) २०) टके, ताता स्टील डिफर्ड शेयरके मूल्यमें ४०, ५०) टके, एरण्डाकी कीमत में ८) १०) टके, चांदीके मूल्यमें ४) ६) टके तथा सोनेके भावमें २) ३) टकोंका चक्कर पड़ना पाया जाता है।

ता० २४ शुक्रवार त्रयोदशीकी मितिमें चांदी और सोनाकी तेजी मन्दी सही पड़ने जा रही है। एरण्डा, शेयर तथा रुईका भुक्तान होने जा रहा है। जब दुतर्फा चढ़ाव-उतारका समय चल रहा है तो बिना किसी हिचकिचाहट के तेजी मन्दी लगा करके सौदा कीजिए। अगर हिम्मत पड़े तो खुला ले बेच करें या कराएं।

आषाढ़ शुक्ला १५ रविवार ता० २६ जुलाई शामके ६ बजेसे ३॥ दिनमें—

जब-जब आकाश मण्डलमें ग्रहणादि पर्व पड़ते हैं, तो भूमण्डल पर भी गर्व-खर्व होता है। कहीं भूचाल, कहीं बवंडर और खही कहीं वस्तुओंके भावमें जबरदस्त उल्टा पल्टी हुआ करती है। यहां पर भी ऐसा ही होगा।

श्रावण कृष्णा ४ गुरुवार ता० ३० जुलाई प्रातः ६ बजे से ३॥ दिन में—

ता० ३१ जुलाई शुक्रवारको शेयर बाजारमें बदला होने जा रहा है। इसी दिन रूई मार्केटमें क्लेरिंग कम्पलीट होने जा रही है। चलती मन्दीको सहयोग मिला है सस्ताई का। अतएव जिस वस्तुका भाव बढ़ा चढ़ा हुआ हो, ऐसे

वस्तुको बेचना या मन्दी लगा कर सौदा करना समझदारी का काम है ।

श्रावण कृष्णा ८ रविवार ता० २ अगस्त दिन के ५ से ३॥ दिन में—

रुई रेटमें ५) ७), डिफर्ड शेयरमें १५) २०), एरण्डाके मूल्यमें २) ३), चांदी १॥) २) और सोना ॥) ॥।) की तादादमें बढ़े, ऐसा पाया जाता है । चलती हुई मन्दीमें टेम्परेरी तेजीका प्रसंग आया है । तत्कालीन उछाले का जिस प्रकार उपयोग किया जाता है उसी प्रकार कर लें ।

श्रावण कृष्णा १२ गुरुवार ता० ६ अगस्त प्रातः ४ बजे से ३॥ दिन में—

यह समय साधारण चढ़ाव उतार का है । वस्तु चाहे बेचें, चाहे खरीदें भाव, बर-जरूर मिलेंगे । हिम्मत पड़े तो नजराना अवश्य खा लीजिये ।

श्रावणकृष्णा अमावस रविवार ता० ६ अगस्त दिनके चार बजेसे एक सप्ताहमें—

यहां डिफर्ड शेयरमें १५) २०) टके, रुई रेट में ८) १०) टके, एरण्डाके मूल्यमें ४) ६) टके, चांदीके भावमें २॥) ३) टके और सोनेके भावमें १) टकाकी तादाद में उछाला लेते तुरन्त घटेगा, ऐसा लगता है । जिस वस्तु के साथ आपकी रुचि हो, बीच वायदा बाजारमें हाजर रहते उछले भावमें बेचाण बोल दीजिए । मन्दीके रिएक्शनमें नफे के साथ सौदा सुलटाने में रहें ।

श्रावण शु० ६ रविवार ता० १६ अगस्त प्रातः ४ बजेसे ३॥ दिन में—

ग्रहोंकी तारतम्यता देखनेसे विदित होता है कि कोई एकाङ्गी निर्णय नहीं पाया जाता । अतएव मार्केटका टोन देख करके जो भी सहुलियत मालूम दे उसी ढंगसे सौदा कीजिए ।

श्रावण शु० १० गुरुवार ता० २० अगस्त प्रातः ४ बजे से ३॥ दिन में—

ताता स्टील डिफर्ड शेयरके भावमें ४०) ५०) तथा रुईके मूल्यमें १५) २०, एरण्डाके प्राइसमें ५) ७) तथा चांदीकी कीमतमें ३) ४), सोना १॥) २) की तादादमें घट बढ़ चलते नितान्तमें तेजी आना पाया जाता है । बहुत समय बाद इकतर्फा तेजीका संयोग मिला है । अतएव वस्तु खरीदें या तेजी लगाइये । गली लगाना न चूकिए । चांस परीचित और पक्का है ।

श्रावण शु० १४ रविवार ता० २३ अगस्त दिन के ११ बजे से ३॥ दिन में—

यहां रुईकी रेटमें १५) २०), ताता डिफर्ड शेयरके भावमें ३०) ४०) एरण्डाके मूल्यमें ४) ६), चांदीके भावमें २) ३) और सोनेमें १) १॥) की तादादमें दुतर्फा घट बढ़ चलेगी । समय पूर्ण सावधानी से तिकालने का है । स्थायी योग मन्दीके तथा यायी योग तेजीके सम्पन्न हुए हैं । अतएव वस्तुओंके भावोंमें किसी चीजका भाव घटेगा और किसीका बढ़ेगा । हमारी सलाहके साथ साथ मार्केट का टोन देखते घटे भावकी वस्तु खरीदें और बढ़े हुए भावों की वस्तु बेचते व्यापारको सुलटते रहें । साधारण व्यापारियोंका कर्त्तव्य है कि नजराना लगवाकर पेटामें लेवा-बेची का प्रयास करें ।

भाद्रपद कृ० २ बुधवार ता० २६ अगस्त रातके ११ बजे से ३॥ दिन में—

यह बात तो मानी हुई है कि समय घटा-बढ़ीका है । अतएव हिमम्त पड़े तो खुली ले बेचके सौदे कीजिएगा, अन्यथा तेजी मन्दी लगाकर व्यापार करें । भाव जरूर मिलेगा ।

भाद्रपद कृष्णा ६ रविवार ता० ३० अगस्त दिन के १ बजे से ३॥ दिन में—

त्यौहारोंका प्रसंग देखते मार्केट प्रायः बन्दसे रहेंगे । ताकि व्यापार करने या कराने का अवसर न भी मिले । फिर भी यदि आपको कुछ करना ही है तो मार्केट का टोन देख कर कर लीजिए ।

भाद्रपद कृ० १० बुधवार ता० २ सितम्बर प्रातः ४ बजे से ३॥ दिन में—

बहुमत तेजीका पा [illegible] ता है । तातास्टील डिफर्ड शेयरके भावमें २०) ३०), रुईकी रेटमें १०) १५), एरण्डा

के मूल्यमें ५) ७), चांदीकी कीमतमें ३) ४) तथा सोनेके भावमें १॥) २) टके बढ़ना पाया जाता है। यहां एक तर्फा तेजीका संकेत मिला है अतएव जिस वस्तुमें आपकी रुचि हो उसे खरीद लें। या तेजी लगवाकर चांस साध लीजिए।

भाद्रपद कृ० १३ रविवार ता० ६ सितम्बर रात के ६ बजे से ३॥ दिनमें—

समय घटा बढ़ीका चल रहा है किन्तु व्यापारी समुदाय धार्मिक व्रतोत्सवमें तल्लीन हैं। फिर भी समय और साधन मिले तो वस्तु खरीदकर बेचने का प्रयास करें।

भाद्रपद शु० १ बुधवार ता० ९ सितम्बर शाम के ६ बजे से ३॥ दिनमें—

द्वितीया गुरुवारको ४५ मुहूर्त उत्तर शृंगोन्नतिमें चन्द्र दर्शन देगा। शनिनेपचूनका इत्थशाला होने जा रहा है। परिणाम—चलती हुई वस्तुओंकी तेजीमें अनायास मन्दी आना पाया जाता है। जबकि चलती हुई तेजीमें मन्दीका संकेत मिला है तो प्रत्येक उछालेमें वस्तु बेचकर रिएक्शन में नफेके साथ सौदा सुलटनेमें रहें। बार २ तारुणी सुधारना न भूलें।

भाद्रपद शु० ५ रविवार ता० १३ सितम्बर प्रातः ४ बजे से ३॥ दिनमें—

वस्तुओंके भाव टिके हुए रहें। चांदीके भावमें मन्दी का असर मालूम देगा। ग्रहगणनामें और योग संयोगमें जब कोई खासियत दिखाई नहीं पड़ती है तो व्यापारकी सलाह बतायें भी तो क्या? आपको जैसा उचित लगे करें करावें।

भाद्रपद शुक्ला ८ बुधवा ता० १६ सितम्बर दिन के १ बजे से ३॥ दिन में—

राजनैतिक खबरोंमें उल्टी-सीधी बातें सुनाई देंगी। व्यापारियोंमें चहुँओर घट बढ़की चर्चाएं चलेंगी। यहां वस्तुओंके भाव घटने और बढ़ने की सलाह मिली है ताकि व्यापारीका कर्त्तव्य है कि अपनी रुचि अनुसार वस्तुएं खरीदें या बेचें और बार २ तारुणी करते रहें।

भाद्रपद शु० ११ शनिवार ता० १९ सितम्बर रात ११ बजे से ३॥ दिन में—

टाटा स्टील डिफर्ड शेयरके भावमें ३०) ४०), रुई रेटमें १०) १५), एरण्डाके मूल्यमें ४) ५), चांदीमें २)३) और सोने के भावमें १) १॥) का चक्कर पड़ना प्रतीत होता है। जहां चक्कर वक्करका प्रसंग आता है वहां समझदार व्यापारी खुला सौदा न कर, नजराना लगवाकर व्यापार किया करते हैं। पूंजीपतियों से पैसे कमानेका यही प्रासंगिक अवसर है।

भाद्रपद शु० १५ बुधवार ता० २३ सितम्बर दिन के ९ बजे से ३॥ दिनमें—

जब २ ऐसे प्रसंग आते हैं वायदा बाजारोंमें एकाएक हलचल मच जाती हैं। व्यापारी जागृत रहें।

आश्विन कृष्णा ४ शनिवार ता० २६ सितम्बर रात के ८ बजे से ३॥ दिन में

रुई रेटमें ८) १०), शेयरके भावमें, २०) ३०), एरण्डाके भावमें २) ३) तथा सोनेके प्राइसमें १॥) २) की घटा बढ़ीका चलना पाया जाता है। योग परीक्षित और पक्का है। यह समय घटा-बढ़ीके साथ साथ तेजीकी तमन्ना वाला है। अतएव किसी वस्तुका खरीद करें, किसीका नजराना लगायें। घटे भावमें परचेज करते हुए बढ़े भावमें डबल शेलिंग करना न भूलें। चांस परखा हुआ है।

आश्विन कृष्णा ८ बुधवार ता० ३० सितम्बर प्रातः ५ बजे से ३॥ दिन में—

शुक्र पूर्वाफाल्गुनी पर आया, बुध नेपच्यूनकी युति हुई है। बुध तुला राशि पर आरूढ़ हुआ। बुधाष्टमीका प्रसंग उपस्थित हुआ है। परिणाम— जब-जब ऐसे प्रसंग आये हैं तब-तब बाजारोंमें मन्दीकी हवा रही है। यहां पर भी भरपूर सस्ताईका आना प्रतीत होता है। ग्रहों की स्थितिसे प्रतीत होता है कि महंगाई भी अपना रङ्ग जमायेगी। अतएव ऊपर-नीचेके तथा आगे पीछेके बनावों को देखते प्रतीत होता है कि वायदा बाजारोंमें ताता स्टील

डिफर्ड शेयर, रुई, एरण्डा तथा सोना चांदीके भावोंमें भरपूर चढ़ाव-उतार प्रतीत होता है। यह समय घटा बढ़ीके साथ सस्ताईका संकेत दे रहा है। ऐसे अवसर पर बढ़े हुए भावोंकी वस्तु बेचना न भूलें, अगर तो मंदी लगवाकर सौदा नफा में सुधारने का प्रयास करें।

अश्विन कृष्णा ११ शनिवार ता० ३ अक्टूबर दिन के ३ बजे से ३॥ दिन में—

यहां चढ़ाव-उतारके साथ संकेत मंहगाईका मिला है। अतएव घटे भाव वस्तु खरीद करते उछालेमें व्यापार को सुलटाते जायें।

अश्विन कृष्णा १४ मंगलवार ता० ६ अक्टूबर रातके ११ बजे से ३॥ दिन में—

ताता स्टीलडिफर्ड शेयरके भावमें ४०) ५०), रुई रेटमें १५) २०), एरण्डाके मूल्यमें ५) ७), चांदीके भाव ४) तथा सोनाके भावमें २) ३) टकों का उछाला आना पाया जाता है। चांस परीक्षित है।

आश्विन शुक्ला २ शनिवार ता० १० अक्टूबर दिन के ६ बजे से ३॥ दिन में —

सूर्य चित्रा पर आया, शुक्रने उत्तराफाल्गुनीको अंगीकार किया, शुक्र कन्या राशिको स्पर्श करने जा रहा है। परिणाम—जब-जब ऐसे प्रसंग आते हैं तब तब वस्तुओंमें रुई के भावमें तेजी तथा चांदीके मूल्यमें मंदी आया करती है। अन्य वस्तुओंके भावमें घटा बढ़ी चलें।

आश्विन शुक्ला ५ मंगलवार ता० १३ अक्टूबर प्रातः ४ बजे से ३॥ दिन में—

रुईके भावमें ८) १०), ताता स्टीलडिफर्ड शेयरके मूल्य में २५) ३०), एरण्डाके भावमें ४) ५), चांदीके मूल्य में २) ३) तथा सोनाके भावमें १॥) २) टकोंका चढ़ाव-उतार चलना पाया जाता है। घटा बढ़ीके साथ-साथ बहुमत मंदीका ही पाया जा रहा है। अतएव बढ़े भाव की वस्तुओंको बेचें, अगर तो मंदी लगवाकर बार २ तारुणी करनेका प्रयास करें।

आश्विन शुक्ला ६ शनिवार १७ अक्टूबर प्रातः ४ बजे से ३॥ दिन में—

यहां सस्ताईका संकेत मिला है। अत एव हमारे संकेत के साथ २ मार्केट में हवा मंदीकी जान पड़े तो बिना किसी ननुनचके वस्तु बेचकर व्यापार कीजिए। अगर तो मंदी लगायें।



त्रैमासिक पर्वव्रतादि निर्णय

['श्रीविश्वविजयपञ्चाङ्ग' से]

आषाढ़ शुक्ला १० मंगलवार ता० २१ जुलाई श्रीस्वाध्यायसदन स्थापना दिवस श्री१०८ अमृतवाग्भवाचार्य जन्मोदिनो-[त्सव

११ बुधवार ता० २२ " देवशयनी एकादशी व्रत, चातुर्मास्यव्रतारम्भ ।

१३ शुक्रवार ना. २४ " प्रदोष व्रत

१५ रविवार ता. २६ " व्यास १५ श्रीगुरुपूजा वायुपरीक्षा ध्वजारोपण, चन्द्रग्रहण, सत्यव्रत ।

श्रावण कृष्ण ३ बुधवार ता. २९ " श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे.टा. ९।१४ ।

६ शुक्रवार ता. ३१ " श्री लोकमान्य तिलक जयन्ती ।

११ बुधवार ता. ५ अगस्त कामिका एकादशीव्रत

१२ गुरुवार ता. ६ " प्रदोष व्रत ।

३० रविवार ता. ९ " अमावस्या ।

श्रावण शुक्ला २ मंगलवार ता. ११ " चन्द्रदर्शन ।

३ बुधवार ता. १२ " श्रावणीतीज मधुस्रवा संधारा ३

५ शुक्रवार ता. १४ " नागपंचमी ।

५ शनिवार ता. १५ " भारतीय स्वतन्त्रता दिवस ।

६ रविवार ता. १६ " सिंह संक्रान्ति पुण्यकाल मु०१ ५

७ सोमवार ता. १७ " श्री तुलसी जयन्ती ।

८ मंगलवार ता. १८ " मेला श्री नयनादेवी व चिन्त्यपूर्णी ।

११ शुक्रवार ता. २१ " पवित्रा एकादशीव्रत ।

१२ शनिवार ता. २२ " शनिप्रदोषव्रत ।

१४ सोमवार ता. २४ " ऋषितर्पण श्रावणी१५उपाकर्म, सत्यव्रत रक्षाबन्धन मध्याह्नोत्तर स्टे.टा.३।३५-[उ०, अमरनाथ काश्मीर यात्रा

भाद्रपद कृष्णा २ बुधवार ता. २६ " कज्जली ३ चन्द्रोदय व्यापिनी ।

३ गुरुवार ता. २७ " श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे. ठा. ८।२०

८ सोमवार ता. ३१ " श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रत चन्द्रोदय स्टे. टा. ११।२४

९ मंगलवार ता. १ सितम्बर गुग्गानवमी श्रीरामानन्दाचार्य जयन्ती ।

११ गुरुवार ता. ३ " अजा एकादशीव्रत स्मार्त्त गृहस्थोंके लिए

१२ शुक्रवार ता. ४ " अजा एकादशी व्रत विरक्त वैष्णवोंके लिए, गोवत्सा १२

१२ शनिवार ता. ५ " शनिप्रदोष व्रत ।

१३ रविवार ता. ६ " जैनपर्युषण व्रतारम्भ ।

भाद्रपद कृष्णा ३० मंगलवार ता. ८ सितम्बर कुशोत्पाटिती अमावास्या

भाद्रपद शुक्ला २ गुरुवार ता. १० " चन्द्रदर्शन ।

मास पक्ष	तिथि वार	ता.	मास	पर्व
भाद्रपद शुक्ल	३ शुक्रवार	ता. ११	सितम्बर	हरितालिका ३ व्रत श्रीवाराह जयन्ती
	४ शनिवार	ता. १२	”	पत्थरचौथ चन्द्रदर्शन निषिद्ध चन्द्रास्त स्टे. टा. ८।३६ महापर्युषण व्रत [समाप्ति जैन संववत्सरी ।
	५ रविवार	ता. १३	”	ऋषि ५जैनपारणा ।
	६ सोमवार	ता. १४	”	श्रीबलराम जयन्ती हलधर ६
	७ मंगलवार	ता. १५	”	सूतड़ा ७ मुक्ताभरण ७ जन्मोत्सव श्री १०५ मान् वपाटनरेश
	८ बुधवार	ता. १६	”	श्रीराधाष्टमी श्रीदधीचि जयन्ती कन्यासंक्रान्ति मु० १५
	९ गुरुवार	ता. १७	”	श्रीचन्द्र ९ उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव ।
	११ शनिवार	ता. १९	”	पद्मा (जलझूलनी) एकादशी व्रत ।
	१२ रविवार	ता. २०	”	प्रदोषव्रत वामन द्वादशी मेला अम्बाला व पटियाला ताजिया ।
	१४ मंगलवार	ता. २२	”	अनन्त १४ व्रत प्रौष्ठपदी श्राद्ध, सत्यव्रत ।
	१५ बुधवार	ता. २३	”	महालय (पितृपक्ष) श्राद्ध प्रारम्भ
आश्विन कृष्णा	४ शनिवार	ता. २६	”	श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय स्टे. टा. ८।२४
	१० शुक्रवार	ता. २	अक्टूबर	श्रीमहात्मा गांधी जयन्ती ।
	११ शनिवार	ता. ३	”	इन्दिरा एकादशीव्रत ।
	१३ सोमवार	ता. ५	”	सोमप्रदोष व्रत ।
	३० बुधवार	ता. ७	”	सर्वपितृ अमावस महालय श्राद्ध समाप्तिः, गजच्छायापर्व २।४५ उप.
आश्विन शुक्ला	१ गुरुवार	ता. ८	”	शारद नवरात्रारम्भ, घटस्थापन मातामहश्राद्ध
	२ शुक्रवार	ता. ९	”	चन्द्रदर्शन ।
	६ बुधवार	ता. १४	”	श्रीसरस्वत्यावाहन ।
	७ गुरुवार	ता. १५	”	श्रीसरस्वती पूजन ।
	८ शुक्रवार	ता. १६		श्रीदुर्गाष्टमी महाष्टमी सरस्वती बलिदान तुलासंक्रान्ति पुण्यकाल अगले दिन मु० ३.
	९ शनिवार	ता. १७	”	महा ९ विजयादशमी मेला दशहरा अपराजितापूजन शमीपूजन राजचिन्ह पूजा ।



[पृष्ठ ६४ का शेष]

मिल जायगा । ता०१५को पुनः रियेक्शन]मन्दीका रहेगा। घटे भावोंमें फिरसे खरीदो, ता.१७को४बजेतक लाभ उठावें । ता० १८ को डबल बेचो, ता०२२तक अच्छी मन्दी । यहां तेजी मन्दी दोनों के साप्ताहिक पाक्षिक मासिक, नजराना लगाना अत्यन्त लाभकारी रहेगा। इस सप्ताहमें ग्रह-योग नवीन क्रान्ति पैदा करने वाले हैं। भारत व पाकिस्तानके ग्रहयोग व्यापार समझौतेको विशेष महत्व देने वाले हैं। इस कारण चान्दी, सोना, रुई स्टील, बारदानाके भावोंमें गिरावट होगी, इस मन्दीके उत्पात से बचकर लाभ उठानेका सुवर्ण चांस है। हमारी धारणा ता० १४ तक तेजी में रहेगी और ता० १५ के ४ बजेसे मन्दीकी ओर जाती है। इस लिए आप ता० १४।१५ के ४ से ६ तक मन्दीके साप्ताहिक नजराने लगाकर व्यापार करें। ईश्वरको लाभ देना है तो सोते हुए भाग्यको जगा कर लक्ष्मीका आगमन हो जायगा।



दैवज्ञकी दृष्टिमें संसार-चक्र

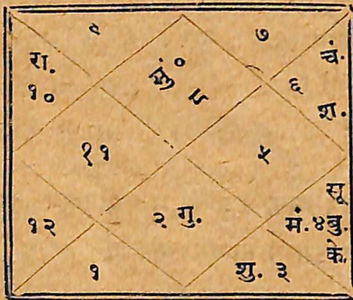
स्वतन्त्र भारतके सातवें वर्षका भविष्य

गुरु शुक्र युद्ध और रोहिणी शकट-भेदका संसारपर प्रभाव

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य]

श्रावण शु० ४ शुक्रवार ता० १४ अगस्त १९५३ को इष्ट घट्यादि १८।२६ पर वृश्चिक लग्नमें सौरमानसे भारतको स्वतन्त्र हुए ६ वर्ष पूर्ण होकर सातवां वर्ष प्रवेश हो रहा है, उस समयकी ग्रहस्थिति निम्न है—

स्वतन्त्र भारतका सातवां वर्षलग्न



लग्नेश मंगल राज्येश सूर्यके साथ नवममें है, धनेश पंचमेश गुरु केन्द्रस्थ होकर लग्नको देख रहा है, मुन्था भी लग्नमें है और तृतायेश चतुर्थेश शनि लाभ में है अतः इस वर्ष राज्यसत्ताकी ओरसे भारतीय प्रजा की सुख समृद्धि एवं समुन्नतिके लिए व्यापक प्रयत्न किये जावेंगे। भ्रष्टाचार और अन्यायको रोकनेके लिए भरसक प्रयत्न होंगे। लग्नेश राज्येश सूर्यमंगलकी भाग्येश प्रजासत्तात्मक चन्द्रमा पर पारस्परिक मित्रदृष्टि तृतीयैकादश योग बन रहा है, यह आरम्भमें सब वर्गोंमें सहयोग सद्भावनाकी वृद्धि करेगा। परन्तु, वर्षेश मंगल अस्तङ्गत नीचका होकर नवममें गया है, गुरु चलितमें अष्टम, और चन्द्रमा द्विस्वभावराशिमें शनिसे पीड़ित होनेके कारण शासकवर्ग एवं प्रजाका चित्त उद्विग्न वा एक दूसरेसे सशङ्क रहेगा। हार्दिक सहयोग न होनेसे अन्तमें प्रगतिमें बाधा पड़ेगी और मंगलके कारण आगे संघर्ष जैसी स्थिति उत्पन्न हो जायेगी। वर्षके उत्तरार्ध में पारस्परिक मतभेद उग्र होकर क्रान्तिकी सम्भावना है। नेताओंकी वाणी और कर्ममें सामञ्जस्य नहीं होगा। लिखा भी है—

पापबुद्धिर्भवेद्राज्ञामुद्वेगो विभवक्षयः।
कलहो बन्धुवर्गैश्च नवमे धरणीसुते॥

गुरु-शुक्र युद्धका परिणाम

अभी आषाढ़ शु० १२ गुरुवारको नभोमण्डलमें वृषराशिस्थ गुरु-शुक्रका युद्ध होगा। इस युद्ध में देवगुरु बृहस्पतिको दैत्याचार्य शुक्र पराजित कर रहे हैं, यह संसारके ज्ञान सुख शांति एवं आदर्श आर्य नीति पर अनार्य कूटनीतिकी विजय है। इससे ज्ञात होता है कि अभी संसार विश्व-कल्याण कारिणी उदार आर्य नीतिको हृदयसे नहीं अपनायेगा। धूर्ततापूर्ण कुटिल नीति द्वारा मात्स्यन्यायसे बड़े राष्ट्र छोटे राष्ट्रों को और सबल-बड़े पुरुष निर्बल छोटे प्राणियोंको पद-दलित करनेका प्रयत्न करते रहेंगे, इससे अशान्ति बढ़ेगी। वर्षेश मंगल स्वयं शत्रुस्थानाधिपति होकर भाग्य में नीचका गया है, अतः इस वर्ष भारतका कोई आदर्शवादी आत्मीय पुरुष ही ऐसा कार्य कर बैठेगा जिसे 'आत्मघात' या 'पैरों पर कुल्हाड़ी मारना' कहा जायेगा। लिखा भी है—

भौमे लग्नाधिपतौ सर्वविरोधी विवादकृद्रोगी च।
"दुष्टाद्भयन्निजजनाद्धनधान्यनाशः।"

शासनमें पक्षपातपूर्ण नीतिके कारण अयोग्य अनार्य व्यक्ति अधिकारारूढ़ हो कर प्रजाका शोषण करेंगे। राजनैतिक विषयोंमें जो पारस्परिक वार्ताओंमें वचन

(वायदे) दिये जावेंगे और समझौते होंगे उनपर अन्त तक अडिग नहीं रहा जायेगा। आदर्शवादी आर्य पुरुषोंको धूर्त अनार्य लोगों द्वारा कूटनीतिकी गहरी मायाजालमें फंसाकर धोखा दिया जावेगा। भारत अनादिकालसे आदर्शवादी आर्यराष्ट्र रहा है अतः यहां के तत्वदर्शी मनीषियोंको इस अवधिमें ऐसे मित्रवेषी शत्रुओंके कुचक्रसे सदा सतर्क रहना आवश्यक है। काश्मीर समस्या आरम्भमें तो एक बार पारस्परिक स्नेह सद्भावना एवं सहयोगके द्वारा सुलझती प्रतीत होगी, परन्तु १५ अगस्तके बाद पुनः काश्मीर समस्या चिन्ता का कारण बनेगी। और वहांकी आर्य जनतामें अशांति व्यापेगी। काश्मीरके सम्बन्धमें हम आज से ६ वर्ष पूर्व जो लिखते आ रहे हैं वही होकर रहेगा अर्थात् अखण्ड काश्मीरके लिए भारतका बलिदान सफल नहीं होगा। ग्रहस्थिति अभी काश्मीरके लिए शांतिकारक प्रतीत नहीं होती। आषाढ़ शु० में गुरु शुक्र योग और श्रावण कृष्ण अमावस्याको कर्क राशिमें सू० चं० मं० बु० के० का योग संसारमें गृहयुद्ध वा कहीं अतिवृष्टि तो कहीं अनावृष्टिसे विनाशका सूचक है। यथा—

गुरुशुक्रौ यदैकस्थौ गृहयुद्धं तदा भवेत्।
अकाले वा भवेद् वृष्टिर्जगत्यां नात्र संशयः॥
एकराशौ यदा यान्ति चत्वारः पंचखेचराः।
प्लावयन्ति महीं सर्वां रुधिरेण जलेन वा॥

इस वर्षमें आधिदैविक अधिभौतिक उत्पात अधिक होंगे। आषाढ़ श्रावणमें अतिवृष्टिसे कई प्रान्तोंमें हानि होगी। भाद्रपद शु० और आश्विनमें कई प्रान्तोंमें वर्षावरोधसे खेतियोंको हानि पहुंचेगी। वर्षेश मंगल अस्तङ्गत है अतः किसी प्रधान पुरुषका भाग्य-भास्कर अस्ताचलकी ओर अग्रसर होता दिखाई देगा। दुर्घटनाएं अधिक होंगी। बड़े नगरों कारखानों और कुछ सरकारी संस्थाओंमें श्रमिक वर्गमें असन्तोष बढ़ेगा। प्रजाका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पतनोन्मुख होगा। व्यभिचार घूसखोरी चोरी डाके हत्याकाण्ड आदि घटनाएँ अधिक होंगी। बेकारी बढ़ेगी। आर्थिक स्थिति संकटापन्न होगी। तृतीय भावमें राहु और तृतीयेश शनि लाभमें उच्चाभिलाषी है यह भारतीय प्रजाके उत्साह एवं शौर्यको बल प्रदान करता है और सब प्रकारके संकटोंका प्रतीकार करनेके लिए भारतीय प्रजाको सन्नद्ध रखता है। चतुर्थेश शनि उच्चाभिलाषी है अतः भूमि सुधार ग्रामसुधार नये बांध, सड़कों नहरोंके विस्तार और उपज वृद्धिके लिए नवीन योजनाएँ बनेंगी, परन्तु शनि चलितमें १२ वें गया है अतः इन योजनाओंमें अपव्यय अधिक होगा। कहीं अर्थाभाव, कहीं अनुभवी त्यागी कार्यकर्त्ताओंके अभाव तथा कहीं प्रकृति प्रकोपसे योजनाएँ पूर्ण रूपसे सफल न हो सकेंगी। भूमिधर और सामन्तोंमें तीव्र असन्तोष फैलेगा। राजस्थान, मध्यभारत, पंजाब, पेप्सू, बंगाल और मद्रास प्रान्तोंमें राजनैतिक उलट फेर होंगे। राजस्थानमें अवैध कार्यवाहियाँ अधिक होंगी, छोटे बड़े सामन्तोंकी समस्या चिन्ताका कारण बनेंगी। मंत्रिमण्डलमें भयानक गतिरोध उत्पन्न होगा। शासनसे जनता असन्तुष्ट होगी। पञ्चमेश गुरु अष्टमभावमें है अतः भारतके किसी बड़े शिक्षा शास्त्री वा शिक्षामन्त्रीकी मृत्यु होगी। शिक्षकों और विद्यार्थियोंमें असन्तोष बढ़ेगा। वर्षके उत्तरार्धमें (माघ या फरवरी) से आगे भारतको अनेक विषम समस्याओंका सामना करना पड़ेगा, फिर भी एक बात सन्तोषकी यही है कि चलितमें सूर्य राज्य भावमें सिंहका बलवान् हो गया है, यह भारतीय जन-राज्यको सुदृढ़ और स्थिर बनाये रखेगा। और सिंहकी भांति सभी प्रकारकी विषम-स्थितियोंका सामना करनेके लिए भारतीय प्रजा सन्नद्ध रहेगी।

रोहिणी शकटभेद

इस वर्ष आषाढ़ शुक्लपक्षमें शुक्रने रोहिणी शकटका भेद किया है। इसका उल्लेख हम अपने 'श्रीविश्वविजय-पंचांग'में भी कर चुके हैं। नभोमण्डलमें शकटाकार रोहिणी नक्षत्रके ५ प्रकाशमान् तारोंके ठीक नीचे होकर (क्रास करके) जब कोई ग्रह निकलता है तो उसे रोहिणी शकटभेद कहा जाता है। वैसे तो रोहिणीनक्षत्र

पर सभी ग्रह आते रहते हैं, परन्तु वे अपने कक्षावृत्तमें दक्षिणोत्तर शरकी न्यूनाधिकतासे कभी रोहिणीनक्षत्र शकटसे उत्तरमें और कभी दक्षिणमें होकर निकल जाते हैं, अतः रोहिणीमें ग्रहके होने पर भी वह शकटभेद नहीं माना जाता। शकट भेदका नियम यह है कि जब ग्रह वृषभ राशिके १३॥ अंश पर हो और उस समय दक्षिण शर १२० कला (२॥ अंश) से ऊपर हो तब रोहिणीशकट भेद होता है। यथा—

"सदलरामयुगांशमिते ग्रहे यदि खतिथ्यधिको यमदिक् शरः। स शकटं च भिनत्ति………।"

सूर्यसिद्धान्तकारने वृषके १७ अंश पर ग्रहके दो अंशसे अधिक शर होने पर रोहिणी शकटभेद माना है—

"वृषेसप्तदशेभागे यस्य याम्योंऽशकद्वयात्।
विक्षेपोऽभ्यधिको भिन्द्याद्रोहिण्याः शकटं तु सः॥"

प्राचीन एवं अर्वाचीन दोनों मतसे आषाढ़ शुक्लमें रोहिणी-शकट भेद निश्चित है। प्रकाशमान् शुक्र तारा को प्रायः सभी लोग पहचानते हैं। इस वर्ष आषाढ़ मास में यह तारा सूर्योदयसे पहले प्रातः ३॥ बजे पूर्व क्षितिज में उदय होता है। बहुतसे वयोवृद्ध पुरुष और ग्रामीण लोग रोहिणी नक्षत्रके शकटाकार ताराओंको भी पहचानते हैं। यह शकटभेद चमत्कार भारतमें ता० १५ जुलाई १९५३ बुधवारको सूर्योदयसे पहले स्टैंडर्ड टाइम ४ बजेके लगभग दिखाई देगा। उदय होता हुआ प्रकाशमान शुक्र रोहिणी शकटमें प्रवेश किया हुआ दिखाई देगा। रात्रिके १ बजे से प्रातः ६ बजे तक शुक्र रोहिणी शकटमें रहेगा। भारत और सुदूरपूर्वीय देशोंमें जहां आकाश निर्मल होगा वहां यह चमत्कार सर्वत्र दिखाई देगा।

रोहिणी-शकट-भेदका परिणाम

रोहिणी-शकट-भेद योग सैंकड़ों वर्षोंके बाद कभी आता है और जब कोई भी ग्रह रोहिणी शकटको भेदन करता है तो संसारपर उसका बहुत [illegible]रा प्रभाव पड़ता है, ऐसा प्राचीन आचार्योंका अनुभ[illegible] है। शनि मंगलका रोहिणी शकटभेद तो महाविनाशक माना गया है। भगवान् रामके समयमें शनि मंगलने रोहिणी शकटभेद किया था तब राम-रावण युद्ध हुआ। महाभारत युद्धसे पूर्व भी शनि मंगलने रोहिणी शकटका भेद किया था। यद्यपि शुक्रका फल शनि मंगल जैसा महाविनाशक नहीं है तथापि शुक्र संसारमें व्यभिचार (अनाचार) की वृद्धि करके कहीं युद्ध उत्पात पारस्परिक संघर्ष, कहीं अतिवृष्टि अनावृष्टि दुर्भिक्ष, तो कहीं भूकम्प महामारी आदिसे संसारको त्रस्त अवश्य करता है। आचार्य श्रीवराहमिहिरने अपनी बृहत्संहिताके शुक्रचाराध्यायमें शुक्रके रोहिणी शकटभेद करनेका फल यों लिखा है—

प्राजापत्ये शकटे भिन्ने कृत्वेव पातकं वसुधा।
केशास्थि शकलशवला कापालिकमिव व्रतं धत्ते॥

पूर्व रेखांश १५ से ९० पर्यन्त इस शकटभेदका अनिष्ट परिणाम प्रायः ३ वर्ष तक उत्तरोत्तर अधिक रूपमें दृष्टिगोचर होता रहेगा। इन रेखाओंमें रशिया, यूरोप, अफ्रीका, जर्मनी, पोलेण्ड, स्वीडन, नार्वे, जेकोस्लोवाकिया, लीथुआनीया, आस्ट्रिया, हंगरी, लटेविया, पेलेस्टाइन, ग्रीस, अफगानिस्तान, तुर्किस्तान, पाकिस्तान, ईरान, ईराक, केनिया, एडन, फिनलैंड, ब्रिटिश सुमाली लेण्ड, डेन्मार्क, सीरिया, चीन, जापान, कोरिया, मारीशस, मलय द्वीप, भारत और श्रीलंका आदि पड़ते हैं, अतः उक्त राष्ट्रोंकी सुख शान्तिमें बाधा उपस्थित होकर जनता त्रिविध तापोंसे सन्तप्त रहेगी। आषाढ़ शु० ११ ता० २२ जुलाईको कन्या राशिमें शनि-नेपच्यूनका युद्ध है यह भी संसारके लिए अनिष्टप्रद है। ६ मासके अन्दर कोई भयानक दुर्घटना होगी।



❋ खग्रास चन्द्र ग्रहण ❋

ग्रस्तोदय ग्रहणका संसारपर प्रभाव

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य]

आषाढ़ शुक्ला १५ रविवार ता० २६ जुलाई १९५३ ई० को ग्रस्तोदय खग्रास चन्द्रग्रहण होगा, अर्थात् ग्रहण लगा हुआ ही चन्द्रमा उदय होगा। कहीं सायंकाल चन्द्रोदय के समय पूर्णग्रास और कहीं खण्डग्रास न्यूनाधिक रूपमें दिखाई देगा। भारतके मानचित्रमें ८४ रेखांशसे पूर्वकी ओर नेपालके पूर्वी भाग, भूतान, पूर्वी पाकिस्तान, कलकत्ता, गया, पटना जगन्नाथपुरी, त्रिचनापल्ली, आसाम, विजगापट्टम, मद्रास, मदुरा आदि नगरोंमें पूर्ण-ग्रसा हुआ चन्द्रमा उदय होगा। काशीमें उन्मीलन के ३ मिनट बाद चन्द्रोदय होगा, अर्थात् बनारसमें चन्द्रोदयके समय पूर्वकी ओरसे चन्द्रबिम्बका कुछ भाग (श्वेत रेखासी) प्रकाशमान दिखाई देगा। बनारससे ज्यों-ज्यों पश्चिमकी ओर बढ़ते जावेंगे त्यों-त्यों (प्रयाग कानपुर लखनऊ झांसी ग्वालियर आगरा अलीगढ़ हरिद्वार गढ़वाल आदिमें) चन्द्रोदयके समय ग्रहण भी उत्तरोत्तर कम लगा हुआ दिखाई देगा। दिल्ली पंजाब पेप्सू हिमाचलप्रदेश राजस्थान मध्यभारत उत्तरप्रदेश और सौराष्ट्रमें चतुर्थांश ¼ के लगभग ग्रहण लगा हुआ चन्द्रोदय होगा। ७८।७९ रेखांशों (आगरा अलीगढ़ हरिद्वार झांसी भूपाल दक्षिण हैदराबाद और बंगलौर आदि में) आधा ग्रहण लगा हुआ चन्द्रोदय होगा। भावलपुर मुलतान रावलपिंडी पेशावर पश्चिमी सिंध कराची हैदराबाद और कच्छ प्रान्तके पश्चिमी भागमें यह ग्रहण नहीं होगा अर्थात् वहां ग्रहण मोक्ष (समाप्ति) के बाद चन्द्रोदय होगा। पूर्वीकच्छ भुज मांडवी और पूर्वी सिन्धके थरपारकर मंडलमें चन्द्रोदयके समय मोक्ष होता हुआ अंगुलाल्पग्रहण दिखाई देगा। इस ग्रहणका भारतीय स्टेण्डर्ड मानसे स्पर्शादि काल निम्न है—

स्टेण्डर्ड टाईम	घंटा	मि०
स्पर्श (ग्रहणप्रारम्भ)	४ —	२
सम्मीलन	५ —	०
मध्य	५ —	५१
उन्मीलन	६ —	४०
मोक्ष (ग्रहण समाप्ति)	७ —	३८
पर्व (सर्वग्रहण)	३ —	३६

८४ रेखांशसे पूर्वमें कलकत्ता पटना आसाम आदिमे सायंकाल चन्द्रोदयके समय पूर्णग्रस्त (खग्रासग्रहण) दिखाई देगा।

दिल्ली पंजाब हिमाचलप्रदेश राजस्थान मध्यभारत और सौराष्ट्र में ¼ चतुर्थांश ग्रहण लगा हुआ चन्द्रमा उदय होगा अर्थात् ¾ भाग शुद्ध और पूर्वोत्तरमें ¼ भाग कटा हुआ (काला) चन्द्रोदय होगा। दिल्लीमें सूर्यास्तके बाद २५ मिनट तक यह ग्रहण दिखाई देगा।

ग्रहणवेध—इस ग्रहणका वेध (सूतक) प्रातः सूर्योदय से ही प्रारम्भ हो जायेगा। बाल वृद्ध रोगियोंको ग्रहणवेध (सूतक) में भोजनादि करना निषेध नहीं है।

ग्रहणफल—इस ग्रहणका स्पर्श उत्तराषाढ़ा नक्षत्रमें और मोक्ष श्रवणमें होगा अतः इन नक्षत्र और मकरराशि वाले व्यक्तियोंको यह ग्रहण विशेष अरिष्टप्रद है। कुम्भ, मिथुन और तुला राशि वाले व्यक्तियों तथा देशोंको भी भय शोक चिन्तादि अशुभ फलकारक है। वृषभ, कन्या धनुः कर्कराशि वालोंको मध्यम और मेष सिंह वृश्चिक मीन राशियोंको शुभफलकारक है। पंजाब, बंगाल, आसाम, महाराष्ट्र सौराष्ट्र सिन्ध वायव्य सीमाप्रान्त और राजन्यवर्ग एवं सैनिकों पर इस ग्रहणका बुरा प्रभाव पड़ेगा। देशोपद्रव दुर्भिक्ष आतंक अतिवृष्टि अनावृष्टि चौरभय युद्धभय विग्रह और श्रमिकवर्गमें असन्तोष उत्पात कारक है। व्यापार क्षेत्र में बहुत बुरा प्रभाव पड़नेसे भारी घटा बढ़ी होगी। इस ग्रहणका प्रभाव ६ मास तक संसार पर रहेगा।

ग्रहणका विशेष फल

यह ग्रहण आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमाको खग्रास और ग्रस्तोदय हो रहा है अतः सब प्रकारके अन्न गेहूँ चावल और चना मूंग उड़द आदि आगे मँहगे होते हैं। पहले संग्रह करने वालोंको ६ मासमें पर्याप्त लाभ होता है। रविवार होनेके कारण आगे घृत तैल और गुड़ भी मँहगा होता है। कहीं युद्ध वा दुर्भिक्षादि उत्पातसे भी प्रजा पीड़ित होती है। यथा—

आषाढी पूर्णिमायान्तु यदीन्दुग्रहणं भवेत्।
तदा वै सर्वसस्यानां संग्रहं कारयेद् बुधः॥
अब्दार्धे द्विगुणोलाभो जायते च वरानने!
न चात्र संशयः कार्यो मयाख्यातं तव प्रिये!
ग्रस्तोदितौ च ग्रस्तास्तौ धान्यभूपालनाशकौ।
सर्वग्रस्तौ चन्द्रसूर्यौ दुर्भिक्षमरणप्रदौ।
रविवारे ग्रहे वर्षं मध्यमं धान्यसंग्रहः।
राजयुद्धं च दुर्भिक्षं घृतायस्तैलविक्रयाः॥

वायु परीक्षा

इसी आषाढी पूर्णिमाको सायंकाल सूर्यास्त समय वायु परीक्षा भी विधिवत् करनी चाहिए। जिन प्रान्तोंमें दक्षिण दिशा वा नैऋत्य वायव्य और अग्निकोणका वायु चलेगा उन प्रान्तोंमें निश्चित रूपमें दुर्भिक्ष पड़ेगा। और जहां पूर्व पश्चिम उत्तर या ईशान कोणकी वायु सूर्यास्त के समय चलेगी वहां ग्रहणका तथा अन्य सभी दुष्टग्रह-योगोंका अनिष्ट फल न होकर सुभिक्ष होगा।

पाठक अपने अपने स्थान पर ठीक सूर्यास्तके समय वायु परीक्षा करके उसकी सूचना हमें भी दे सकें तो अच्छा है।

यदा श्रेष्ठतमाऽऽषाढी ग्रहयोगाश्च दारुणाः।
तदा नावृष्टिरादेश्या व्याधिश्च विग्रहोऽपि वा॥

इस पूर्णिमाको चन्द्रमा सारी रात बादलोंसे ढका रहे तो आगे सुवृष्टि होकर सुभिक्ष होता है और यदि चन्द्रमा रात्रिमें निर्मल रहे और चन्द्रमाको परिवेष(कुण्डल)हो तो उस प्रान्तमें घोर दुर्भिक्ष पड़ता है। यथा—

आषाढी पूर्णिमा रात्रौ यदि चन्द्रो न दृश्यते।
चतुर्ष्वपि तदा मास्सु जलं मुञ्चति वासवः॥
यदि तत्रामलश्चन्द्रः परिवेष युतोऽपि वा।
तदा जगत्समुद्धर्तुं शक्रेणापि न शक्यते॥

★

तीन मासका साप्ताहिक भविष्य प्रकाश

प्रत्येक वस्तुकी तेजी मंदीका विचार और राशिफल

[ले० श्री पं० गङ्गाप्रसादजी ज्योतिषाचार्य]

ता० २० से ३१ जुलाई तक प्रथम सप्ताह—

ता० २० को स्टे. टा. १॥ बजेसे मंदीके रियक्शनमें चांदी, सोना, रुई खरीदो, ता० २२ को २। बजेसे ३ तक डबल बेचो, ता० २८ तक लाभ हो जाएगा। सावधान ता० २४ की तेजी पर ध्यान रखो, हमारी धारणा ता. २२ से २८ तक इकतरफा मंदीकी है, ग्रहयोग संयोगसे ७) ८) की मंदी चांदीमें, सोनेमें ३) ४) रुईमें २५) ३०) की मंदी आ सकती है, मंदे लाभकी आशा रखने वाले व्यापारियोंको गली लगाकर व्यापार करना ही सुनहरी चांस है। विशेष—राशि वृषभ, मिथुन, कन्या, धनुःको मंडी दिल्ली, कानपुर, बम्बईमें व्यापार करनेसे विशेष लाभ और राशि—कर्क, वृश्चिक, मकर, कुम्भ, मीनको हापुड़, हाथरस, आगरा, अमृतसर, मुजफ्फरनगर, लश्करसे विशेष लाभ होगा। गुड़, अलसी, अरहर, चना, सरसों, शक्कर, ताराभिरा, गुवार, कपड़ेके व्यापारी सावधान हो जावें। अगस्तकी मंदी रुपयेके दस आना बना देगी, अधिक स्टाकको यदि ग्राहक मिले तो बेचकर नफा ले लें। जुलाईमें तेजीका भाव हाजिर मालके निका-

करनेका शुभ अवसर समझें। खोटी दशा वालोंको स्टाक माल कार्तिक बदीमें मुनाफा दे सकता है संवत् २०१० के भड़सारी व्यापारी लाभके लिए श्रीसूक्तके १०८ पाठ करवाके लक्ष्मीदेवीकी आराधना करें। जूट, बारदाना, मटरा, गुवारके व्यापारी ता. २२ को बेचान करें। या मंदी लगावें।

ता० १ से ७ अगस्त तक द्वितीय सप्ताह—

ता. १ को स्टे. टा. २ से ३ बजे तक चांदी, सोना, रुई बेचो, ता. ५ तक चढ़े भावोंमें नफा लो। ता. ६ के तेजीके रिएक्शनमें फिर बेचो, ता. ७ तक दो तरफा लाभ हो जाएगा। अलसी, सरसों, शक्कर गुड़, एक तरफा मंदी की ओर रहेंगे। घृत, तिल, तेल, मंदा, ता. २ को व १ ३ को बेचनेसे ७ तक लाभ हो जाएगा। चांदीमें ता. १ २ ३-७ मन्दीकी बाकी तेजीकी समझें, जितनी घटेगी उतनी बढ़ेगी नीचेमें खरीदो ऊंचेमें बेचो ता. १-२ ३-७ को गली लगाकर व्यापार करना लाभप्रद रहेगा। राशि मेष, कर्क, तुला, मकरको पूर्व-उत्तर दिशासे लाभ रहेगा, लाटरी, क्रासवर्ड, चलने-फिरनेका नया व्यापार करनेसे लाभ रहेगा। राशि वृषभ, सिंह, धनुः, कुम्भको दिल्ली, हापुड़, कानपुर, कलकत्ता, बम्बईसे लाभ रहेगा। राशि मिथुन, वृश्चिक, मीनको साधारण लाभ होगा। घाटेसे बचनेके लिये श्रीचक्र धारण करनेसे खोटी दशाके ग्रहों का अशुभत्व दूर होकर समय बलवान् हो जायेगा या श्रीनवार्णकका पुरश्चरण करनेसे इष्टसिद्धिकी प्राप्ति होगी।

ता० ७ से १४ अगस्त तक तृतीय सप्ताह—

ता. ७ को स्टे. टा. १२ बजेसे इकतरफा तेजीका कारण बनेगा। वृषभ पर शुक्र और रवि-मङ्गलका योग बराबर २) घटाएगा और ४) बढ़ाएगा। ता. ७ को १२ से २ बजे तक चांदी, सोना, रुई खरीदो ४ दिनमें लाभ। सावधान! ता. १० के बाजार पर ध्यान रखो, मिलता हुआ मुनाफा छोड़ो नहीं, ता. ६ से १४ तक अलसी, सरसों, तिल, तेल, लालमिर्च, कालीमिर्च, पर इकतरफा मन्दी, कपड़ा सूती व रेशमीके भावोंमें भी मन्दी आवेगी। स्पेशल-रुख—चांदी, सोना, रुई ता. ७ को खरीद करके ता. १० को डबल बेचो और ११ को या १३ को जरूर बेचो वायदा आषाढ़ सुदी १५ का रङ्ग दिखा देगा। चांदी में १०) सोनेमें ५) रुईमें २५) की मन्दी बराबर आवेगी। राशि मेष, कन्या, तुला, धनु, मीन वाले मनमाना धन कमा लेंगे, बाकी सब देखते रह जायेंगे। राशि मिथुन, कर्क, मकर को विशेष लाभ गुवार, मटर, सरसों, अलसी, तिल, तेल, शक्कर, गुड़के बेचानसे होगा।

ता. १४ से २१ अगस्त तक चतुर्थ सप्ताह—

इस सप्ताहमें चांदी, सोना, रुई खरीदो ३ दिनकी तेजीके रिएक्शनमें लाभ उठाओ। सावधान, खरीद करके चुप न बैठ जाना नफा थोड़ेमें बराबर करनेका ध्यान रखो आगेके सप्ताहमें भयंकर मन्दी आ रही है। गुवार, मटर, तारामीरा, तोरिया, अलसी, सरसों, गुड़, शकर बेचो दोतरफा लाभ हो जाएगा। किराना, सुपारी, नारियल, कालीमिर्च लौंगके दाम गिर जायेंगे। बराबर बेचान करते रहें। राशि वृषभ, सिंह, धनु, मिथुन उत्तम लाभ कारी समझें। राशि मिथुन, कर्क, मीनको शुभ मुहुर्तमें व्यापार करनेसे उत्तम लाभ रहेगा। विशेषः—राशि तुला, धनु, मकरको चांदी काटनके व्यापारसे विशेष लाभका योग है २॥ दिनकी फीचरकी लाइन भाग्योदयकारक होगी। ता० १४-१५-१८-१६ के अङ्क क्लोजिंग-ओपन मालूम करनेके लिए पत्र व्यवहार करें।

ता० २२ से ३१ अगस्त तक पांचवां सप्ताह—

ता० २२ को स्टे० टा० ११ से १ तक चढ़े हुए भावोंमें चांदी, सोना, रुई, मटरा, गुवार बेचो ता० २७ को खरीदो यहां तेजी मंदी सही पड़ेगी। चांदीमें ३) ४) सोनेमें २) २॥) रुईमें १५) २०) की मंदी आकर फिरसे तेजी आ जायगी। अलसी, सरसों, बारदाना शेयर्सके भाव ता० २४ से तेजीकी ओर जाकर ता० २८ से सम हो जायेंगे। गर्म कपड़ेके खरीददार बराबर विदेशोंमें आर्डर भेजकर खरीद करें ४ मासमें उत्तम लाभ हो जायगा। राशि वृष, मिथुन, सिंह, धनुः को चांदी, रुई, फीचरसे विशेष लाभ। राशि कर्क, वृश्चिक, कन्या, कुम्भको

साधारण लाभ, बाकी हानि प्रद। विशेषलाभके लिये सूर्य की आराधना करें। तिल, तैल, गुड़, शक्कर, तारामीराके व्यापारी स्टाक अधिक रखें नहीं।

ता० १ से ७ सितम्बर तक छठा सप्ताह—

ता० १ को स्टे० टा० १२ बजे से १॥ तक, चांदी, सोना, रुई, कपड़ा संग्रह करो २४ घंटेमें ही तेजीका रंग आजायगा। सावधान, नफेको संभालकर लेना ही व्यापारी का सच्चा काम है। इस सप्ताहमें सफेद वस्तु चांदी, रुई, कपड़ा तेजीकी ओर गुड़, शक्कर, लालमिर्च, कालीमिर्च, शेयर मंदीकी ओर चलेंगे। ता० १-२-३-६ तेजी बाकी मंदी समझें। व्यापार का सुधार बराबर ऊंचे भावोंमें बेचनेका है। पकड़ कर बैठना ही घाटेका कारण होगा। प्रायः सब राशि वालों को नफेका संकेत है। चलती तेजी में नफा लेकर डबल बेचाण करते रहो। इस सप्ताहमें ईश्वर चिन्तन व साधारण गली लगाकर व्यापार करने से लाभ होगा। अधिक खर्च और बीमारी सबके पीछे रहेगी।

ता० ७ से १५ सितम्बर तक सातवां सप्ताह—

ता० ७ को स्टे० टा० १२ से २ तक बेस्ट मंदीमें चांदी, सोना, बारदाना खरीदो ७ दिनमें लाभ होजायगा। विशेष—रुई अमरीकन काटन फीगर्स राशि मिथुन, कर्क, मकर, मीन को विशेष लाभकारी होगा। १५ दिनकी अवधिके नजराना लगाकर व्यापार करें, अंक १४-२४-३४ के ऊपर ध्यान रखें। राशि तुला मीन, कर्कको अनायास धन प्राप्ति होने के प्रबल योग है। लाटरी या क्रासवर्ड भरकर लाभकी आशा रखें लाभके अंकों का विवरण व शुभ मुहुर्तमें भरनेके लिये पत्र व्यपहार करें। अरहर, मसूर अलसी, सरसों, तिल, तैल पर्याप्त मंदी की ओर रहेंगे। जौ, चना, खली, मटर, गुवार, जस्ता का भाव तेज रहेगा। भूसा लकड़ी, पत्थरके संग्रह करने वाले लाभ उठायेंगे। विशेष—मटरा, गुवार; तारामीरा, भादों वायदे का बेचना ही लाभ देगा। साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक तेजीमंदी की गली लगाकर व्यापार करें।

ता० २२ से ३० सितम्बर तक आठवां सप्ताह—

ता० २३ को बुध का उदय हो रहा है, होते ही एक बार बाजारको तेजी की ओर ले जाकर मंदी करेगा। हमारे ध्यान से ता० २२ को २ बजे चांदी, सोना, रुई बेचकर ता० २५ को २ बजे तक खरीदमें हो जावें। ता० ३० तक अवश्य ही तेजीके व्यापारसे लाभ हो जायगा। मटर, गुवार, अलसी, सरसों, तिल, तैल, शेयर्सके भाव ता० १६ से २४ तक मन्दी में जाकर तेजी में चलेंगे, हमारी राय ता० २१ को खरीदना बता रही है। आगे तुला राशि पर बुध तेजी को उत्थान देगा किंतु तेजी टिकाऊ मत समझना ३) ४) टके की तेजीमें नफा लेकर पुनः घटे भावोंमें खरीद करना ही श्रेष्ठ व्यापारीका कार्य होगा।

ता० १ से ७ अक्टूबर तक नवम सप्ताह—

ता० १ को १२ से २॥ बजे तक सोना, चान्दी, रुई खरीदो। इस सप्ताहमें प्रायः सर्व वस्तुओं पर तेजीका असर होगा। कन्यागत सूर्य का योग गिरे हुए भावोंको सुधारता है। ता २२, २५, २६, २८, बराबर तेजी की रहेगी। ता० २४।२७।३० मन्दी की होगी। स्पेशल रुख बाजार जहां घटा कि संग्रह करो कार्तिक बदीमें अच्छा चांस तेजीका मिल जायगा। वायदे सौदे मटरा, गुवार अलसी, सरसों, सींगदाना, अरंडाके भावोंमें भी अच्छी तेजी आवेगी, हमारा ध्यान खरीद करके डबल बेचनेका है। ता० ७ को शनिका अस्त १५ दिन पुनः अच्छीखासी मन्दी करने वाला है। इस तेजीके ऊंचे रियेक्शनोंमें आश्विन सुदी १५ की तेजीमन्दी लगा कर व्यापार करो, चांदी, सोना रुई, अरंडा, जूट, मटरा, गुवारमें गली लगाने की खास ता० ६।७ अक्टूबर समझें।

ता० ८ से १७ अक्टूब तक दशवां सप्ताह—

इस सप्ताहमें प्रायः बाजार दोनों तरफ चलेंगे, जितना घटेगा उतना ही बढ़ेगा। पहिले व्यापार तेजी का करके मन्दीकी ओर चल पड़ो। सावधान ! मन्दीका सिर्फ विदेशी खबरों पर ४ दिनका रियक्शन आवेगा, किन्तु पीछे बाजारोंका पुनः एक साथ सुधार हो जायगा। हमारी धारणामें ता०८ को स्टै०टा०१से २बजे तक मुनाफा

[शेष पृष्ट ५७ पर]

त्रैमासिक भाग्याङ्क

[ले०—श्री गणेश, विद्यासागर दैवज्ञ रमलाचार्य]

जुलाई	ता०	वार	अंक	बलांक
	२१	मं०	५, ७	७
	२२	बु०	२, ५, ०	५
	२३	गु०	३, ५, ७, ६	×
	२४	शु०	२, ५	५

इस हफ्ते में यह अंक आने चाहिए २, ५, ७, ० दैवी अंक ५, ७, हैं ।

	ता०	वार	अंक	प्रबलांक
जुलाई	२७	चं०	२, ५, ०	२, ०
	२८	मं०	२, ८	२
	२९	बु०	२, ६, ८	८
	३०	गु०	४, ५; ८	×
	३१	शु०	५, ८	×

इस हफ्ते में यह अंक आने चाहिए २, ५, ८ दैवी अंक २, ८, हैं।

	ता०	वार	अंक	प्रबलांक
अगस्त	३	चं०	३, ५, ०	०
	४	मं०	२, ५, ७	७
	५	बु०	२, ३, ०	×
	६	गु०	२, ०	२
	१७	शु०	२, ३, ५ ९	×

इस हफ्ते में यह अंक आने चाहिए २, ३, ५, ० दैवी अंक २ हैं।

अगस्त	ता०	वार	अंक	प्रबलांक
	१०	चं०	७, ०	७
	११	मं०	५, ७	×
	१२	बु०	२, ५	×
	१३	गु०	५, ९	×
	१४	शु०	२, ७	७

इस हफ्ते में २, ५, ७ अंक आना चाहिये दैवी अंक ५, ७ हैं।

	ता०	वार	अंक	प्रबलांक
अगस्त	१७	चं०	३, ५,	५
	१८	मं०	१, ३, ७, ९	×
	१९	बु०	५, ८, ०	५
	२०	गु०	५, ७	×
	२१	शु०	५, ७, ०	५, ७

इस हफ्ते में यह अंक ३, ५, ७, ० आने चाहिये दैवी अंक ५, ७, हैं।

	ता०	वार	अंक	प्रबलांक
अगस्त	२४	चं०	२, ५, ७	५
	२५	मं०	३, ७, ०	×
	२६	बु०	२. ५. ८, ०	२
	२७	गु०	२. ३, ०	२
	२८	शु०	२, ६, ९	×

इस हफ्ते में २, ३, ५, ७, ० आना चाहिये दैवी अंक २, ० है।

	ता०	वार	अंक	प्रबलांक
अगस्त	३१	चं०	२, ५, ६	२, ५
सितम्बर	१	मं०	३, ७, ९	७
	२	बु०	४, ५, ६, ०	०
	३	गु०	५, ०	×
	४	शु०	२, ५, ७, ०	२

इस सप्ताह में २, ५. ६. ७, ० आना चाहिए दैवी अंक ५, २ हैं।

	ता०	वार	अंक	प्रबलांक
सित०	७	चं०	१, ५, ७, ०	×
	८	मं०	५, ७, ०	×
	९	बु०	६, ७, ८, ०	×
	१०	गु०	५, ८, ९	×
	११	शु०	४, ५, ७	७

इस हफ्ते में ५, ७, ८, ० आना चाहिए दैवी अंक ५, ७ हैं।

	ता०	वार	अंक	प्रबलांक
सित०	१४	चं०	२, ५, ७, ०	२, ५
	१५	मं०	३, ४, ०	३
	१६	बु०	३, ९	×
	१७	गु०	३, ४, ५, ०	५
	१८	शु०	५, ७	७

इस हफ्ते में ३. ४, ५, ७, ० आना चाहिये दैवी अंक ३, ५, ० हैं।

	ता०	वार	अंक	प्रबलांक
सित०	२१	चं०	५, ७	×
	२२	मं०	२, ५, ६	×
	२३	बु०	५, ०	५
	२४	गु०	२, ७	×
	२५	शु०	२, ५, ७, ०	३

इस हफ्ते में २, ५, ७, ० आना चाहिए दैंवी अंक ५, ७, २ हैं।

	ता०	वार	अंक	प्रबलांक
सित०	२८	चं०	२, ०	२
	२९	मं०	५, ६, ८	×
	३०	बु०	५, ७, ९	×
अक्टूबर	१	गु०	४, ५, ७, ०	×
	२	शु०	५, ६. ०	×

इस हफ्ते में ५, ६, ७, ० आना चाहिए दैवी अंक ५, ० हैं।

	ता०	वार	अंक	प्रबलांक
अक्टू०	५	चं०	३, ०	३
	६	मं०	१, २. ७	×
	७	बु०	५, ९, ०	०
	८	गु०	२, ७, ०	×
	९	शु०	६, ७, ८, ०	×

श्रीपञ्चस्तवी

द्वितीय संस्करण प्रस्तुत है। इसमें प्रथम लघुस्तवकी ७०० वर्ष प्राचीन संस्कृत टीका तथा भारतकी वर्तमान राष्ट्रभाषानुवादके साथ मुद्रित है। शेष चार स्तोत्र मूल मात्र है। साथ ही इस संस्करणमें 'श्रीमहानुभवशक्तिस्तव' भी दिया गया है। कागज और छपाई बहुत उत्तम है। मूल्य ॥) डाक व्यय अलग।

महामहिम आचार्य श्री १०८ अमृतवाग्भव विरचित—

प्रकाशित होने वाले ग्रन्थ

१. श्रीपरशुरामस्तोत्र, सचित्र राष्ट्रभाषानुवाद सहित तृतीय संस्करण।

२. श्रीसप्तपदी हृदय, द्वितीय-संस्करण संस्कृ। टीका तथा राष्ट्रभाषानुवाद सहित।

३. श्रीसंक्रान्ति-पंचदशी, द्वितीय-संस्करण संस्कृत टीका तथा राष्ट्रभाषानुवाद सहित।

४. श्रीमहानुभवशक्तिस्तव संस्कृत तथा राष्ट्रभाषा व्याख्या सहित शीघ्र प्रकाशित होने वाला है।

सूचना— आगामी 'नववर्षाङ्क'के लिए सब लेख ता० २५ अगस्त तक कार्यालयमें पहुंचना आवश्यक है। इसके बाद आने वाले लेखोंको नववर्षाङ्कमें स्थान नहीं मिलेगा।

प्राप्त पुस्तकें

श्रीसनातनधर्मालोक, ज्योतिषपरिचय, ग्रहविज्ञान, लग्नमन्दाकिनी, लग्नसारिणीसमुच्चय, रू बाजारनी पाराशरी, शेअरचिंतामणि, ये सात पुस्तकें और कुछ पंचाग तथा त्रैमासिक मासिकपत्र पत्रिकाएं समालोचनार्थ प्राप्त हुई हैं, इन सबका पूर्ण परिचय आगामी 'नववर्षाङ्क'में प्रकाशित किया जावेगा। स्थान एवं समयाभावके कारण इस अङ्कमें समालोचना नहीं दी जा सकी। —सम्पादक

चौषठ वर्षीय पञ्चाङ्ग

सं० १९४७ से २०१० वि० तक ६४ वर्षके साप्ताहिक स्पष्टग्रह सूक्ष्म दृग्गणितके आधार पर दिये गये हैं और चन्द्रमा दैनिक दिया गया है। हर्शल नेपच्यून प्लुटो भी मासिक दे दिये गये हैं। शुद्ध जन्मपत्र बनानेके लिए यह पञ्चाङ्ग अत्युपयोगी है। जन्मेष्ट कालसे शुद्ध सूक्ष्म ग्रह तथा जन्मपत्र बनानेका प्रकार उदाहरण सहित दिया गया है। मूल्य ७) पोस्टेज ॥)।

पता—श्रीमहालक्ष्मी पब्लिकेशंस, पो० मुरार (म० भा०)

भारतीय संस्कृतिके अग्रदूत राष्ट्रधर्मके प्रमुख प्रचारक—

'श्रीस्वाध्याय' के लिए—

राष्ट्रके उद्गार

श्रीयुत बा० पुरुषोत्तमदासजी टण्डन—'श्रीस्वाध्याय' को देख मुझे बहुत सुख मिला। ······इस पत्र और इसके सञ्चालकमण्डलसे राष्ट्रीय कार्यमें पूर्ण सहायता मिलेगी ·········।

त्यागमूर्ति श्री १०८ गो० गणेशदत्तजी महाराज—'श्रीस्वाध्याय' अपने विषयका अनुपम पत्र है ······ यह प्रत्येक सार्वजनिक संस्थाओं, पुस्तकालयों और वाचनालयोंमें स्थान पाने योग्य है ·····।

श्रीयुत कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी राज्यपाल उत्तरप्रदेश—'श्रीस्वाध्याय' बहुत अच्छा निकल रहा है। लेख विचार प्रवर्तक हैं। ······मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूँ ······।

पंजाबविश्वविद्यालयके उपकुलपति दीवान श्री आनन्दकुमारजी—'श्रीस्वाध्याय' साहित्यिक अभिरुचिका पत्र है और अपने पाण्डित्यपूर्ण स्तरको अक्षुण्ण व स्थिर रक्खे हुए है। ········ पत्र द्वारा हमारी प्राचीन संस्कृतिके उद्धार व संवर्द्धनका प्रशंसनीय प्रयत्न किया जा रहा है।·········"

श्रीयुत बा० सम्पूर्णानन्दजी भू० पू० शिक्षामन्त्री उत्तरप्रदेश—'श्रीस्वाध्याय' बहुत सुन्दर निकल रहा है। भारतीय प्राचीन विद्याओं पर प्रकाश डालने वाले ऐसे प्रगतिशील सांस्कृतिक पत्र-पत्रिकाओंकी इस समय आवश्यकता है।

कविसम्राट् स्व० श्री पं० अयोध्यासिंहजी उपाध्याय 'हरिऔध'—'श्रीस्वाध्याय' बड़ा सुन्दर निकला रह है। इसे जिस दृष्टिसे देखें वह मुग्धकर है। आकार, प्रकार, लेख किम्वा कविता आदि सभी प्रशंसनीय है।

श्रीयुत बा० मैथिलीशरण गुप्त—"······'श्रीस्वाध्याय' बहुत सुन्दर निकल रहा है। मैं आपके परिश्रमकी प्रशंसा और पत्रको उन्नतिकी कामना करता हूँ।····"

श्रीयुत प्रो० इन्द्र विद्यावाचस्पति—'श्रीस्वाध्याय' अपने ढङ्गका अनूठा पत्र है। ······यह एक उच्चकोटिका सांस्कृतिक पत्र है। मैं इसकी पूर्ण सफलता चाहता हूँ।

श्रीयुत बाबूराव विष्णु पराड़करजी—"······ वस्तुतः यह त्रैमासिक अपने ढङ्गका निराला है। आर्य संस्कृतिके प्रायः प्रत्येक अङ्ग पर इसमें प्रकाश डाला जाता है। ·····"

श्री डा० रामकुमारजी वर्मा—"······ 'श्रीस्वाध्याय' हमारे साहित्यका ऐसा पत्र है जिस पर हमें अभिमान है। इसमें जो सांस्कृतिक दृष्टिकोण रहता है वह हमें अन्य भारतीय पत्रोंमें नहीं मिलता। 'श्रीस्वाध्याय' के प्रत्येक पृष्ठमें मुझे अध्ययन और अनुशीलनसे परिपूर्ण साहित्यिक सामग्री मिली।····"

श्रीयुत पं० रूपनारायणजी पाण्डेय (सम्पादक 'माधुरी')—"··· 'श्रीस्वाध्याय' की सभी सामग्री ज्ञानवर्धक और उपादेय है।····· प्रत्येक देशभक्त, राष्ट्रभाषा प्रेमी, जिज्ञासु, धर्मप्रेमीको अवश्य इसे अपनाना चाहिए। हर एक पुस्तकालयमें यह पत्र स्थान पाने योग्य है।·····"

श्रीयुत पं० देवीदत्तजी शुक्ल (भू० पू० सम्पादक 'सरस्वती')—'श्रीस्वाध्याय' बहुत ही सुन्दर निकल रहा है।······आपने 'स्वाध्याय' निकाल कर हिन्दीके एक विशेष अभावकी पूर्ति की है, इसमें सन्देह नहीं। इस महत्वपूर्ण कार्यके लिए हिन्दी वाले आपके अवश्य कृतज्ञ होंगे।

श्रीयुत पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकरजी—"······ 'श्रीस्वाध्याय' के विषयमें विशेष क्या कहा जाय, यह एक अत्युत्तम पत्र है। मैं हृदयसे इसकी सफलता चाहता हूँ। इसकी अन्यान्य महत्ताओं पर 'वैदिकधर्म' में प्रकाश डालूंगा।

इनके अतिरिक्त भारतके अनेकों महामान्य विद्वानों और प्रमुख पत्र-पत्रिकाओंने 'श्रीस्वाध्याय' की मुक्त-कण्ठसे प्रशंसा की है। स्थानाभावके कारण वे सब यहां उद्धृत नहीं हो सकीं।

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा अर्जुन प्रेस दिल्लीमें छपकर 'श्रीस्वाध्यायसदन' सोलन (शिमला) से प्रकाशित।

